UGC NET/SET/JRF

शिक्षाशास्त्र

Paper-II & III

Sunil arya

शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार (Philosophical & sociological foundation of education)

दर्शन मनुष्य के चिन्तन की उच्चतम सीमा है। इसमे सम्पूर्ण ब्रहमांड श्रृष्टि श्रृष्टा आत्मा परमात्मा जीव जगत, ज्ञान, अज्ञान आदि का तार्किक विवेचन किया जाता है।

उपनिषद के अनुसार- दृश्यते अनेन इति दर्शनम्

प्लेटो के अनुसार - पदार्थों के सनातन स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करना ही दर्शन है।

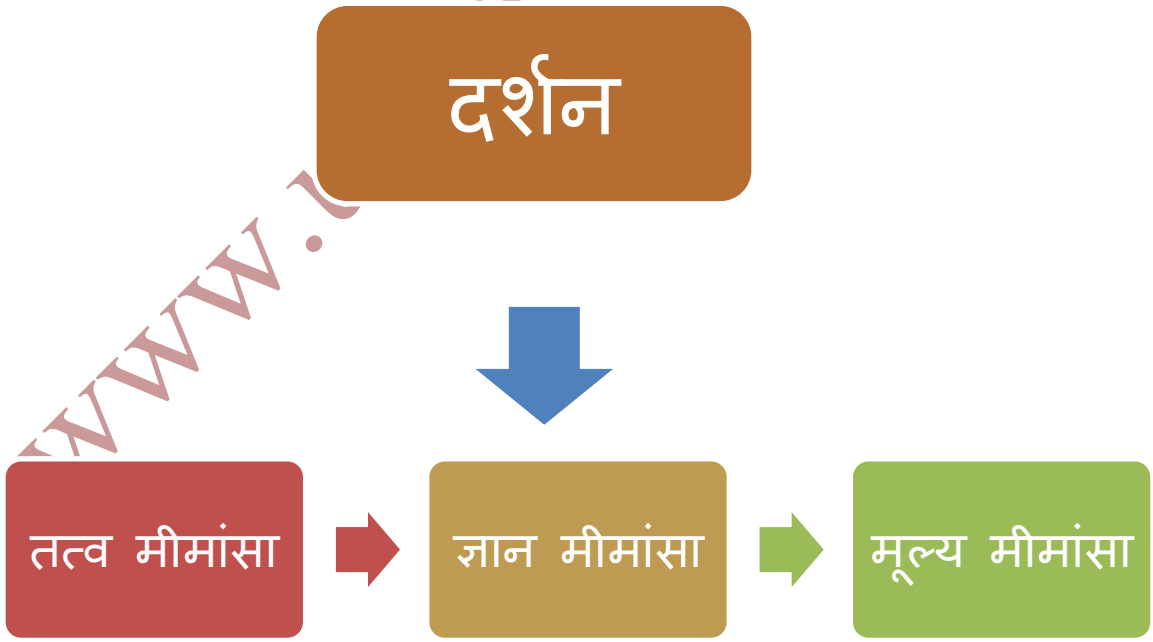

तत्व मीमांसा (Metaphysics)

*ग्रीक भाषा के **Meta +physics** से बना है*

मेटा =के परे

फिजिक्स = भौतिक

अर्थात भौतिक से परे

सामग्री

- *आत्मा क्या है?*
- *जीव क्या है ?*
- *ईश्वर का अस्तित्व है या नही ?*
- *ईश्वर एक है या अनेक ?*
- *ईश्वर का स्वरूप कैसा ह ?*

www.ugcnet.wapka.mobi

सत्ता मीमांसा (Ontology) -अस्तितव का विज्ञान

ब्रहमांड विज्ञान (cosmology) Metaphysics की उप शाखा

तत्व मीमांसा दर्शन को दिशा प्रदान करती है।

- *यथार्थ ज्ञान क्या है और कैसे प्राप्त किया जाये - तत्व मीमांसा*
- *यथार्थ ज्ञान किस प्रकार से प्रदान किया जाये - ज्ञान मीमांसा*

ज्ञान मीमांसा (Epistemology)

Epistemology = Episteme + logy

ज्ञान

विज्ञान

प्रश्न

- ज्ञान का स्वरूप क्या है?
- ज्ञान के साधन कौन कौन से हैं?
- ज्ञान के स्त्रोत क्या हैं?
- क्या यथार्थ का ज्ञान सम्भव है?

www.ugcnet.a.mobi

ज्ञान के स्त्रोत

1- इन्द्रिय अनुभव (Sensory experience)	ज्ञानेन्द्रियां संवेदना प्रत्यक्षण अवधारणाएं

2 -- साक्ष्य (testimony) जब दूसरों के ज्ञान के आधार पर हम किसी बात को मानते हैं। जैसे हमने अमेरिका नही देखा परन्तू दूसरों के कहने पर विश्वास कर लेते हैं।

3 -तर्क बुद्धि अनुभवों को तर्क दावारा ज्ञान निर्माण

4 -अन्त प्रज्ञा (Intution) तथ्य का अपने मन में पाया जाना

ज्ञान के उपकरण

- *अनुभववाद*
- *अन्त प्रज्ञावाद*
- *दैवी ज्ञान ज्ञान सत्य है। क्योंकि ईश्वर दवारा मानव में प्रसारित*
- *सत्तावादिता सत्ता प्रमाणित जैसे वेद बाइवल*

www.ug

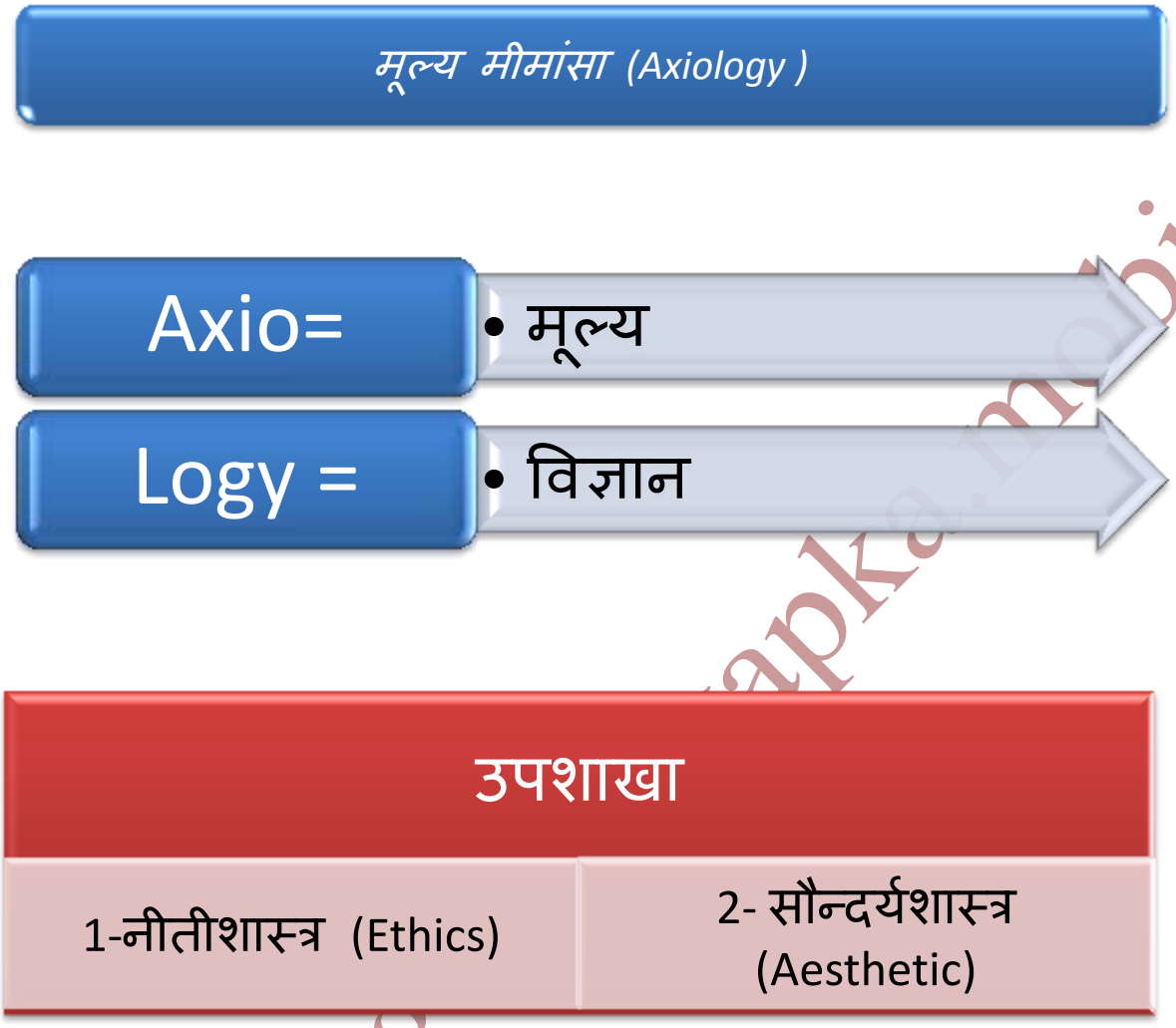

मूल्य मीमांसा (Axiology)

Axio= • मूल्य

Logy = • विज्ञान

उपशाखा	
1-नीतीशास्त्र (Ethics)	2- सौन्दर्यशास्त्र (Aesthetic)

- *नीतिशास्त्र -उन मूल्य संबंधी समस्याओं का अध्ययन जो आचरण में मूल्यों के प्रयोग से सरोकार रखती हैं।*
- *सौन्दर्यशास्त्र -उन समस्याओं का अध्ययन जो कलाकृतियों से सम्बिन्धत है सुन्दरता असुन्दरता का मानदंड सौन्दर्य अनुभूति की प्रकृति ।*

www.ug apka.mobi

शिक्षा के उद्देश्य =	
अनुशासन=	• मूल्य मीमांसा
पाठ्यक्रम निर्माण=	• तत्व मीमांसा
शिक्षण विधियां	• ज्ञान मीमांसा

- *शिक्षा का अभिप्राय बालक और मनुष्य के शरीर मन, तथा आत्मा के बहुमुखी तथा सर्वोत्तम विकास से है। -महात्मा गांधी*
- *मनुष्य की अन्तर्निहित पूणता की अभिव्यक्ति ही शिक्षा है।- विवेकानन्द*
- *सर्वोत्तम शिक्षा वह है जो हमे सूचना ही नही देती अपितु हमारे जीवन और सृष्टि में समरसता पैदा करती है ।- टैगोर*
- *शिक्षा कार्य मनुष्य के शरीर और आत्मा को वह पूर्णता प्रदान करना है जिसके कि वह याग्य है - प्लेटो*

www.ugcnet.apka.mobi

- *रविन्द्रनाथ टैगोर -(विश्वबोध दर्शन) शिक्षा वातावरण के निकट सम्पर्क में दी जाये।*
- *अरविन्द (सर्वांग योग दर्शन) व्यक्तित्व के चारों ओर के विकास को शिक्षा कहा है। (उदात्तीकरण)*
- *स्वामी विवेकानन्द (नव वेदान्त दर्शन) -शिक्षा अन्तर्निहित गुणों का विकास है। (Man making education)*
- *शिक्षा व्यक्ति की उस पूर्णता का विकास है जिसकी उसमे क्षमता है- काट*
- *व्यक्ति की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक समरस तथा प्रगतिशील विकास ही शिक्षा है - पेस्टालोजी*
- *दर्शन ज्ञान का विज्ञान है- फिक्टे*
- *दर्शन विज्ञानों का विज्ञान है -काम्टे*
- *दर्शन विज्ञानों का समन्वय है । -स्पेन्सर*
- *दर्शन विज्ञान तथा ज्ञान की समीक्षा है। कांट*
- *संसार का प्रत्येक व्यक्ति जन्मजात दार्शनिक है – शॉपेन हॉवर*
- *Father of modern education कमेनियस को कहा जाता है।*

www.ugcnet.wapka.mobi

शिक्षा तथा दर्शन का सम्बन्ध

- *शिक्षा तथा दर्शन एक ही सिक्के के दो पहलू हैं - रास*
- *सामान्य अवस्था मे दर्शन शिक्षा का ही सिदान्त है- जान ड्यूवी*

भारतीय दर्शन की बिशेषताएं

- आत्मा का अस्तित्व
- जगत का अस्तित्व
- संसार की दुखमयता
- दुख का निवारण
- मोक्ष चार्वाक को छोडकर
- कर्म का सिद्धान्त चार्वाक को छोडकर
- पुनर्जन्म चार्वाक को छोडकर

ka.mobi

दर्शन का शिक्षा पर प्रभाव

- दर्शन सिदान्तवादी और चिन्तनशील है तथा शिक्षा व्यवहारिक है बटलर
- दर्शन शिक्षा के उददेश्यों का निर्धारण करता है
- दर्शन पाठयक्रम का निर्धारण करता है
- दर्शन शिक्षा विधी का निर्धारण करता है
- दर्शन अनुशासन के स्वरूप का निर्धारण् करता है
- दर्शन विधालय व्यवस्था के स्वरूप का निर्धारण करता है

शिक्षा का दर्शन पर प्रभाव

- शिक्षा दर्शन को जीवित रखती है
- शिक्षा दर्शन को गतिशील रखती है

आदर्शवाद

प्रवर्तक -- प्लेटो

समर्थक- हीगल, बर्कले ,कांट, डेकार्ट स्पिनोजा ,शोपेनहोवर ,फ्रोबेल

आदर्शवाद अंग्रेजी के Idealism का भाब्दिक अर्थ है। Idealism, idea से बना है परन्तु उच्चारण की सुबिधा के लिए इसमें L जोड़ दिया गया है।

Idea= बिचार

बच्चा परम ब्रहम का अभिन्न अंग है- आदर्शवाद

आदर्शवाद ने उददेश्यों के निर्धारण में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

आदर्शवाद- निगमनात्मक विधि

यथार्थवाद- आगमनात्मक विधि

प्रयोजनवाद – प्रयोगात्मक अधिगम

प्रकृतिवाद- स्वत: शोधात्मक उपागम

www.ugcnet.wapka

- यह सबसे प्राचीन विचारधारा है यह विचारो को प्रधान मानती है
- आदर्शवाद मन पर सर्बाधिक बल देता है
- विचारों का ज्ञान ही सच्चा ज्ञान है
- वही विचार सत्य है जो स्थापित तथा मान्य सत्ता के साथ संगति रखता है
- यह व्यक्ति के विकास पर वल देता है
- व्यक्ति तथा संसार दोनो बुद्धि की अभिव्यक्तियां है।
- विभिन्नता में एकता
- आत्मानुभूती या व्यक्तित्व का उत्कर्ष
- शाश्वत मूल्यों तथा आदर्शों की प्राप्ति
- सांसकृतिक विरासत की संवृद्धि
- पवित्र जीवन की प्राप्ति
- पूर्ण चेतना की प्राप्ति

तत्व मीमांसा (Metaphysics)

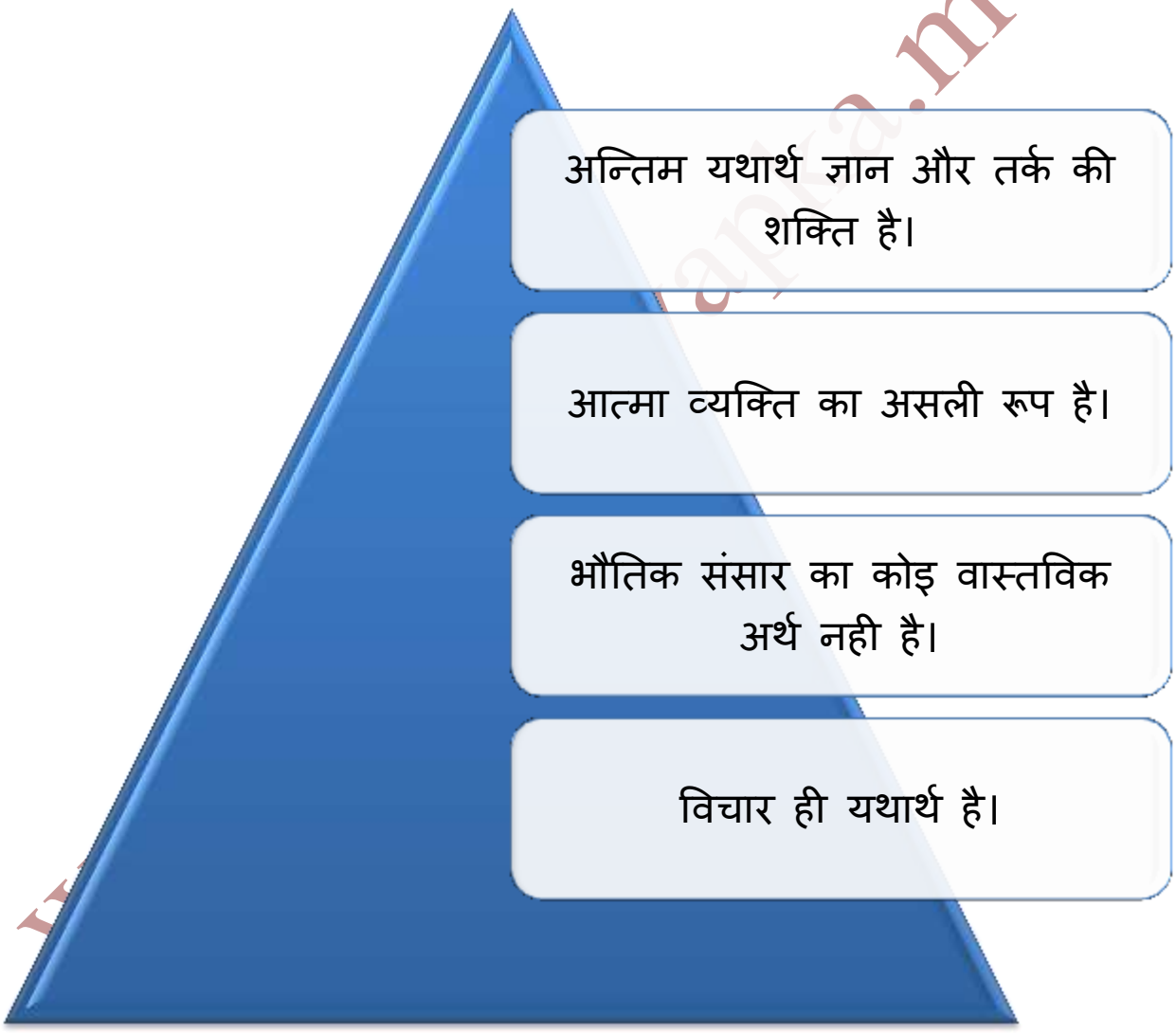

आदर्शवाद का कमजोर विन्दु – शिक्षण विधियां

मूल्य मीमांसा

स्वतन्त्र मूल्य पूर्व ज्ञान के आधार पर बदला नही जा सकता ।

मूल्य शाश्वत मानते हैं।

मानव दावारा कोइ परिवर्तन सम्भ्व नही।

मनुष्य मूल्य बनाता नही खोज करता है।

आदर्शवाद के रूप

व्यक्तिवादी आदर्शवाद = बर्कले

प्रपंचवादी आदर्शवाद = कान्ट

ऐतिहासिक आदर्शवाद = क्रोचे

निर्पेक्षवाद = हीगल

शिक्षण विधियां

रायबर्न आर्दशवाद शिक्षण विधियों में गरीब है

सुकरात = प्रश्नोत्तर विधी

प्लेटो = संवाद विधि

अरस्तू = आगमन और निगमन विधि

डेकार्ट = सरल से जटिल विधि

पेस्टालाजी == अभ्यास प्रशिक्षण् एवं क्रिया विधी

हरबर्ट == निर्देशन विधि

फ्रोबेल = खेल विधि

हीगल = तर्क विधि

अनुशासन

प्रभावात्मक अनुशासन

फ्रोबेल बच्चे बगीचे के पौधे और शिक्षक माली है,

अध्यापक प्राथमिक आौर बच्चा गौढ

सत्यम शिवम सुन्दरम मुख्य मूल्य प्लेटो के अनुसार

पाठयक्रम

सत्यम = भाषा साहित्य भूगोल गणित दर्शन ज्योतिष

शिवम = धर्म राजनीति अर्थशास्त्र नीतिशास्त्र समाजशास्त्र

सुन्दरम = कविता संगीत कला

प्रकृतिवाद(Naturalism)

प्रवर्तक -डेमोक्रिटस

प्रमुख- विचारक, अरस्तु, काम्टे, हाब्स ,बेकन ,डार्बिन, लेमार्क, रूसो स्पेन्सर, हक्सले,रविन्द्रनाथ टैगौर

प्रकृति पर सबसे अधिक बल

ईश्वर में विश्वास नही ।

आत्मा को पदार्थ के अधीन मानते हैं।

भौतिक संसार के अलावा कोइ संसार नही।.

प्रथम बार यौन शिक्षा स्त्री शिक्षा जन शिक्षा

रूप

परमाणुवादी = संसार का निर्माण छोटे छाटे परमाणु से हुआ

यान्त्रिक = मानव को यन्त्र माना है

वैज्ञानिक= विश्व का निमार्ण शक्ति कणों के मिलने से

जैविक= मनुष्य का विकास कृमिक जैविक विकास के कारण हुआ है

तत्व मीमांसा

प्रकृति सर्वोपरि है

सभी का उदगम और अन्त इसी में होता है ।

परमात्मा का अस्तित्व नही।

ब्रहमांड एक प्राकृतिक रचना है।

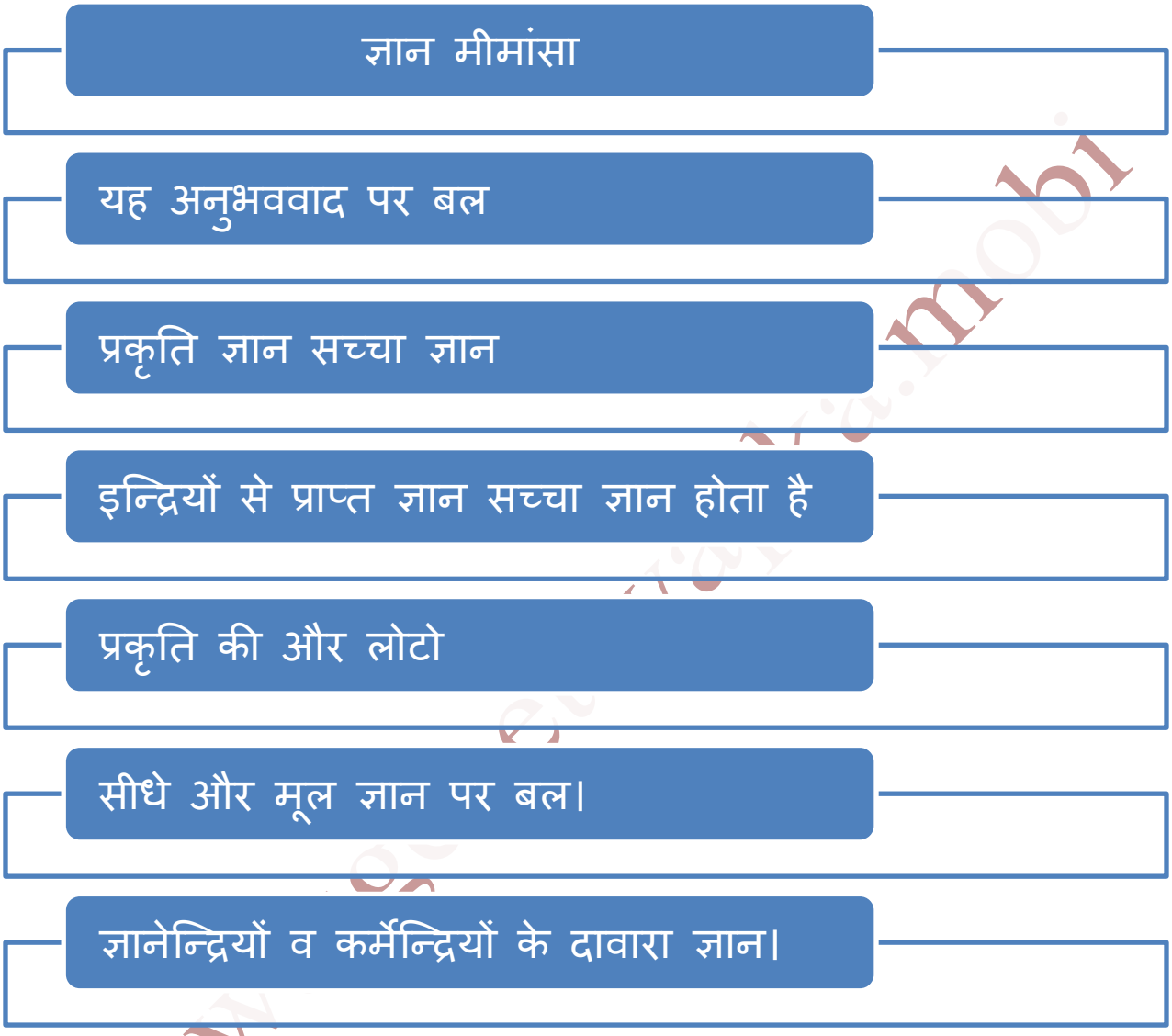

ज्ञान मीमांसा

- यह अनुभववाद पर बल
- प्रकृति ज्ञान सच्चा ज्ञान
- इन्द्रियों से प्राप्त ज्ञान सच्चा ज्ञान होता है
- प्रकृति की और लोटो
- सीधे और मूल ज्ञान पर बल।
- ज्ञानेन्द्रियों व कर्मेन्द्रियों के दावारा ज्ञान।

मूल्य मीमांसा

- मूल्य के शाश्वत होने में विश्वास नही।
- सभी मूल्यों का अस्तित्व प्रकृति में है।

प्रकृतिवाद तथा शिक्षा

पुस्तकीय ज्ञान का विरोध

निषेधात्मक शिक्षा बच्चों को गलतियों से बचाना

बालकेन्द्रित शिक्षा

स्वतन्त्रता

शिक्षा के उददेश्य

शिक्षा आनंदमयी हो।

शिक्षा के उददेश्य परिवर्तनशील।

प्रकृति से अनुकूलन

अवकाश काल का सदउपयोग

मूल प्रवृत्तियों का शोधन

बाल केन्द्रित शिक्षा

आत्मरक्षा सम्बन्धी गुणों का विकास जीवीकोपार्जन

सन्तति पालन

जीवन संधर्ष की तैयारी

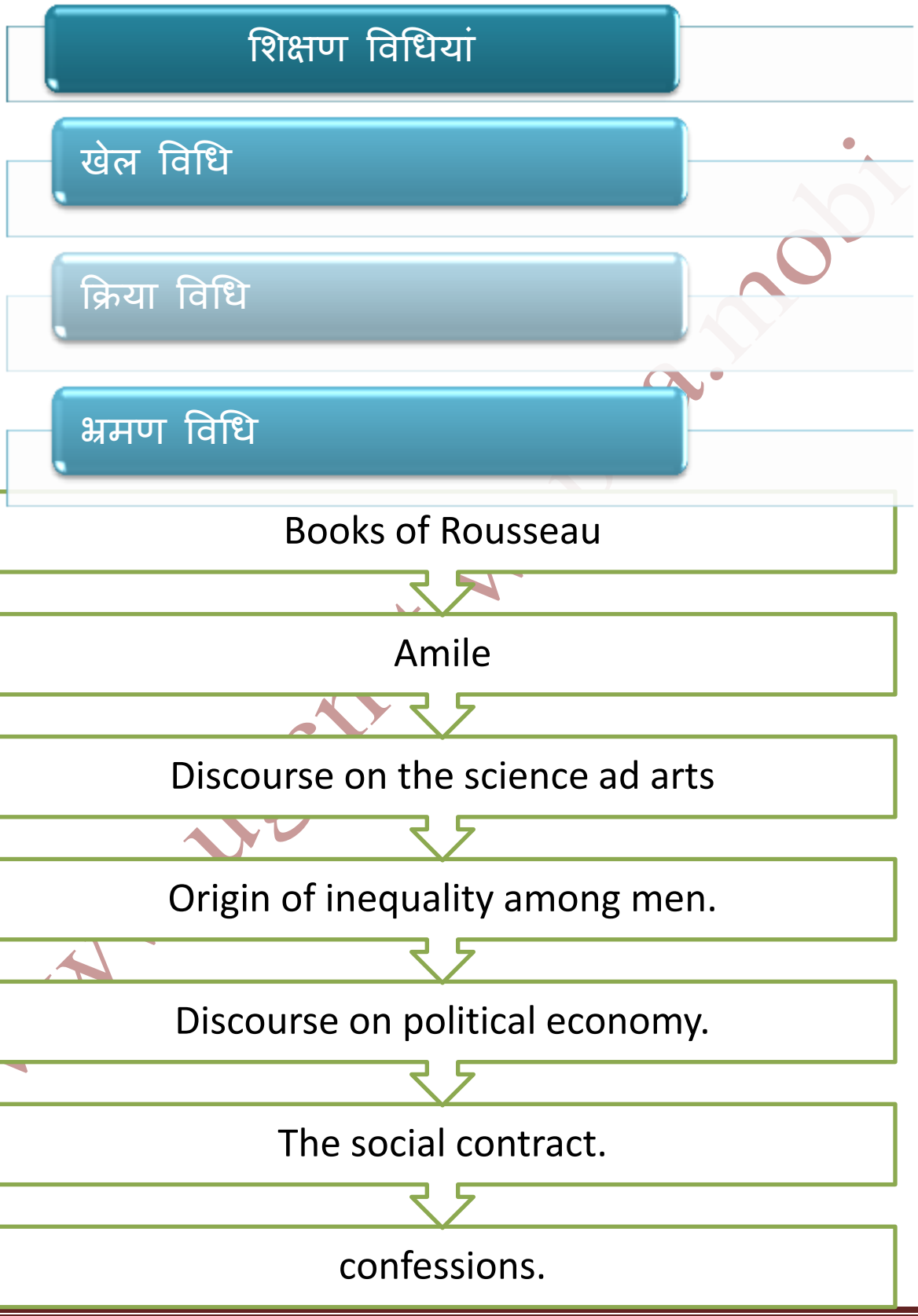
शिक्षण विधियां
खेल विधि
क्रिया विधि
भ्रमण विधि
Books of Rousseau
Amile
Discourse on the science ad arts
Origin of inequality among men.
Discourse on political economy.
The social contract.
confessions.

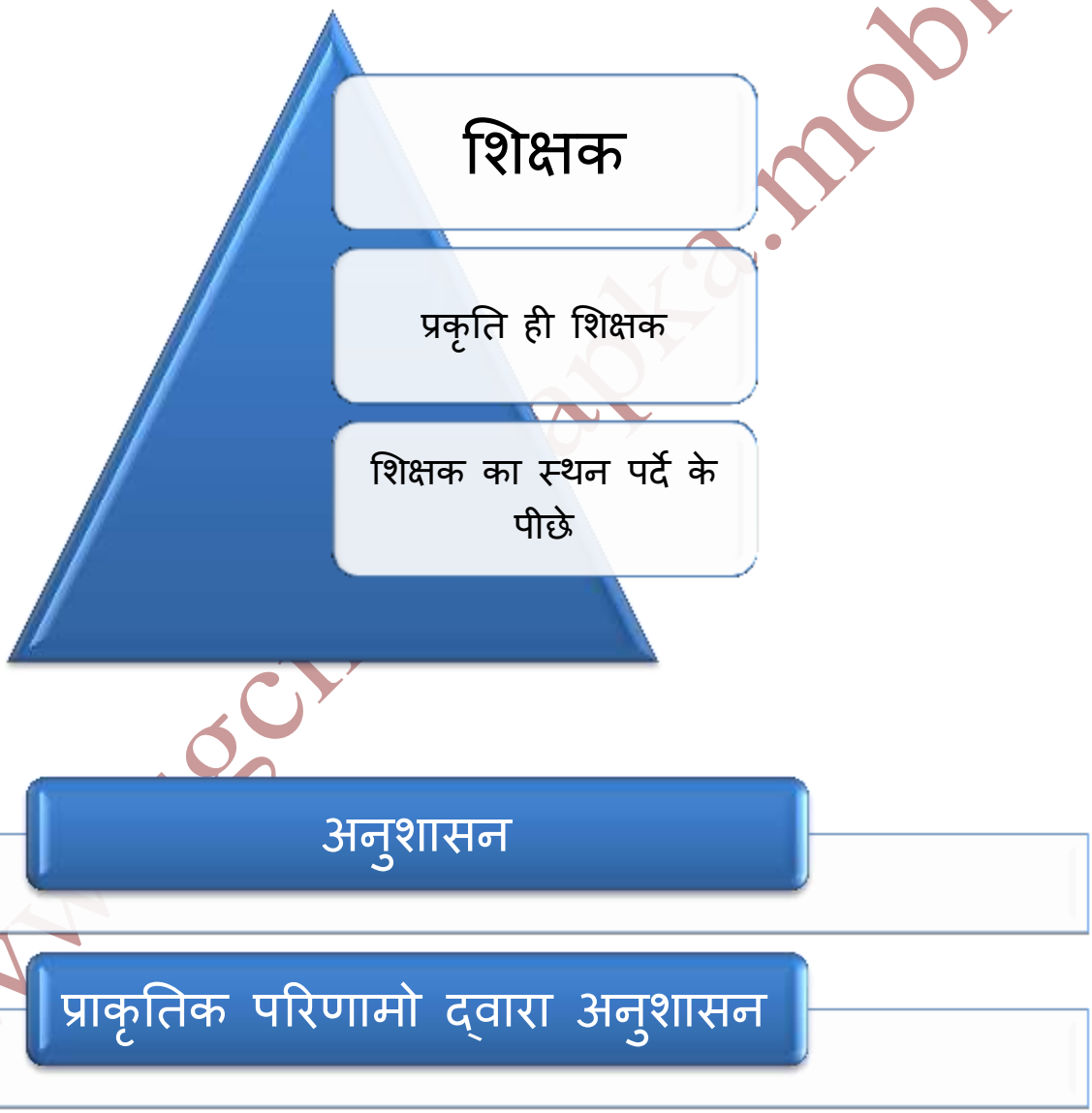

शिक्षक
प्रकृति ही शिक्षक
शिक्षक का स्थन पर्दे के पीछे

अनुशासन
प्राकृतिक परिणामो द्वारा अनुशासन

प्रयोजनवाद(Pragmatism)

शाब्दिक उत्पत्ति

Pragmatism = Pragmatikas

Pragma = किया हुआ कार्य

Pramatkos = व्यावहारिक

- प्रवर्तक -चार्ल्स सेन्डर्स पिपर्स
- विलियम जेम्स
- जान डीवी
- किलपैट्रिक
- मोरिस

शिक्षा शिक्षार्थी पाठयक्रम

यह अमेरिकन दर्शन है

सबसे अधिक योगदान जान डीवी ने दिया ।

यह तत्व मीमांसा के बारे मे विचार नही करता।

परिवर्तन को शाश्वत सत्य मानता है।

शिक्षण विधियों में अनुभव तथा क्रिया विधि पर बल

सभी वस्तुएं परिवर्तनशील हैं।

किसी सत्य को उस समय तक सत्य नही माना जा सकता जब तक उसकी परीक्षा न हो जाये।

सामाजिक अनुशासन तथा सामाजिक विषयों पर बल

मूल्यों के रूप में सामाजिक कुशलता

तत्व मीमांसा

- सत्य अस्थायी एवं परिवर्तनशील
- सत्य पूर्व सिद्धान्तों के आधार पर स्वीकार नही।
- वास्तविकता पूर्ण और पूर्व निर्मित नही है।
- वास्तविकता का निर्माण हो रहा है।
- अनुभव का संसार ही सत्य है।
- मानव क्रियाओं पर बल।
- परमात्मा पर विश्वास नही।
- संसार अपूर्ण और अनियन्त्रित है।

ज्ञान मीमांसा

कर्मेन्द्रियां ज्ञान के आधार हैं।

मस्तिष्क और बुद्धि ज्ञान के नियन्त्रक हैं।

ज्ञान ही अनुभव और अनुभव ही ज्ञान है।

ज्ञान मानव के सुख का साधन है।

सत्य परिवर्तनशील है।

ज्ञान का उददेश्य सूचनाओं का संकलन न होकर उसका सतत अभ्यास करना है।

अनुभव की पुनर्रचना।

www.ugcnet.wapka.mobi

मूल्य मीमांसा

- जो मूल्य मनुष्य के लिये उपयोगी हैं वही सत्य हैं।
- आंखे मूदकर अनुसरण नही ।
- मूल्य समय स्थन आदर्श के अनुसार परिवर्ति ।

मुख्य सिद्धान्त

- क्रिया प्रधानता
- सत्य परिवर्तनशील है।
- उपयोगिता के सिद्धान्त पर वल
- परम्परा तथा प्रथाओं का विरोध
- सामाजिक जीवन पर बल

प्रयोजनवाद और शिक्षा

- शिक्षा स्वयं जीवन है।
- शिक्षा एक लोकतान्त्रिक क्रिया
- शिक्षा सामाजिक जीवन का आधार
- शिक्षा अनुभवों का पुनर्निमाण करने की क्रिया

शिक्षा के उददेश्य

शिक्षा के उददेश्य नही होते उददेश्य केवल व्यक्तियों के होते हैं।जान डीवी

अनुभवों का पुनर्निमाण करना

नये मूल्य एवं आदर्शों का निर्माण

भोतिक आनन्द की प्राप्ति

सामाजिक कुशलता पर बल।

लोकतन्त्र की शिक्षा पर बल।

जनतान्त्रिक आदर्शों का विकास ।

प्रयोजनवाद और पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धान्त

- क्रिया का सिद्धान्त
- अनुभव का सिद्धान्त
- रूचि का सिद्धान्त
- सामाजिकता का सिद्धान्त
- एकीकरण का सिद्धान्त
- विविधता का सिद्धान्त
- उपयोगिता का सिद्धान्त

प्रयोजनवाद और शिक्षक

बाल मनोविज्ञान का ज्ञाता हो।

समाज में विश्वास करने वाला हो।

वैज्ञानिक अभिव्यक्ति वाला हो।

(Friend , Philosopher, Guide)

www.ugcnetpaper.mobi

प्रयोजनवाद और विदधालय

विदालय समाज का लघु रूप है।

विदालय समाज की प्रयोगशाला है।

विदालय समुदाय का केन्द्र है।

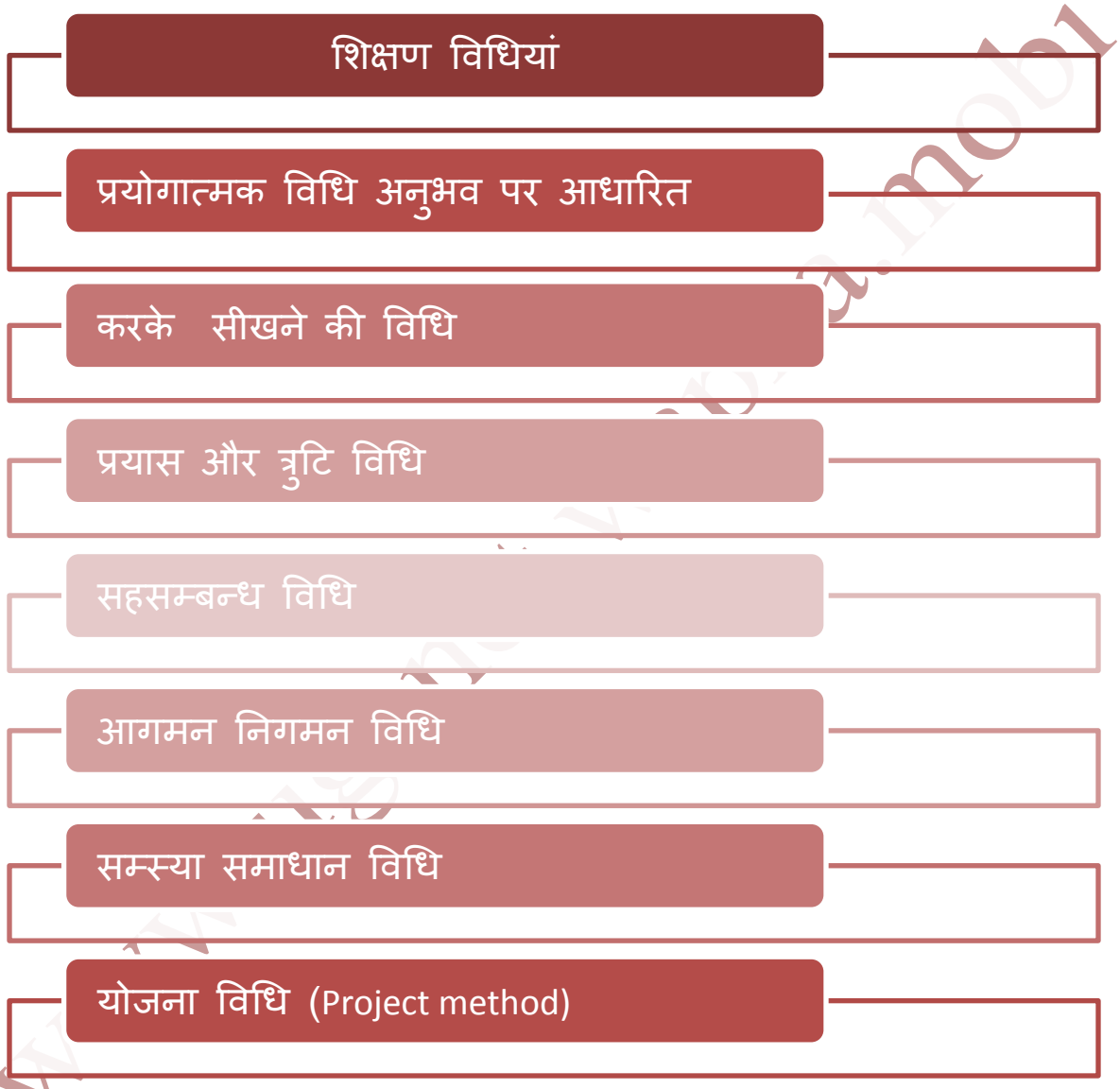
शिक्षण विधियां
प्रयोगात्मक विधि अनुभव पर आधारित
करके सीखने की विधि
प्रयास और त्रुटि विधि
सहसम्बन्ध विधि
आगमन निगमन विधि
सम्स्या समाधान विधि
योजना विधि (Project method)

- अनुशासन
- सामाजिक अनुशासन
- स्व अनुशासन
- विदालय समाज का लधु रूप

www.ugcnet.wapka.mobi

जान डीवी Books
1 The school and society
The school and child
Education today
Freedom and culture
Reconstruction philosophy
School of tomorrow
Democracy and education
How we think
Moral principal of education
The child and the curriculum

योजना विधि - किलपैट्रिक

प्रयोजनवाद का पाठ्यक्रम निर्धारण में महत्वपूर्ण योगदान है।

अस्तित्ववाद (Existentialism)

सोरेन क्रिकगार्ड, जीन पाल, सात्रे ,कार्ल जैस्पर ,फ्रेडरिक नीत्से ,मार्टिन हेडेगर, सुकरात

यह मानव अस्तित्व पर भौतिकता के संकट का दर्शन है।

सभी प्रकार का ज्ञान का उददेश्य मनुष्य के अस्तित्व की पहचान करना है।

मनुष्य कौन है मनुष्य का अस्तित्व क्या है।

मुख्य सिद्धान्त

- आध्यात्मिक मूल्य प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग अलग हैं।
- मानव व्यक्तित्व पर बल ।
- आदर्शवादी सिद्धन्तो का खंडन
- भवात्मक पक्ष पर बल
- बच्चों के लिए उदार शिक्षा

ज्ञान मीमांसा

सभी प्रकार के ज्ञान व्यक्तिनिष्ट हैं।

सहज ज्ञान पर विश्वास

सभी प्रकार के ज्ञान व सत्य व्यक्तिनिष्ठ हैं।

सच्चा ज्ञान मनुष्य के स्व का विकास करता है।

ये सहज ज्ञान पर विश्वास करते हैं।

यह व्यक्तिनिष्ठ दर्शन है।

प्रत्येक व्यक्ति को अपने अस्तित्व को पहचानना है।

तत्व मीमांसा

- मूल्यों को व्यक्तिनिष्ठ माना है।
- स्वतन्त्रता सबसे बड़ा नैतिक मूल्य ।
- मानव अपने मूल्यों की रचना स्वयं करता है।
- सब के मूल्य अलग अलग होते हैं

www.a...ka.mobi

शिक्षा के उददेश्य

- बौद्धिक विकास
- आत्मनिष्ठ व अन्तर्ज्ञान के विकास को जाग्रत करना।
- वस्तुनिष्ठ ज्ञान को व्यक्तिनिष्ठ ज्ञान में बदलना।
- तकनीकि शिक्षा को महत्व नही ।
- वैयक्तिक उन्नति का विकास करना।
- स्वये की समझ का विकास करना ।

www.

पाठ्यक्रम
कठोर पाठ्यक्रम का विरोधी
कला और साहित्य पर बल
तकनीकि शिक्षा का विरोध
लेखन इतिहास अंग्रेजी साहित्य धर्म मानवशास्त्र

शिक्षण विधियां
सामूहिक विधि का विरोध
सर्वोत्तम विधि सुकरात विधि अर्थात प्रश्न पूछना
करके सीखना
अन्तर्ज्ञान
स्व खोज विधि

www.ugcnet.wab

शिक्षक

महत्वपूर्ण है।

शिक्षक विदार्थी सम्बन्ध व्यक्तिगत होने चाहिए।

प्रत्येक के लिए अलग शिक्षक।

अनुशासन

अनुशासन

बालक स्वयं जिम्मेदार

स्व अनुशासन

विदालय

सामूहिकता का विरोध किया इसलिए विदालय को अधिक महत्व नही दिया।

ugcnet.wapka.mobi

नीत्शे - ईश्वर मृत है हमने उसकी हत्या कर दी है।

जैस्पर - मानव ही सबकुछ है।

सुकरात - अपने आप को जानो

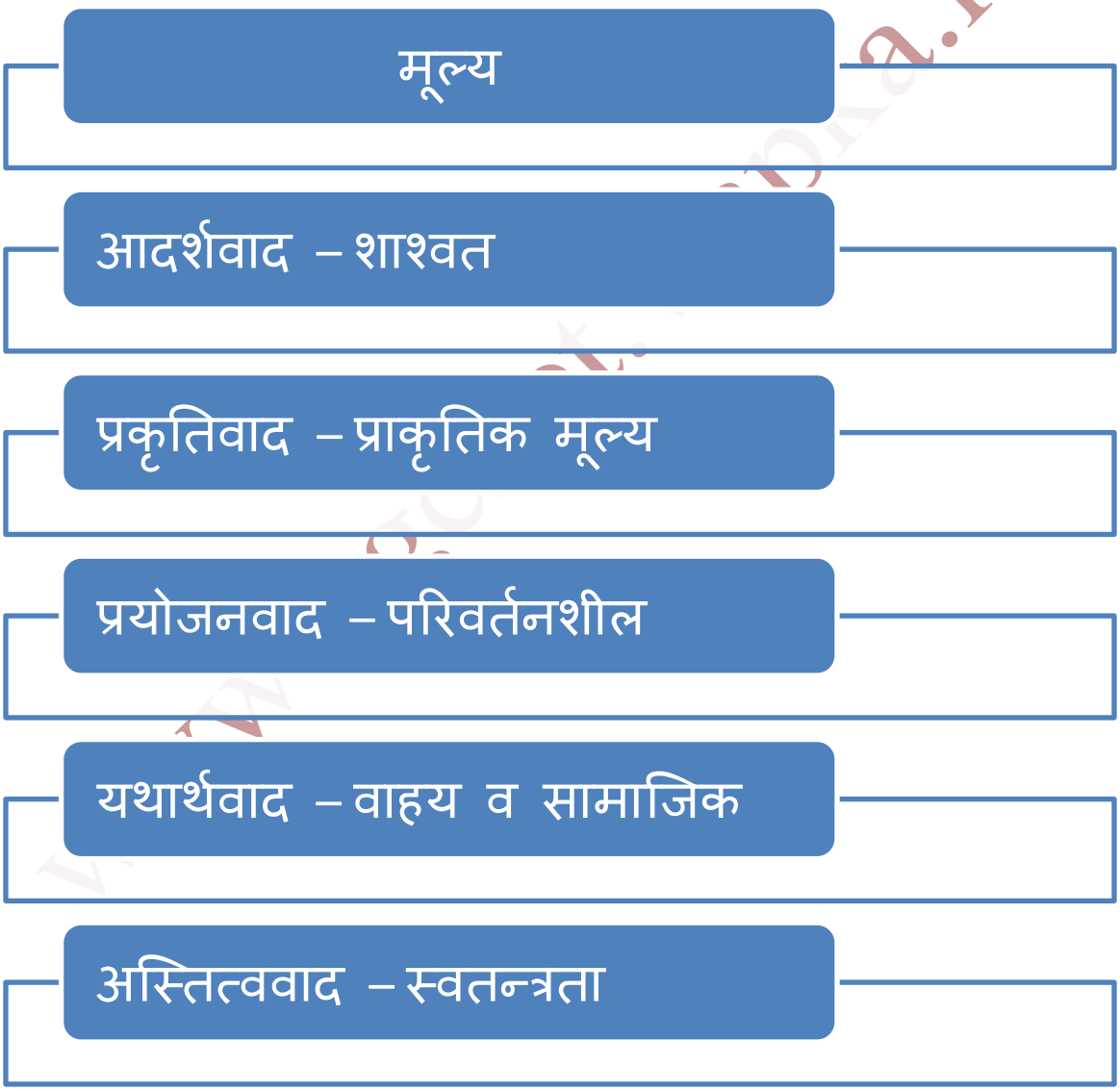

इस्लाम दर्शन

प्रवर्तक- हजरत मुहम्मद साहब

- पांच स्तम्भ्
- कलमा,
- रोजा
- नमाज
- जकात
- हज

www.freeswapka.mobi

- अदैतवादी दर्शन
- निराकार खुदा में विश्वास
- आध्यात्मिक और भौतिक दोनो
- अनुशासनवादी दर्शन
- ज्ञानवादी द्रष्टिकोण
- सांसारिक ऐश्वर्य की प्राप्ति
- शारीरिक भौतिक व्यावसायिक आर्थिक विकास
- इस्लाम का प्रसार
- उत्तम चरित्र का निर्माण
- राजनैतिक एवं राज्य विस्तार का उददेश्य

संस्कार - विस्मिल्लाह खानी 4 वर्ष 4 माह 4 दिन

पाठयक्रम

छोटे बच्चों के लिए लिखना पढना अंक गणना वर्णमाला कुरान की आयतें

दर्शनशास्त्र नीतिशास्त्र धर्मशास्त्र कृषि कौशल वाणिज्य ज्योतिष व ताबीर

भाषा - अरबी फारसी

शिक्षण विधि
अनुकरण
पुस्तक अध्ययन
व्याख्यान
भाषण
यात्रा

प्राथमिक शिक्षा - मकतब

उच्च शिक्षा- मदरसा

www.ugcnet.wapka.mobi

शिक्षा की बिषेशताएं

व्यावहारिक शिक्षा

- नि शुल्क शिक्षा
- व्यक्तिगत सम्पर्क
- कक्षा नायकीयी पद्धति का प्रयोग
- मदरसों को अनुदान - बादशाह

यथार्थवाद (Realism)

www.

- यह विज्ञान पर आधारित है।
- वैज्ञानिक ज्ञान को सत्य तथा पदार्थ को वास्तविक ।
- चारों और का संसार यथार्थ है।
- जगत उसी रूप में स्वीकार जिस रूप में वह दिखायी देता है।
- वैज्ञानिक विधि का सर्वाधिक महत्व
- विश्व जैसा है जहां है।

यथार्थवाद के प्रकार

मानवतावादी यथार्थवाद

यह मानव को केन्द्र मानता है।

सामाजिक यथार्थवाद

ये पुस्तकीय ज्ञान को बेकार मानते हैं।

समाज के साथ समायोजन मे ही मनुष्य का सुख।

ज्ञानेन्द्रिय यथार्थवाद

व्यक्ति का प्रकृति पर अधिकार करना शिक्षा का उददेश्य है।

www.ugcnet.wapka.mobi

नव यथार्थवाद तथा वैज्ञानिक यथार्थवाद

कला और विज्ञान दोनो के अध्ययन पर बल।

इनके अनुसार विज्ञान के नियम भी परिवर्तशील हैं।

ज्ञान मीमांसा

सत्य की प्राप्ति के लिए वैज्ञानिक विधि का प्रयोग।

धर्म को ढोंग माना परन्तु ईश्वर को भी माना

www.ugcnet.wapka.mobi

शिक्षा के उददेश्य

बालक को वास्तविक जीवन के लिए तैयार करना

शारीरिक विकास इन्द्रिय प्रशिक्षण

वैज्ञानिक द्रष्टिकोण का विकास

सृजनात्मक शक्ति का विकास

सामाजिक कुशलता का विकास

सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास

सामुदायिक विदालयों का विकास

आत्मा और आध्यात्मिक ज्ञान को स्वीकार नही करते।

प्रमाण ज्ञान के प्रकार

बौद्ध - प्रत्यक्ष् अनुमान

जैन – सम्यक ज्ञान

अरविन्द – द्रव्य आत्मा

गांधी जी – भौतिक आध्यात्मिक

वेदान्त – पर अपर

सांख्य – विवेक पदार्थ ज्ञान

www.ugnetdarka.mobi

विशेषताएं

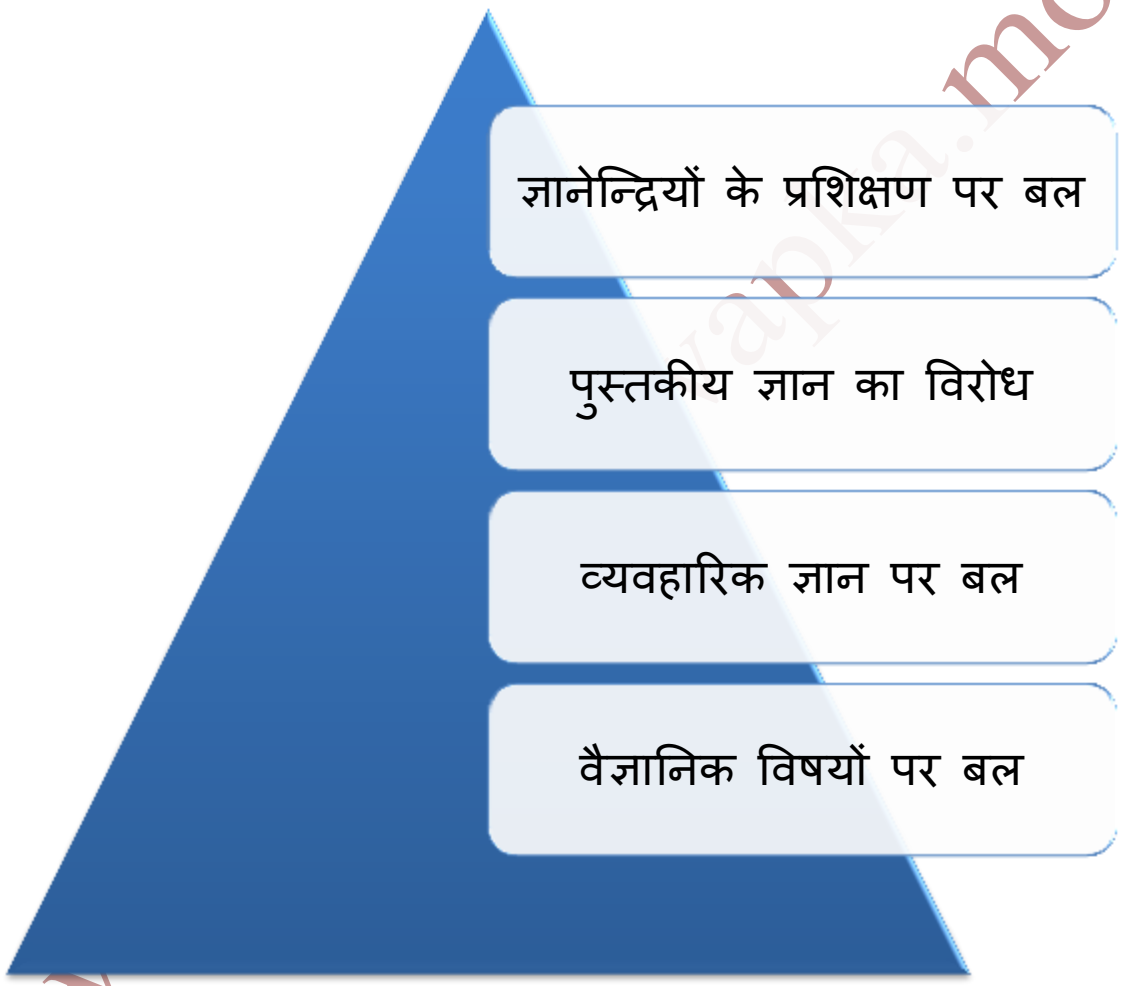

www.apka.mobi

तत्व मीमांसा

- *बहुतत्ववादी और नियतवादी दर्शन है।*
- *वास्तविक संसार मानसिक संसार से अलग है।*
- *जो अनुभव किया जाता है वही यथार्थ है।*

मूल्य मीमांसा

- *मूल्य बाह्य होते हैं।*
- *सामाजिक मूल्य*

www.ugcnet.vapka.mobi

शिक्षा के उददेश्य

- *वास्तविक जीवन के लाए तैयार करना।*
- *शारीरिक विकास*
- *इन्द्रिय प्रशिक्षण*
- *मानसिक विकास*
- *वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास*
- *सृजनात्मक शक्ति का विकास*
- *प्राकृतिक व सामाजिक वातावरण का ज्ञान।*
- *व्यवहारिक ज्ञान पर बल*
- *आदर्शवाद का विरोध*
- *आत्मा का अस्तित्व व आध्यात्मिक ज्ञान को नही माना।*

www.ugcnet.wapka.mobi

रविन्द्रनाथ टैगौर

इन्हे विश्व कवि के नाम से जाना जाता है।

ये

मानवतावादी

प्रकृतिवादी *प्रकृति के प्रेमी*

आदर्शवादि *आत्मा परमात्मा में विश्वास .*

प्रयोजनवादी *जीवन के व्यवहारिक पक्ष पर बल*

यथार्थवादी *भैतिक जगत में विश्वास थे*

1913 में गीतांजली के लिए नोबेल पुरूस्कार मिला

इनके दर्शन को विश्व बोध दर्शन कहते हैं।

www.ugcnet.wapka.mobi

ज्ञान मीमांसा

- ये भौतिक व आध्यात्मिक दोनो सत्य को मानते हैं।
- भौतिक वस्तुओं व क्रियाओं का ज्ञान भौतिक मानते थे अर्थात इन्द्रियों दवारा ।
- आध्यात्मिक तत्वों का ज्ञान योग दवारा।
- योग मार्ग में सबसे सरल व महत्वपूर्ण मार्ग प्रेम मार्ग है।
- ये उपनिषदीय दर्शन के पोषक थे।

तत्व मीमांसा

- सृष्टि ईश्वर के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति है।
- ईश्वर को साकार और निराकार दोनों रूपों में माना।

आत्मा के तीन कार्य हैं।

- आत्म रक्षा में प्रवृत्त करना ।

www.upscnet.wapka.mobi

- *ज्ञान विज्ञान की खोज व अनन्त ज्ञान की प्राप्ति में प्रवृत्त करना।*
- *अनन्त रूप को समझनें में प्रवृत्त करना।*
- *वह ब्रहम को मानव रुप में परम पुरूष मानते हैं।*

मूल्य मीमांसा

प्रेम से ही मानव मानव की सेवा करता है।

मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है।

www.ugcnet.wapka.mobi

शिक्षा के उददेश्य

- शारीरिक
- सामाजिक
- नैतिक
- सांसकृतिक
- बौद्धिक
- व्यावसायिक
- आध्यात्मिक विकास पर बल।
- राष्ट्रीय व अन्तर्राष्टीय भावना का विकास

पाठयक्रम

आध्यात्मिक सामाजिक व प्राकृतिक तीनों का समावेश

राष्टीय व अन्तर्राष्टीय महत्व का भाषा व संस्कृति पर बल।

पाठय सहगामी क्रियाओं पर बल।

कला मातृभाषा संस्कृत विज्ञान संगीत भूगोल प्रकृति अंग्रेजी ललितकला

समाज सेवा खेलकूद नृत्य नाटक संगीत ग्रामोत्थान पर बल।

- शिक्षण विधि
- पुस्तकीय ज्ञान का विरोध किया।
- स्वयं के अनुभवों दवारा सीखा जाये

apka.mobi

अनुशासन

- शिक्षण सिद्धान्त
- शिक्षा में मातृभाषा का प्रयोग
- कठोर नियन्त्रण की आलोचना
- प्रेमपूर्ण व्यवहार
- शिक्षण विधि रूचिकर
- बच्चों को सीखने के लिए प्रेरित करें।
- बच्चों को सक्रिय रखो।
- क्रिया विधि
- प्रयोग विधि
- मौखिक विधि
- संश्लेषण् व विश्लेषण विधि।
- स्वाध्याय विधि

आत्मानुशासन

दंड का विरोध

शिक्षक - ज्ञानी संयमी संस्कारी ब्रहमचारी

विदालय - प्रकृति की गोद में।

भ्रमण पर सर्वाधिक बल

- जन शिक्षा
- स्त्री शिक्षा
- धार्मिक शिक्षा पर बल दिया

www.ugcnet.wapka.mobi

इन्होने शान्तिनिकेतन की स्थापना की

भवन

पाठ भवन - प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा

शिक्षा भवन - उच्चतर माध्यमिक शिक्षा

विनय भवन - शिक्षक प्रशिक्षण्

कला भवन -चित्रकला ललित कला

श्री निकेतन - ग्रामीण उच्चतर शिक्षा

हिन्दी भवन -हिन्दी व तिब्बती भाषा एवं साहित्य।

समाज सेवा मौन प्रार्थना

सर्वधर्म समभाव

महात्मा गांधी

सर्वोदय दर्शन

प्रयोजनवादी - कार्य विधि

आदर्शवादी - शिक्षा के उददेश्य

प्रकृतिवादी - करके सीखना वातावरण से अनुकूलन

मानवतावादी

3r Reading Writing Arithmetic

3h Hand Heart Head की शिक्षा

www.

- बेसिक शिक्षा का प्रतिपादन किया।
- 7 से 14 बर्ष तक के बच्चों के लिए।
- जन शिक्षा पर बल
- स्त्री शिक्षा पर बल
- स्त्री व पुरूष की समान शिक्षा
- धार्मिक व नैतिक शिक्षा पर बल
- व्यावसायिक शिक्षा पर बल

तत्व मीमांसा

गीता के अनन्य भक्त थे

गीता के अनुसार पुरूष ईश्वर और प्रकृति पदार्थ दो मूल तत्व हैं।

आत्मा परमात्मा का अंश है। मनुष्य शरीर मन व आत्मा के योग से बना है।

ईश्वर नित्य है अत: सत्य

पदार्थ अनित्य है अत: असत्य

जीवन का उददेश्य ज्ञान अथवा मोक्ष है।

www.ugcnet.wapka.mobi

मूल्य मीमांसा

गीता के अनुसार निष्काम कर्म योग में विश्वास

नैतिक चरित्र को महत्व

श्रम नैतिकता व चरित्र के दवारा भौतिक सुख समृद्धि

इसके लिए 11 उपाय

- सत्य
- अहिंसा
- ब्रहमचर्य
- अस्वाद
- अस्तेय
- अपरिग्रह
- अभय
- अस्पर्शता
- सर्वधर्म समभाव
- विनम्रता
- कायिक श्रम

www.ugcnet.world.mobi

शिक्षा के उददेश्य

शारीरिक

सामाजिक

नैतिक

सांसकृतिक

बौद्धिक

व्यावसायिक

आध्यात्मिक विकास पर बल।

जीवीकोपार्जन पर बल

अफ्रीका में Tolstoy farm की स्थापना की

क्रियाप्रधान

मात्रभाषा को प्रमुख स्थान

हस्त कौशल और उदध्योग को प्रमुख स्थान

कताई बुनाई कृषि मिटटी का कार्य

मछली पालन

गणित सामाजिक विज्ञान

इतिहास भूगोल बागवानी

www.ugcnet.wapka.mobi

Book -My experiments with truth

Magazine- Young India

नैतिक शिक्षा समाज सेवा सामाजिक कार्य

www.ugcnet.wapka.mobi

- शिक्षण विधियां
- मोखिक विधि
- क्रिया विधि
- सहसम्बन्ध विधि
- अनुकरण विधि
- श्रवण मनन निधिध्यासनन्
- अनुशासन
- स्व अनुशासन के पक्षधर
- प्रभावात्मक विधि दवारा अनुशासन

शिक्षक

आदर्श व्यक्ति अनुशासित व संयमी

शिक्षार्थी

जिग्यासु व संयमी अनुशासित

विदालय

इसमें उत्पादन कार्य हो समुदाय के लोगों को पढने और कार्य करने की सुविधा होनी चाहिए।

शिक्षा से तात्पर्य राष्ट्र प्रेम और देश का परीक्षण है- गांधीजी

cnet.wapka.mobi

सार्वभौम भाइचारा – विवेकानन्द

वर्धा योजना – गांधी जी

वैज्ञानिक शिक्षा – स्पेन्सर

सामाजिक शिक्षा – जॉन डीवि

अरविंद

Books

Life divine

The mother on the Veda

Light of Yoga on education

Essays on Geeta

The national value of arts

Arvindo – Integeral education

Spiritual teaching and yoga practice

समग्र योग दर्शन

अरविंद ने गीता के कर्मयोग तथा ज्ञान योग की व्याख्या की है

उदात सत्य का ज्ञान (Realization of sublime truth) समग्र जीवन दृष्टि दवारा

तत्व मीमांसा

ईश्वर सृष्टि का निर्माता है। मानव जीवन का अन्तिम उददेश्य सत् चित आनन्द की प्राप्ति है।

ज्ञान मीमांसा

भौतिक और आध्यात्मिक ज्ञान के भेद को जानना ही ज्ञान है।

ज्ञान के प्रकार

द्रव्य ज्ञान साधारण ज्ञान

आत्मज्ञान उच्च ज्ञान

वस्तु जगत का ज्ञान

शिक्षा से अर्थ

शिक्षा मानव के मस्तिक और आत्मा की शक्तियों का निर्माण करती है, और उसमे चरित्र व संस्कृत को जाग्रत करती है ।

www.ugcnet.wapka.mobi

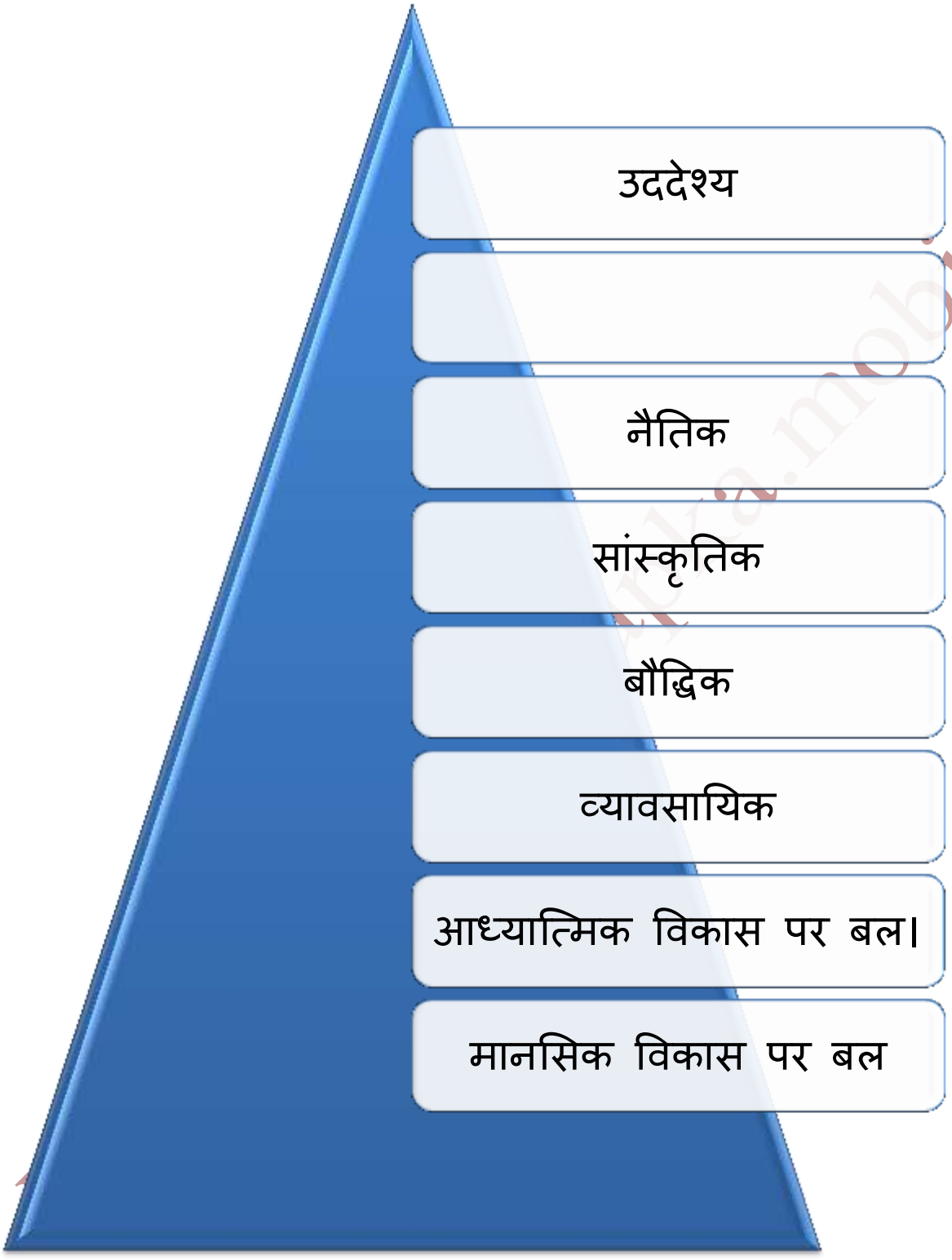
उददेश्य
नैतिक
सांस्कृतिक
बौद्धिक
व्यावसायिक
आध्यात्मिक विकास पर बल।
मानसिक विकास पर बल

पाठयचर्या

स्वतन्त्र वातावरण का समर्थन किया ।

रूचि और याग्यता के अनुसार सभी विषयों को शामिल किया जाना चाहिए

इतिहास भूगोल समाजशास्त्र गणित विज्ञान अर्थशास्त्र वाणिज्य कला खेलकूद व्यायाम कृषि

ध्यान योग दर्शन आदि।

शिक्षण विधि

योग क्रिया व्याख्यान

कहानी पुस्तकीय ज्ञान स्वक्रिया व तर्क को आधार माना।

शिक्षक

पथप्रदर्शक व सहायक

शिक्षक केवल बच्चों को स्वयं ज्ञान प्राप्त करने में सहायता देता है।

शिक्षार्थी

केन्द्र विन्दु योग्यता के आधार पर शिक्षण

ब्रहमचर्य का पालन और योग

www.ugcnet.wapka.mobi

विवेकानन्द

नरेन्द्रनाथ दत्त बचपन का नाम

पिता विश्वनाथ दत्त

जन्म १२ जनवरी 1865

माता भुवनेश्वरी देवी

उठो जागो तब तक न रूको जब तक कि परम लक्ष्य की प्राप्ति न कर लो।

तुमको कार्य के समस्त क्षेत्रों में व्यावहारिक होना पडेगा सिद्धान्तो के ढेर ने सम्पूर्ण देश का विनाश कर दिया है।

प्राणी एक मन्दिर है लेकिन मनुष्य एक सबसे उंचा मन्दिर है।

वेदान्त की ओर लोटो।

खाली पेट धर्म नही होगा।

Man making education

www.ugcnet.wapka.mobi

नव्य वेदान्त दर्शन

ये आध्यात्मिक और भौतिक ज्ञान दोनों को सत्य मानते हैं। व मानव सेवा सबसे बडा धर्म

इनकी शिक्षा को मानव निर्माण की प्रक्रिया कहा जाता है।

मन की एकाग्रता के दवारा शिक्षा

गुरू रामकृष्ण परमहंस

रामकृष्ण् मिशन की स्थापना

बैलूरमठ की स्थापना की

1893 में शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लिया।

तत्व मीमांसा

आत्मा ब्रहम का अंश है। मनुष्य को मन शरीर तथा आत्मा का योग माना

आत्मा को सर्वशक्तिमान माना

आध्यात्मिक विकास के लिए भारतीय ज्ञान एवं क्रिया का समर्थन

www.ugcnet.wapka.mobi

मूल्य मीमांसा

मानव सेवा सबसे बडा धर्म है। वस्तु जगत व सूक्ष्म जगत दोनों का ज्ञान सही।

वस्तु जगत ब्रहम दवारा निर्मित हैं। अन्तिम उददेश्य मुक्ति की प्राप्ति है। मनष्य को ईश्वर का मन्दिर माना ।

ज्ञान कर्म भक्ति व राज योग दवारा आत्मानुभूति।

शिक्षा के उददेश्य

शारीरिक मानसिक व बैद्धिक विकास नैतिक व चारित्रिक विकास व्यावसायिक विकास समाज सेवा की भावना का विकास राष्टिय एकता का विकास धार्मिक व आध्यात्मिक विकास

बालक अपने आप को शिक्षित करता है।

- *पूर्णता को प्राप्त करना*
- *आत्मनिर्भरता*
- *आत्मविश्वास*
- *गुरूकुल प्रणाली का समर्थन*

www.ugcnet.vapka.mobi

पाठयक्रम

शारीरिक विकास के लिए खेलकूद व्यायाम

मानसिक भाषा कला इतिहास संगीत भूगोल गणित विज्ञान

जो भी अच्छा मिले पाठयचर्या में शामिल करो

भारतीय धर्म दर्शन को अनिवार्य स्थान

भाषा मात्रभाषा अंग्रेजी संस्कृत प्रादेशिक भाषायें

भजन कीर्तन सत्संग ध्यान

शिक्षण् विधि

अनुकरण तर्क विचार विमर्श निर्देशन व परामर्श प्रदर्शन व प्रयोग प्रत्यक्ष व्याख्यान योग को सर्वोत्तम माना ।

www.ugcnet.wapka.mobi

अनुशासन

आत्मानुशासन को माना

अनुशासित वह है जो आत्मा से प्रेरित होकर कार्य करता हैं।

शिक्षक

गुरू ग्रहवास को समर्थन

अध्यापक के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क होना जरूरी है।

Friend, philosopher, guide

शिक्षक को केवल बालकों की सेवा करनी चाहिए।

अध्यापक का कार्य केवल जाग्रत करना ही है।

विदालय

गुरू ग्रह प्रणाली के समर्थक परन्तु यह व्यावहारिक नही।

विदालय का वातावरण शुद्ध होना चाहिए।

www.ugcnet.wapka.mobi

शिक्षार्थी

ब्रहमचर्य का पालन करने वाला सीखने की प्रबल इच्छा गुरू में श्रद्धा

जनशिक्षा के समर्थक

शिक्षा सबके लिए होनी चाहिए।

स्त्री शिक्षा स्त्रियों के लिए उतनी ही लगन से शिक्षा होनी चाहिए जितना कि पुरूषों की ।

इन्होंने सह शिक्षा का विरोध् किया।

स्त्रियों के विदालय अलग होने चाहिए।

विभिन्नता में एकता की खोज।

www.ugcnet.wapka.mobi

बालक शिक्षक का मानस पुत्र है ।

नालन्दा पूर्व में

बल्लभी पश्चिम में

भारतीय दर्शन

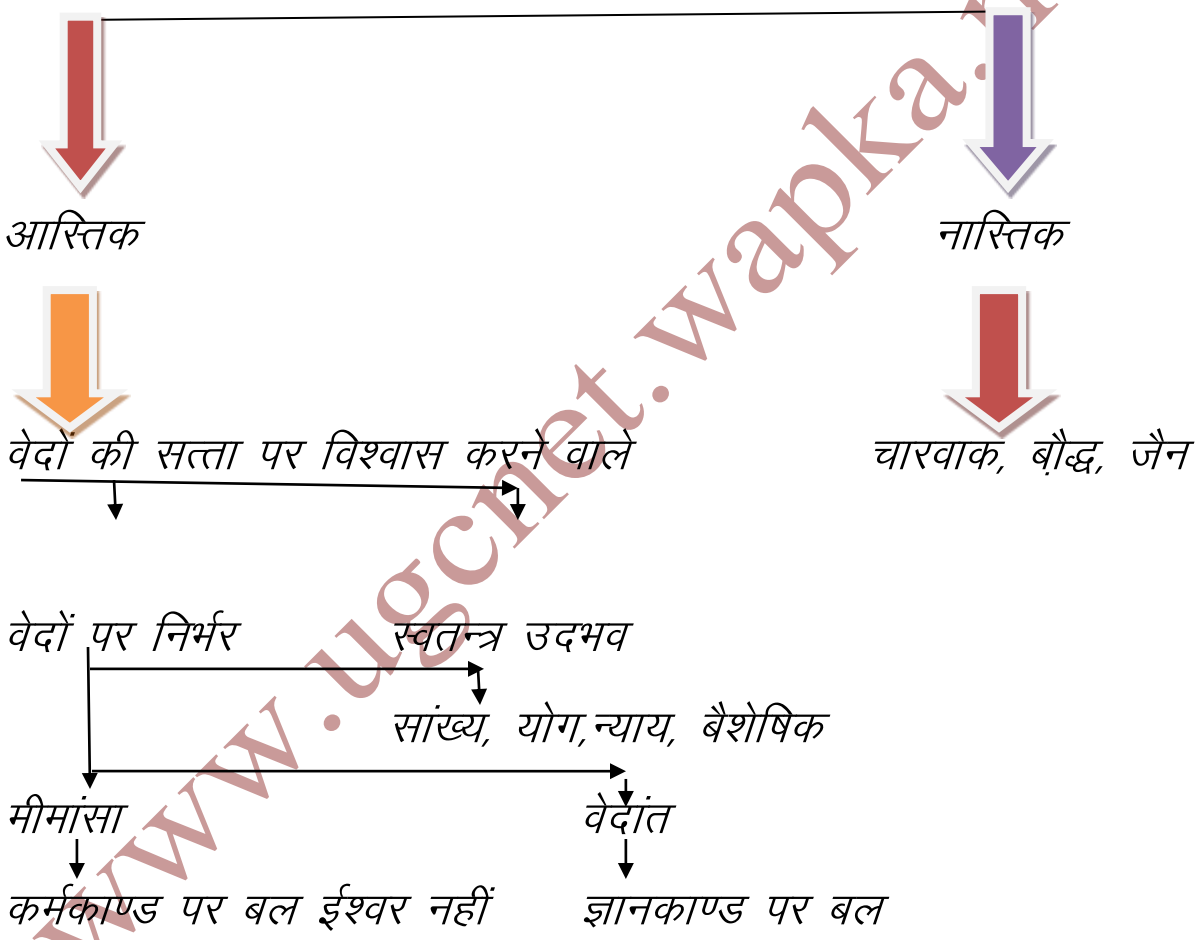

वैदिक काल में प्रारम्भिक शिक्षा में व्याकरण का ज्ञान कराया जाता था ।

शिक्षा प्रवेश – उपनयन संस्कार

समाप्त– समावर्तन संस्कार

www.ugcnet.wapka.mobi

सांख्य दर्शन

कपिल

*इसकी ईश्वर में आस्था में नहीं अतः इसे नि**रीश्वर** शास्त्र भी कहते हैं।*

यह दो स्तम्भो को स्वीकार करता है– प्रकृति और पुरूष

सांख्य का अर्थ है– सम्यक ज्ञान, संख्याओं का ज्ञान

या विवके ज्ञान या अमूर्त ज्ञान

जो संख्या शब्द से उत्पन्न हुआ है।

इसमें कुल २५ तत्वों को बताया गया है,जिनमें प्रकृति जड और पुरूष चेतन है।

प्रकृति के तीन गुण होते हैं– सत्व, रजस, तमस ।

www.ugcnet.wapka.mobi

Kku ehekalk

inkFk Kku- ;FkkFk KkuA

foo d Kku & KkufUn;k dk Kku

ज्ञान प्राप्ति की प्रकिया

पदार्थ ज्ञान –इन्द्रिया – मन –अहंकार– बुद्धि – पुरूष

Kku dh rhu fof/k;k

iR;{k fof/k vuqeku fof/k
शCn fof/k

वस्तु जगत के लिए तीनों विधियां आवश्यक हैं,जबकि पुरूष तत्व के लिए शव्दों पर निर्भर रहना पडता है।

पुरूष तत्व के लिए योग साधना मार्ग का समर्थन किया है।

तत्व मीमांसा

ज्ञान वह है जो मोक्ष प्राप्त करने में मद्द करता है– सांख्य, वेदान्त।

प्रकृति *पुरूष*

मन *बुद्धि* *अहंकार*

ज्ञानेन्द्रियां *कामेन्द्रियां* *तन्मात्राएँ* *पंचमहाभूत*

eY; ehekalk

इन्होंने त्रयदुख पर बल दिया है।

आध्यात्मिक बल – मानसिक बल –सत, रज,तम,

आदि भौतिक दुख – शारीरिक गुण 'वात ,पित्त,कफ

आदि दैवीय दुख – ग्रह, भूत आदि के कारण

त्रयदुख से छुटकारा ही मोक्ष है और त्रयदुख का कारण अज्ञान है।

मूल सिद्धांत – यह सृष्टि प्रकृति और पुरूष के योग से निर्मित है। पुरूष की स्वतन्त्र सत्ता है। वह अनेक है।

www.ugc wapka.mobi

तनमात्रा – तनुमात्रा – कम मात्रा

महाभूत– वह वस्तु जिसमें अपनी सत्ता स्थापित की।

मनुष्य का विकास उसके जड़ व चेतन पर निर्भर है।

जड़ - प्रकृति

चेतन - पुरूष

मुक्ति के लिए ज्ञान आवश्यक है।

www.ugcnet.wapka.mobi

शंकर

वेदान्त का शाब्दिक अर्थ है ज्ञान का अन्त

यह ब्रहम माया के आधार पर जगत की रचना करता है।

जीव व ब्रहम में कोइ अन्तर नही है।

ज्ञान दो प्रकार का है

परा व अपरा

तीन साधन

श्रवण - सुनना

मनन - अभ्यास करना

निधिध्यासन - दैनिक प्रयोग करना

www.ugcnet.wapka.mobi

वेदों का ज्ञान उपनिषदों में है। इसी चिन्तन का अन्तिम सार वेदान्त है।

इसे अदवैत वेदान्त भी कहते हैं। इसमें वेद अरण्यक व उपनिषदों का सार है।

- प्रकृति
- महत
- अहंकार

त्रय दुख - सांख्य

पंचमहाव्रत- त्रिरत्न जैन

4 आर्य सत्य -बौद्ध

अष्टांग मार्ग -बौद्ध

www.……apka.mobi

वेदान्त की बिशेषताएं

ब्रह्म की सत्ता वास्तविक है।

आत्मा ब्रह्म का अंश है।

ब्रहम जीव अभिन्न है।

पुर्नजन्म पर विश्वास

जगत नाशवान व असत्य

मूल्य मीमांसा

सामाजिक मूल्यों पर बल

दो प्रकार की मुक्ति

जीवन मुक्ति - मोक्ष

विदेह मुक्ति - मृत्यु

शिक्षा वही है जो मुक्ति दिलाये

www.ugcnet.wap

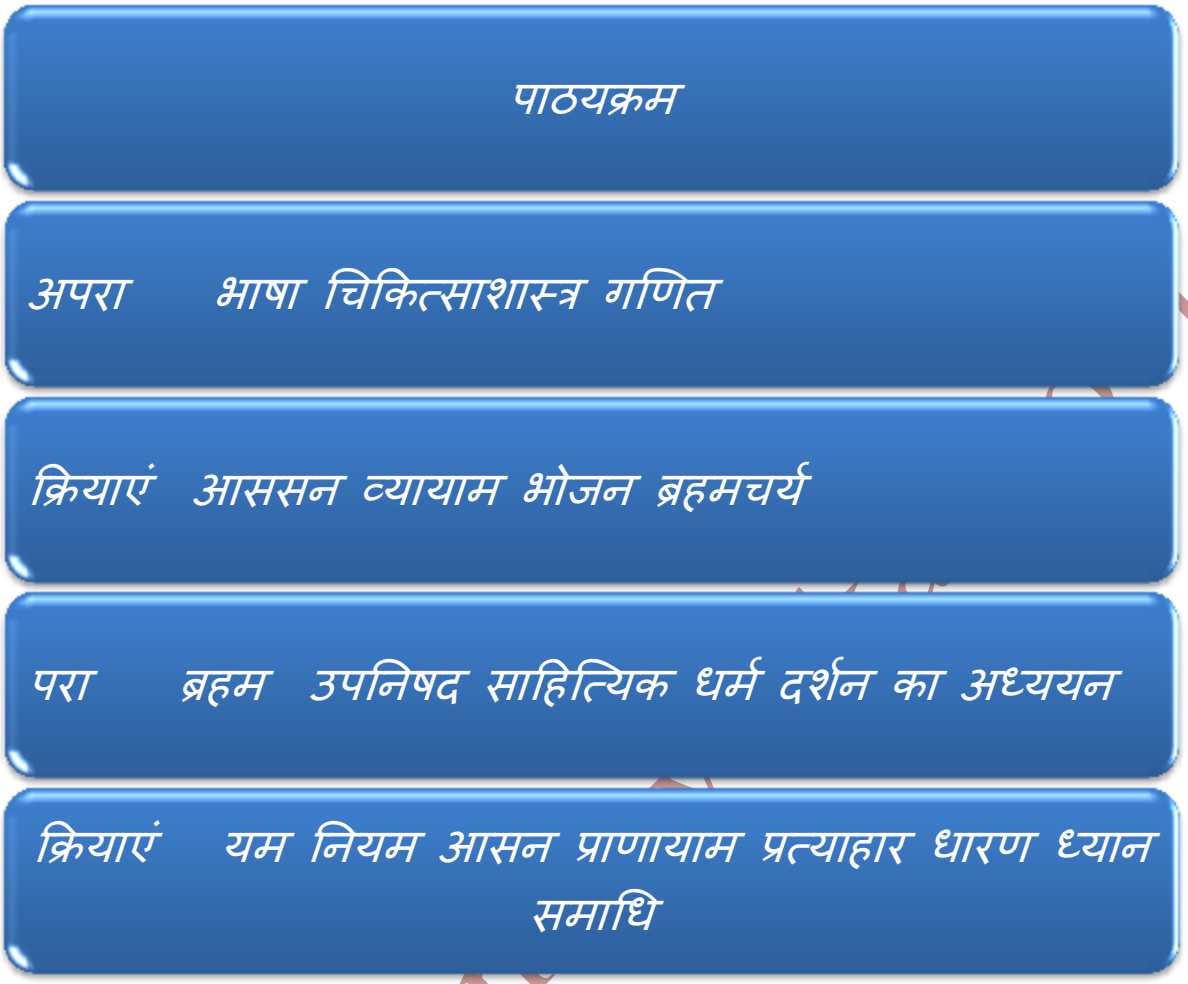

शिक्षण विधियां

आन्तरिक साधन - मन बुद्धि चित्त अहंकार

बाहय साधन - ज्ञानेन्द्रियां कर्मेन्द्रियां

www.ugc

शिक्षा के उददेश्य

- मोक्ष प्राप्ति
- शारीरिक विकास
- इन्द्रिय विकास
- मानसिक विकास
- नैतिक विकास
- धार्मिक विकास
- आाध्यात्मिक विकास

www

ज्ञान के स्त्रोत

- प्रत्यक्ष
- अनुमान
- शब्द व तर्क

आचार्य अहं ब्रह्मास्मि

www.ugcnet.wapka.mobi

बौद्ध दर्शन

प्रवर्तक गौतम बुद्ध

जन्म लुम्बनी कपिलवस्तु

पिता शुद्धोधन

पत्नी यशोधरा

पुत्र राहुल

प्रथम उपदेश सारनाथ

भाषा पालि

निर्वाण बट बृक्ष के नीचे बोध गया।

संस्कार (ceremony)

प्रवेश लेने वाला द्वारपाल कहलाता है।

पवज्जा 8 बर्ष में प्रवेश के समय श्रवण या सामनेर कहा जाता था

12 बर्ष वाद उपसम्पदा 20 बर्ष की आयु में

यह नास्तिक दर्शन है।

आत्मा में भी विश्वास नही करता

पुनर्जन्म में विश्वास

www.ugcnet.wapka.mobi

4 आर्य सत्य व अष्टांग मार्ग

त्रिपिटिक

बौद्ध धर्म में दो मत हैं।

हीनयान

महायान

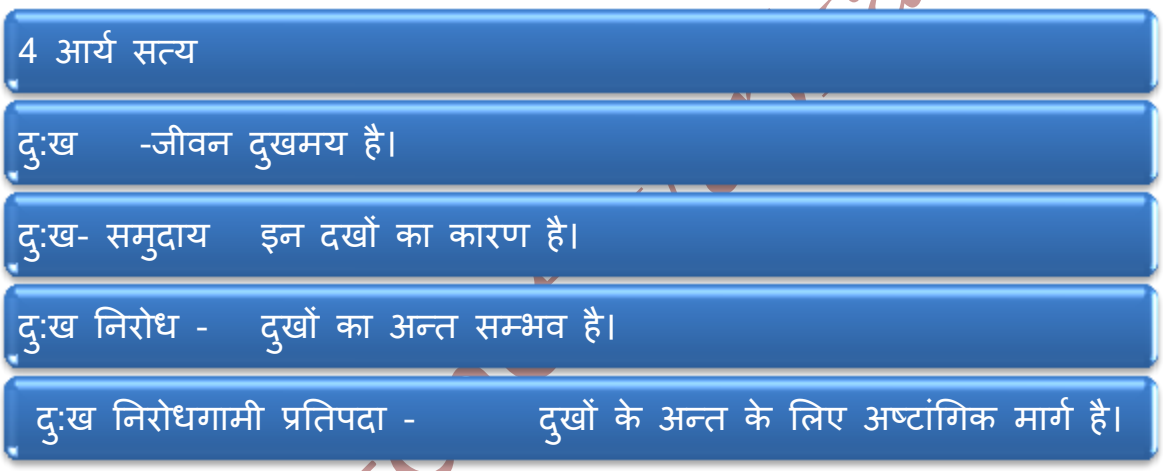

ज्ञान का साधन शरीर मन व चेतना है।

सच्चे ज्ञान से निर्वाण प्राप्त होता है।

दुखों का कारण अज्ञानता है।

www.ugc...a.mobi

ज्ञान मीमांसा

www.ugcnetpaka.mobi

तत्व मीमांसा

ये पदार्थ संसार और आध्यात्मिक संसार दोनो को वास्तविक मानते हैं।

यह अनात्मवादी तथा अनीश्वरवादी दर्शन है।

पाठक्रम

व्यायाम भाषा आयुर्वेद शल्य वास्तुकला शिल्प तकनीकी शिक्षा।

कर्मप्रधान पाठयक्रम

- शिक्षण विधियां(Teaching Methods)
- चर्चा
- व्याख्या
- चिन्तन
- मनन
- स्वाध्याय
- व्याख्यान
- मौखिक
- प्रवचन
- सम्मेलन
- भ्रमण

अनुशासन

कठोर अनुशासन पर बल

विदालय

मठ व बिहारों में शिक्षा दी जाती थी ।

नालन्दा - पूर्वी बंगाल

तक्षशिला - रावलपिन्डी के पास

बल्लभी - गुजरात

विक्रमशिला मगध

पतन के कारण

मुस्लिम शासकों दवारा केन्द्रों को नष्ट करना

भिक्षुओं का चारित्रिक पतन

श्रम की उपेक्षा

www.ugcnet.wapka.mobi

- अष्टांग मार्ग
- सम्यक दृष्टि
- सम्यक संकल्प
- सम्यक आजीविका
- सम्यक वचन
- सम्यक कर्म
- सम्यक व्यायाम
- सम्यक स्मृति
- सम्यक समाधि

www.

शिक्षा के उददेश्य

- शारीरिक स्वास्थ्य
- धार्मिक भावना
- चरित्र निर्माण
- निर्वाण की प्राप्ति
- अष्टांगिक मार्ग पर बल

आचार्य आचरण की शिक्षा देते थे।

उपाध्याय शिक्षण की जिम्मेदारी

www.ugcnet.mobi

जैन दर्शन

जैन धर्म अहिंसा पर सबसे अधिक बल देता है।

यह भौतिक मान्यताओं की आलोचना करता है।

पंच महाव्रत   सत्य अहिंसा अस्तेय अपरिग्रह ब्रहमचर्य

वेदों की सत्ता पर विश्वास नही है।

वैदिक मान्यताओं की आलोचना करता है।

अनीश्वर दर्शन

जैन *जिन शब्द से बनाया गया है। जैन साहित्य में इसका अर्थ है इन्द्रियों को जीतने वाला*

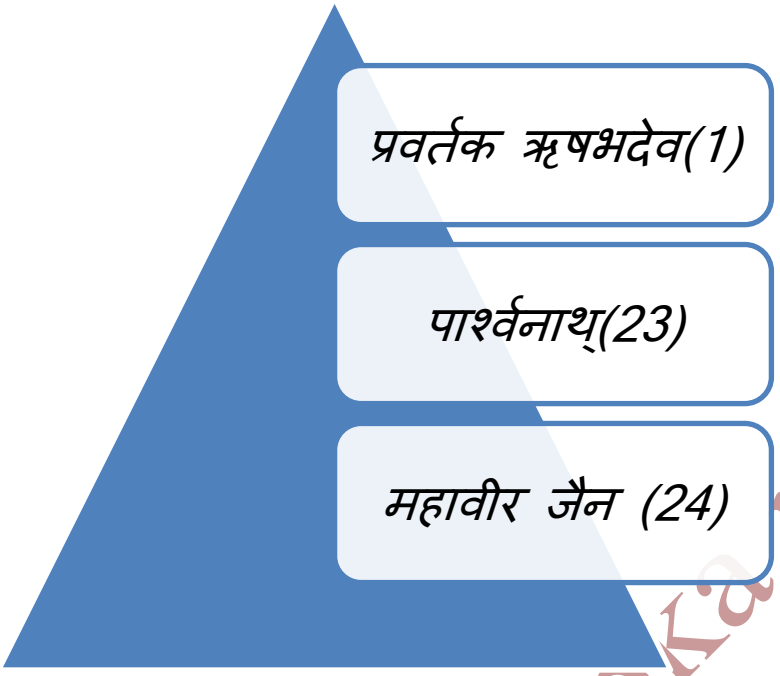

जन्म -कुंडाग्राम

पिता -सिद्धार्थ

माता -त्रिशला

पत्नि -यशोदा

पुत्री -अन्नोजा प्रियदर्शनी

www.ugcnet.wapka.mobi

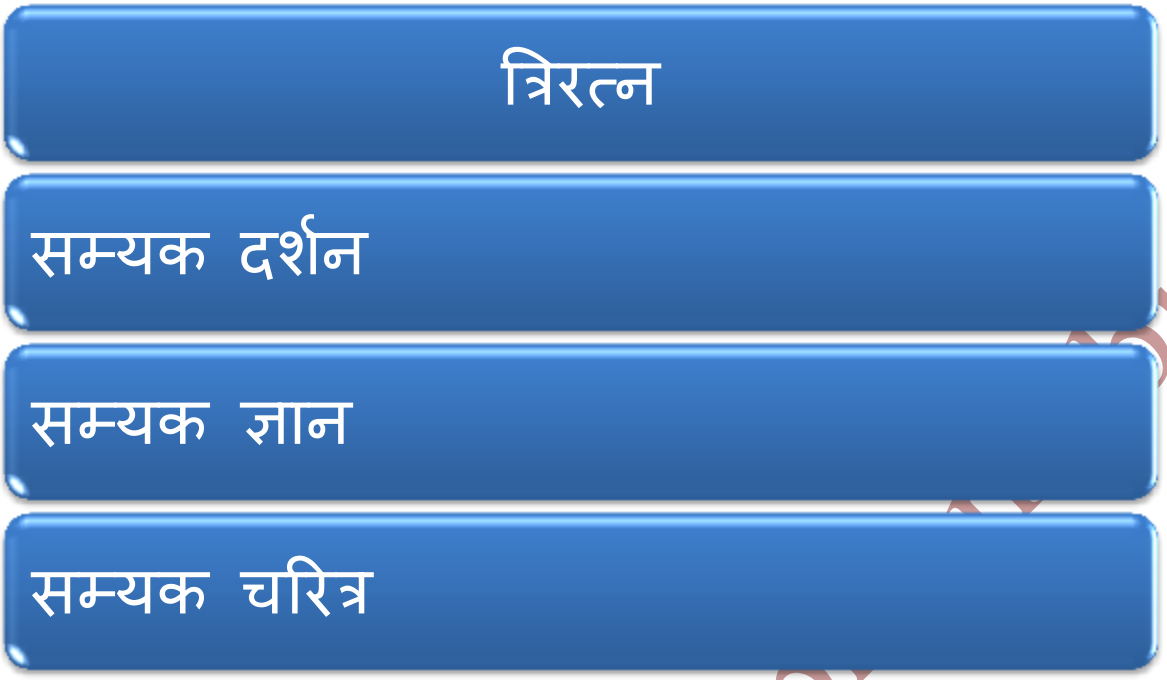

यह दो मतो मे बटा है।

- *श्वेताम्बर*
- *दिग्मबर*

www.ugcnet.wap

ज्ञान मीमांसा

- पांच प्रकार के ज्ञान
- मतिज्ञान
- श्रुतिज्ञान
- अवधिज्ञान
- मन:पर्याय ज्ञान
- कैवल्य

जीव व अजीव को जानना ही ज्ञान है।

शिक्षा

सांसारिक धार्मिक व व्यावसायिक सभी प्रकार के ज्ञान पर बल

जीवन का अन्तिम लक्ष्य कैवल्य है।

(मोक्ष जीव की अजीव से मुक्ति है।)

www.ugc

इसके लिए त्रिरत्न

यह दर्शन सांख्य दर्शन से प्रभावित है।

आत्मा मे विश्वास

मोक्ष के लिए त्रिरत्न

पुनर्जन्म एवं कर्मवाद में विश्वास

मूल्य मीमांसा

शाश्वत एवं वास्तविक

अहिंसा तपस्या व्रत उपवास आदि जीवन के मूल्य होने चाहिए।

छात्र

श्रावक सांसारिक जीवन के लिए तेयार होता है।

श्रमण पंच महाव्रतों का पालन करता है। ब्रहमचारी ।

बालक के व्यक्तित्व का आदार करते हैं।

बालक का शरीर उसके पुनर्जम के कर्मो का फल है।

www.ugcnet.wapka.mobi

भौतिक तत्व को पुदगल कहते हैं।

पाठयचर्या

व्यावहारिक

ज्ञानात्मक एवं आध्यात्मिक

विज्ञान गणित भाषा व्याकरण कला

शिक्षण विधियां

- प्रयोग
- स्वाध्याय
- प्रत्यक्ष
- वैज्ञानिक
- व्याख्यान
- चर्चा
- इन्द्रियानुभव

www.ugcnet.wapka.mobi

जन शिक्षा में विश्वास

Ivan Eliach Books

His celeberation of awareness

The schooling society

www.ugcnet.wapka.mobi

शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार

शिक्षा तथा समाज मे अटूट सम्बन्ध है।

जैसा समाज होगा वैसी ही वहां की शिक्षा व्यवस्था होगी।

आधूनिक समाज - विज्ञान पर विशेष बल

आदर्शवादी समाज - आध्यात्मिक विकास पर बल

भौतिकवादी समाज - भौतिक सम्पन्नता पर बल

प्रयोजनवादी समाज - क्रिया एवं व्यवहार पर बल

जन्तन्त्रवादी समाज लोकतान्त्रिक आदर्शो पर आधारित

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है।

समाज सामाजिक सम्बन्धों का जाल होता है।

शिक्षा का समाज पर प्रभाव

सामाजिक विरासत का संरक्षण

सामाजिक भावना को जाग्रत करना

समाज का राजनैतिक विकास

www.ugcnet.wapka.mobi

समाज का आर्थिक विकास

सामाजिक नियन्त्रण्

सामाजिक परिवर्तनों को बढ़ावा

सामाजिक सुधार

बालक का सामाजीकरण

समाज का शिक्षा पर प्रभाव

- शिक्षा के स्वरूप का निर्धारण
- शिक्षा के उददेश्य का निर्धारण
- शिक्षा की पाठयचर्या का निर्धारण
- शिक्षण विधियों का निर्धारण
- विद्‍यालय के स्वरूप का निर्धारण
- प्रबन्धन के तरीकों का निर्धारण

www.uptetwapka.mobi

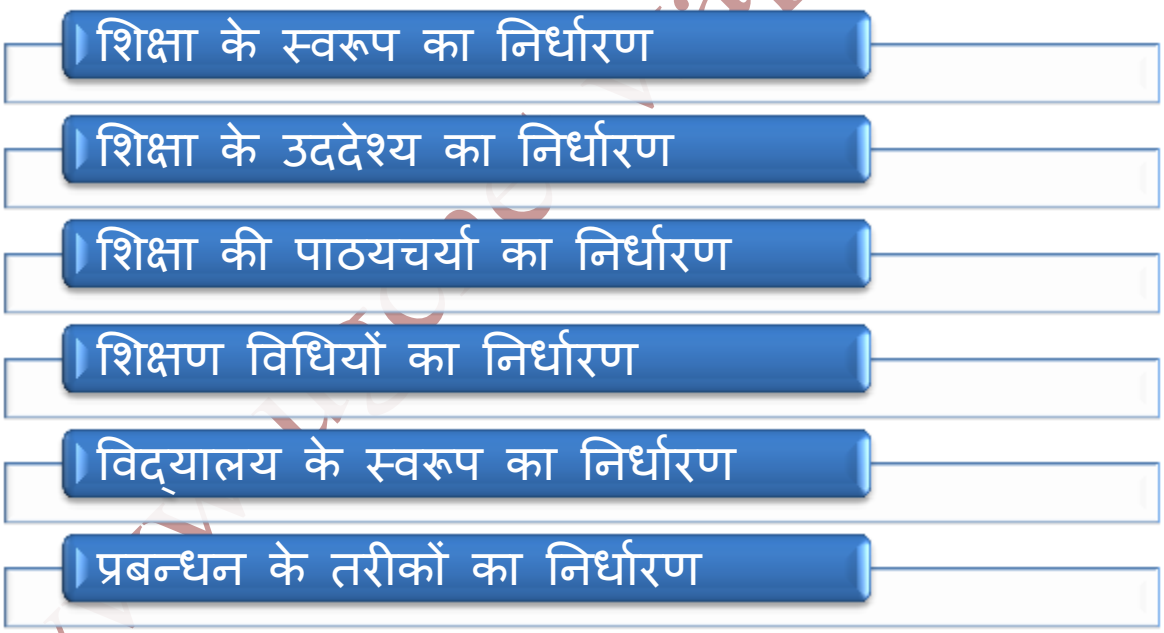

शैक्षिक समाजशास्त्र की प्रकृति

शैक्षिक समाजशास्त्र शैक्षिक समस्याओं के लिए समाजशास्त्र का प्रयोग है।

यह शिक्षाशास्त्री की प्रक्रिया है।

यह शैक्षिक समस्याओं का समाधान समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से करता है।

यह शैक्षिक परिस्थिती में व्यवहार का निर्धारण करता है।

यह शिक्षासास्त्र तथा समाजसास्त्र का एक नवीन क्षेत्र है।

इसमें शिक्षाशास्त्र तथा समाजशास्त्र दोनों के सिद्धान्तों का प्रयोग होता है।

इसमें शैक्षिक प्रक्रिया के सन्दर्भ में समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों की व्याख्या की जाती है।

यह सामाजिक नियन्त्रण स्थापित करता है।

यह समाजशास्त्र का व्यवहारिक रूप है।

यह विदालयों की समस्याओं के लिए समाज की और जाता है।

सामाजिक रुप में शिक्षा के कार्य

- शिक्षा सामाजिक संरचना के स्वरूप का निर्धारण करती है।
- शिक्षा बालक का सामाजिकरण करती है।
- शिक्षा बालक को एक योग्य नागरिक के रूप में स्थापित करती है।
- शिक्षा सामाजिक परिवर्तनों का मार्गदर्शन करती है।
- शिक्षा समाज के आदर्शों तथा आवश्यकताओं को प्राप्त करने में सहायता देती है।
- शिक्षा समाज की संस्कृति का संरक्षण् व विकास करती है।

www.

शिक्षा तथा परिवार

Family शब्द की उत्पत्ति Famulus शब्द से मानी जाती है। जिसके अर्थ है Servent

उन व्यकतियो का समूह जिनमें रक्त समबन्ध् हो तथा वे एक दूसरे को किसी न किसी रूप में प्रभावित करते हों उसे परिवार कहते हैं।

परिवार के कार्य

- बालक के नैतिक एवं शारीरिक विकास में सहयोग देना
- बालक के स्वास्थ्य की रक्षा एवं शारीरिक विकास।
- बालक के शारीरिक मानसिक एवं संवेगात्मक विकास में योगदान देना ।

www.ugcnet.wapka.mobi

शिक्षा तथा समुदाय

Community दो शब्दों से बना है com तथा munis जिसका अर्थ है एक साथ सेवा करना

ऐसा समूह जो एक साथ रहते हुए एक दूसरे का सहयोग व अधिकारों का उपयोग करते है।

समुदाय का शिक्षा पर प्रभाव

- यह बालक के व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव डालता है।
- यह बालक की शिक्षा का सक्रिय अनौपचारिक साधन है।
- यह बालक के सामाजिक संग्यानातमक तथा व्यावहारिक विकास में योगदान करता है।
- समुदाय शिक्षा के उददेश्य व पाठयक्रम के निर्धारण में भूमीका निभाता है।

apka.mobi

शिक्षा व संस्कृति

संस्कृति शब्द अंग्रेजी भाषा के culture शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। culture शब्द लेटिन भाषा के cultura से बना है जिसका अर्थ है TO cultivate or To learn

समुदाय विशेष के लोग जो ज्ञान व्यवहार व आदर्श सीखते हैं उन्हे बनाए रखना पसंद करते हैं जैसा व्यवहार करना पसंद करते है बह सब उनकी संस्कृति कहलाता है।

संस्कृति के प्रकार

आजबर्न के अनुसार

1 भौतिक संस्कति -मानव दवारा निर्मित वस्तुओं के रूप में

2 अभौतिक संस्कृति- मानव दवारा बनाये गये विचार मूल्य आदर्श एवं व्यवहार प्रतिमान के रूप मे होती है।

www.ugcnet.wapka.mobi

संस्कृति के सन्दर्भ में शिक्षा की भूमिका

- संस्कृति के हस्तान्तरण मे सहायक
- संस्कृति की निरन्तरता मे सहायक
- संस्कृति के परिवर्तन मे सहायक
- व्यक्तित्व के विकास में सहायक
- सांस्कृतिक बिलंबना को दूर करना
- व्यकति के सांस्कृतिक विकास में सहायक

संस्कृति के कार्य

- *मानव का परिवेश से अनुकूलन कराती है।*
- *सामाजिक सम्बन्धों को मजबूत करती है।*
- *मानव व्यक्तित्व का निर्माण करती है।*
- *नैतिकता का विकास करती है।*

www.ugcnet.w

शिक्षा के सन्दर्भ में संस्कृति की भूमिका

- शिक्षा के प्रत्यय का निम्ारण्
- शिक्षा के उददेश्यों का निर्धारण
- पाठयक्रम का निर्धारण
- संस्कृति के अनुरूप शिक्षण विधियो का निर्माण

लोकतन्त्र

अब्राहम लिंकन के अनुसार - लोकतन्त्र जनता का जनता के दवारा एवं जनता के लिए बनायी गयी शासन व्यवस्था है।

शैक्षिक समाजशास्त्र के जनक - जार्ज पैने

जनतन्त्र जनता की सरकार है।– अरस्तू

लोकतन्त्र के सिद्धान्त

समानता | स्वतन्त्रता | भ्रातत्व | न्याय

www.ugcnet.wapka.mobi

समाजीकरण एवं बालक

समाजीकरण् करने वाले तत्व

- परिवार
- पास पड़ोस
- विदयालय
- खेल समूह
- धर्म
- जाति
- समाज

सामाजिक स्तरीकरण

सामाजिक स्तरीकरण लोगों की योग्यता कार्य गुण् आदि के आधार पर उच्च से निम्न की ओर विभाजन है। यह एक आवश्यक प्रक्रिया है।

सामाजिक स्तरीकरण के आधार

पद

धर्म

जन्म

आयु

लिंग

व्यवसाय

निवास

www.egcnet.wapka.mobi

सामाजिक गतिशीलता

सामाजिक गतिशीलता से तात्पर्य व्यक्ति की सामाजिक स्थिति मे परिवर्तन है।

यह दो प्रकार की होती है।

समतल Horizontal

उदग्र vertical

समतल गतिशीलता में व्यक्ति की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन पूर्ववत ही रहता है।

उदग्र गतिशीलता में पद स्थिती प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है।

विशेषताएं

- *सर्वव्यापी व सार्वभौमिक*
- *शाश्वत*
- *गति असमान*
- *स्वरूप जटिल*
- *भविष्यवाणी नही की जा सकती*

www.ugcnet.wapka.mobi

संवैधानिक प्रावधान

अनुच्छेद १४- विधि के समक्ष समता और विधियों का समान संरक्षण इसका अर्थ है कि राज्य सभी व्यक्तियों के लिए एक समान कानून बनायेगा तथा उन पर एक समान लागू करेगा।

अनुच्छेद १५- धर्म मूल वंश जाति नस्ल लिंग तथा जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव नही इनके आधार पर राज्य नागरिकों के किसी भी क्षेत्र में भेदभाव नही करेगा।

अनुच्छेद १६- राज्य के अधीन किसी पद पर नियुक्ति से समबन्धित विषयों में नागरिकों के लिए अवसर की समानता होगी।

अनुच्छेद१७- अस्पृश्यता की समाप्ति

अनुच्छेद२३- मानव के दुर्व्यापार और बाल श्रम का प्रतिषेध

अनुच्छेद २१-(१)- ६ से १४ बर्ष तक के बच्चों को नि:शुल्क शिक्षा व अनिवार्य शिक्षा

www.ugcnet.wapka.mobi

अनुच्छेद ४६- अनुसूचित जातियों अनुसूचित जनजातियों और अन्य दुर्बल वर्गों के शिक्षा और अर्थ समबन्धी हितो के लिए राज्य प्रयास करेगा।

अनुच्छेद ४७- पोषाहार स्तर और जीवन स्तर को उचां करने तथा लोक स्वास्थ्य का सुधार करने का राज्य प्रयास करेगा।

www.ugcnet.wapka.mobi

आधुनिकीकरण

औदयोगीकरण के साथ आने वाले सभी संरचनात्मक और सांस्कृतिक परिवर्तनों को आधुनिकीकरण कहते हैं। -Linndsay and Beach

आधुनिकीकरण के मानदण्ड

- औदयोगीकरण
- साम्प्रदायिकता एकता
- आधुनिक शिक्षा
- उच्च संचार व्यवस्था
- मूल्यों में लचीला

www.ugcnet.wapka.mobi

शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार

अधिगम

अन्तर्दृष्टि का सिद्धान्त या सूझ का सिद्धान्त

Gestalt theory, Insight theory

गेस्टाल्टवाद पूर्णाकार समग्रता जर्मन शब्द

वर्दिमर कोहलर कोफका लेविन दवारा

www.ugcnet.aapka.mobi

सिद्धान्त की विशेषताएं

1 इसमे व्यकति समस्या का पूर्ण रूप से अवलोकन करता है।

2 यान्त्रिक क्रियाओं की अपेक्षा उददेश्य पूर्ण व चेतना बद्ध प्रयास पर बल दिया।

3 समस्या का समाधान अचानक व्यक्ति के मस्तिष्क मे आता है।

4 प्रयास व त्रुटि व अनुबन्धन द्वारा सीखने को नही माना।

5 अधिगम हमेशा उददेश्य पूर्ण खोजपरक एवं सृजनात्मक होता है।

6 सूझ के लिए समस्यातमक परिस्थिती आवश्यक है।

7 पूर्व अनुभव सहायक।

8 सूझ के लिए अभ्यास की आवश्यकता नही।

9 इस प्रकार के अधिगम का दूसरी स्थिति मे transfere हो सकता है।

प्रयोग

इन्होने अपना प्रयोग एक चिम्पेन्जी पर किया उसको एक पिंजरे में बन्द किया और छत से केला लटका दिया तथा एक लकड़ी का बक्सा रख दिया। सुल्तान ने उछल कर केले को पाने का प्रयास किया परन्तु वह असफल रहा। वह कोने में बैठ गया और पूरी परिस्थिति का सही से अवलोकन किया तभी उसके मस्तिष्क में एक विचार सूझा उसने बक्से को लटकते हुए केले के नीचे रखा ओर केला प्राप्त कर लिया

2 दूसरे प्रयोग में केले को और उचां कर दिया तथा दो बक्से रख दिये। सल्तान ने दोनो बक्सों को रख कर केला प्राप्त कर लिया।

3- तीसरे प्रयोग मे केला और अधिक उचा किया तथा छड़ी का प्रयोग करके केला प्राप्त किया।

4- दो आपस में जुडने वाली छडी का प्रयोग करके केला प्राप्त किया।

www.ugcnetwapka.mobi

अन्तर्दृष्टि को प्रभावित करने वाले कारक

- *प्रयास और त्रुटि*
- *प्रत्यक्षीकरण*
- *बुद्धि*
- *अधिगम*

www.ugcnet.wapka.mobi

Thorndike's connectionism or

Trial or error learning

थार्नडाइक का संयोजनवाद अथवा प्रयास एवं त्रुटि विधि

इन्होने मुर्गी चूहों और बिल्लियों पर प्रयोग किए

प्रयोग

इन्होने बिल्ली को पिंजडे मे बन्द किया उसमे एक दरवाजा था जो लीवर के ठीक प्रकार से दबने पर खुलता था पिंजडे के बाहर भोजन रख दिया

भोजन को प्राप्त करने के लिए बिल्ली ने बहुत सारी अनुक्रियाएं Trial and error की एवं संयोगवश् सफलता मिल गयी

दूसरी बार भी बिल्ली ने बहुत सारी प्रतिक्रियाएं की परन्तु इस बार पहले की अपेक्षा कम समय लगा।

www.ugcnet.wapka.mobi

एक ऐसा समय आया कि बिल्ली एक ही प्रयास मे दरवाजा खोलना सीख गयी ।

सीखने की क्रिया के सोपान

चालक Drive - भूख

लक्ष्य - भोजन

लक्ष्य प्राप्ति में बाधा

उल्टे सीधे प्रयत्न

संयोगवश सफलता

सही प्रयत्न का चुनाव

विशेषताएं

अधिगम यांत्रिक है न कि सूझपूर्ण

सभी स्तनधारी एक तरह से ही सीखते है।

अधिगम सही अनुक्रिया के कारण होता है।

www.ugcnet.wapka.mobi

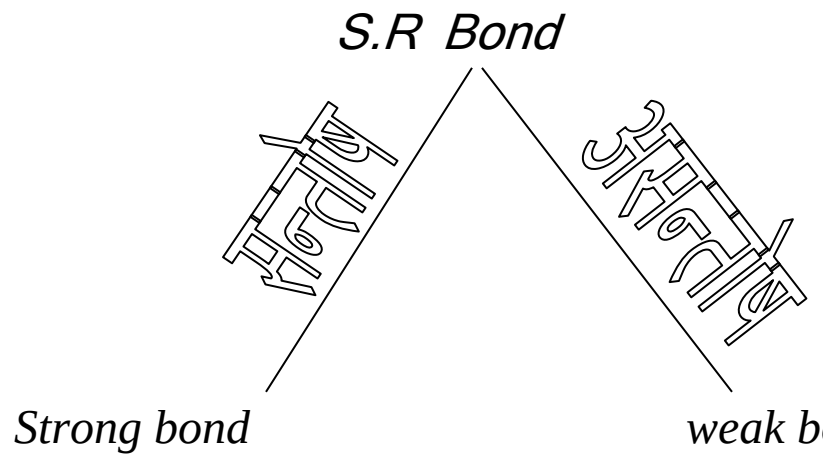

थार्नडाइक के सीखने के नियम

- तत्परता का नियम

कार्य को सीखने के लिए उत्कृष्ट होना।

- प्रभाव का नियम

अधिगम के बाद यदि सन्तोष होता है तो बालक जल्दी सीखेगा

- अभ्यास का नियम - कार्य को बार बार करना।

उप नियम

उपयोग का नियम

अनुपयोग का नियम

www.ugcnet.wapka.mobi

गौढ़ नियम

- बहुअनुक्रिया का नियम law of multiple responses - अभ्यास व त्रुटि द्वारा अधिगम
- मनोवृत्ति का नियम law of attitude
- समानता का नियम
- आंशिक क्रिया का नियम
- तत्वों की प्रबलता का नियम

www.ugcnet.wapka.mobi

Pavlov's classical conditioning theory

पावलव का शास्त्रीय अनुबन्धन सिद्धान्त

S r theory (stimulus-response)

Type S theory

Cs – conditional stimulus अस्वाभाविक उददीपन

Ucs – unconditional stimulus स्वाभाविक उददीपन

Ucr – unconditional response स्वाभाविक अनुक्रिया

CS – conditional response अस्वाभाविक अनुक्रिया

www.wapka.mo

प्रयोग

इन्होने एक भूखे कुत्ते को प्रयोग वाली मेज से बांध दिया। पहले भोजन दिया जिससे कुत्ते के मुह में लार आयी उसके बाद घंटी बजाने के साथ भोजन प्रस्तुत किया इससे कुत्ते के मुह मे लार आयी यह प्रयोग कइ बार दोहराया

UCS -UCR

भोजन - लार

उसके बाद केवल घंटी बजायी

CS -CR

घंटी - लार

अन्त मे केवल घंटी बजाने पर ही कुत्ते के मुह से लार टपकने लगी।

इस प्रकार उददीपन और अनुक्रिया में अनुबन्धन हो जाता है।

www.ugcnet.wapka.mobi

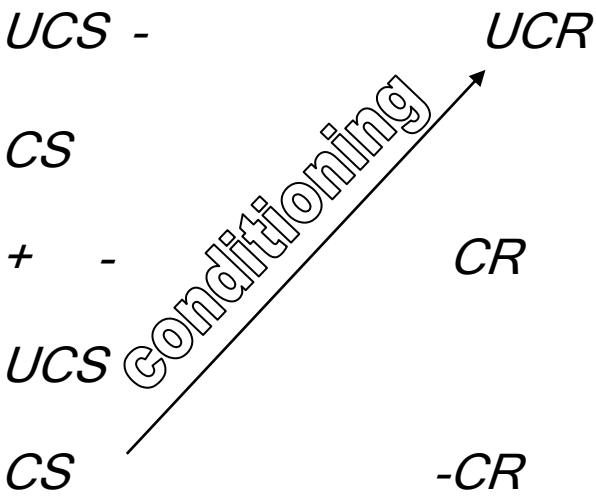

सिद्धान्त

--उददीपन का समयान्त पहले cs उसके ०.५ सेकेन्ड के बाद ucs देना चाहिए

२ उददीपन का सामान्यीकरण - मिलते जुलते सभी उददीपनों के प्रति समान अनुक्रिया

३ उददीपन विभेदीकरण

www.ugcnet.wapka.mobi

४ विलोपन - यदि cs+ucs की क्रिया को बार बार नही करेंगे तो अनुबन्धन का विलोपन हो जायेगा।

५ बाह्य व्यवधान - जैसे शोर आदि के होने पर प्रतिक्रिया में कमी आती है।

शैक्षिक निहितार्थ

अच्छी आदतों का विकास

बुरी आदतों के छुटकारे में सहायक

www.ugcnet.wapka.mobi

स्किनर का क्रिया प्रसूत सिद्धान्त

Skinner's Operant conditioning theory

Skinner -American psychologist

इन्होने दो प्रकार के व्यवहार बताये

Respodent behavior- ऐसी अनुक्रिया जो किसी उददीपक के द्वारा होती है।

भोजन देखकर लार का आना

Operant behavior जो अनुक्रिया बिना किसी उददीपन के होती है।

हाथ पैर चलाना

www.ugcnet.vapka.mobi

इस सिद्धान्त के आधार पर Sydney L pressey ने शिक्षण मशीन का निर्माण किया।

स्किनर ने operant behavior को सीखने का आधार माना।

- *इनके अनुसार उददीपन को पहले प्रस्तुत नही करना चाहिए*
- *पहले अधिगमकर्ता को अनुक्रिया करने देना चाहिए।*
- *यदि अनुक्रिया ठीक है तो उचित पुनर्बलन देना चाहिए।*
- *इन्होने पुनर्बलन को महत्वपूर्ण माना है।*

पुनर्बलन के प्रकार

Positive reinforcement *- - ऐसा पुनर्बलन जो अनुक्रिया की सम्भावना को बढ़ाता है।*

पुरस्कार सम्मान

Negative reinforcement *-ऐसा पुनर्बलन जो अनुक्रिया की सम्भावना को कम करता है।*

www.ugcnet.wapka.mobi

निंदा

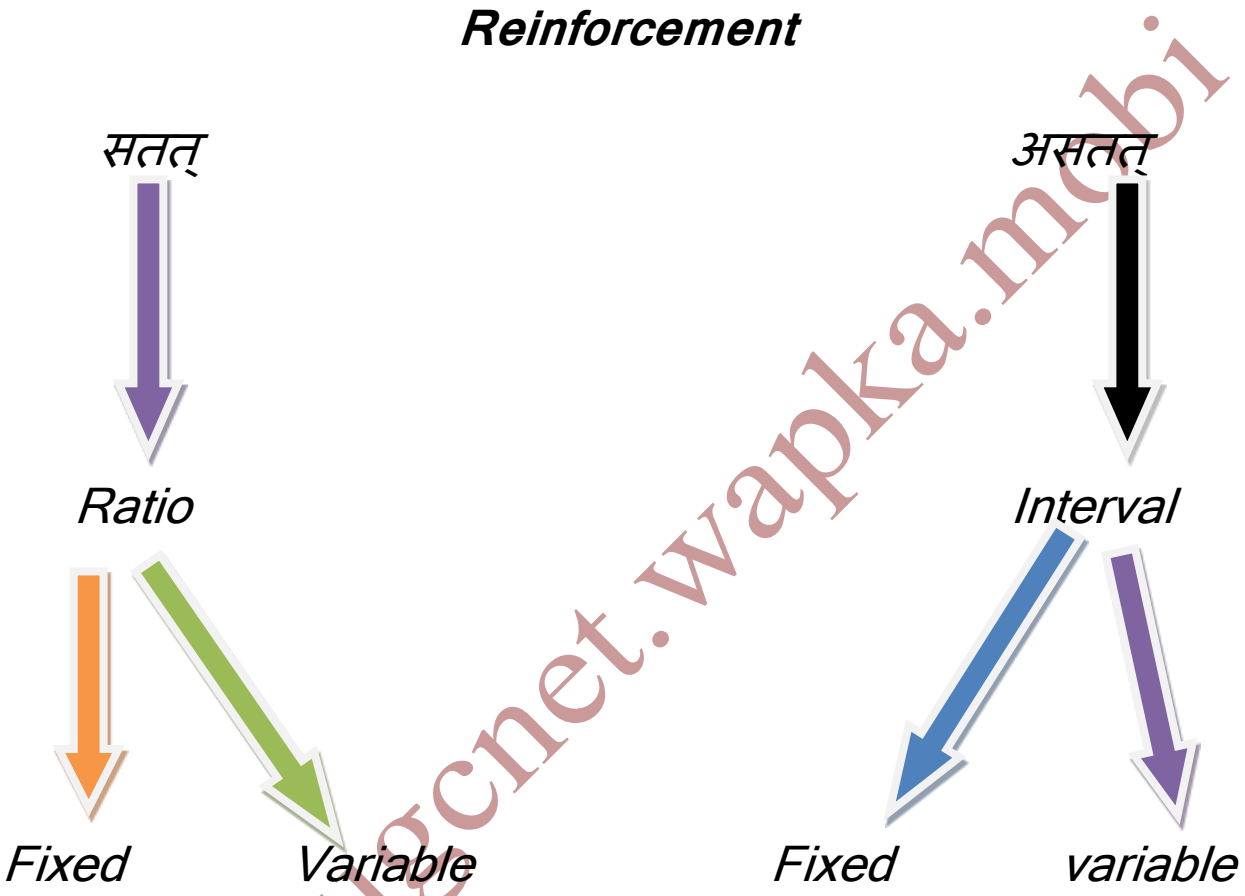

www.ugcnet.wapka.mobi

प्रयोग

कबूतर और चूहे पर

कबूतर को एक बॉक्स में रखा इसे स्किनर बॉक्स के नाम से जाना जाता है।

स्किनर ने यह लक्ष्य रखा कि कबूतर दाहिनी ओर घूमकर एक पूरा चक्कर लगाकर एक निश्चित स्थान पर चोंच मारना सीख जाये। जब कबूतर ने स्वयं दाहिनी ओर घूमकर चोंच मारी तो उसे अनाज का दाना प्राप्त हुआ। इस दाने द्वारा कबूतर को पुनर्बलन प्राप्त हुआ फिर उसने दाहिनी ओर चोंच मारी और दाना प्राप्त किया इस प्रकार उसने दाहिनी ओर घूमकर चोंच मारने के दवारा दाना प्राप्त करना सीख लिया।

www.ugcnet.wapka.mobi

पावलव के classical conditioning और स्किनर के operant conditioning में अन्तर

Pavlov classical conditioning skinner operant conditioning

- *S type* *R type*
- *CS से CR* *स्वभाविक अनुक्रिया पर पुनर्बलन*
- *अधिगमकर्ता की*

  भूमिका निष्क्रिय *सक्रिय*
- *अनुक्रिया करने के लिए*

  उददीपन की प्रतीक्षा *उददीपन*

  का होना जरूरी नही
- *व्यवहार का आरम्भ*

  वातावरण दवारा *अधिगमकर्ता स्वयं*

  व्यवहार आरम्भ

  करता है ।

www.ugcnet.wapka.mobi

- *अधिगमकर्ता स्वतन्त्र नही* *स्वतन्त्र*
- *पुनर्बलन पहले* *बाद में*

www.ugcnet.wapka.mobi

मैसलो का मानवतावादी अधिगम सिद्धान्त

(Maslow's humanistic theory of learning)

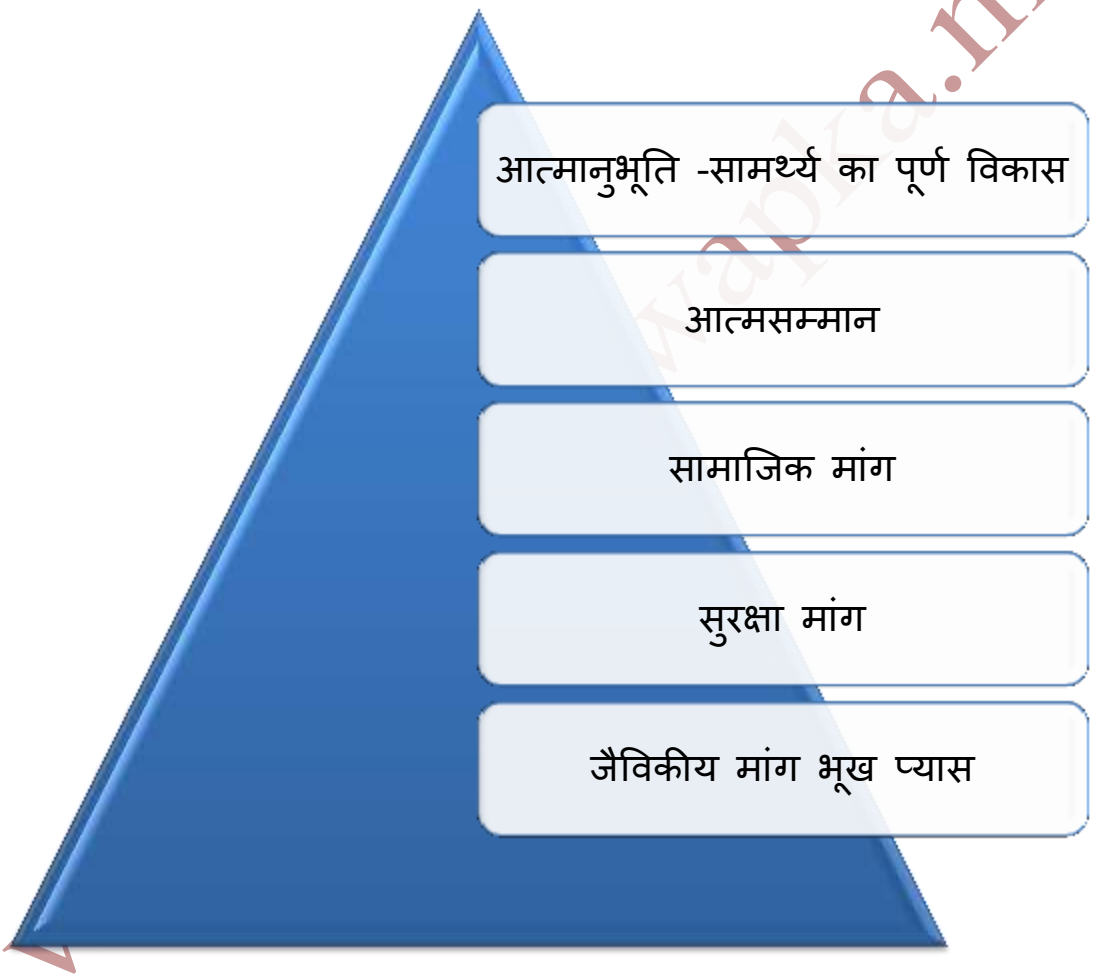

www.rapra.mobi

Gagne theory

Hierarchy

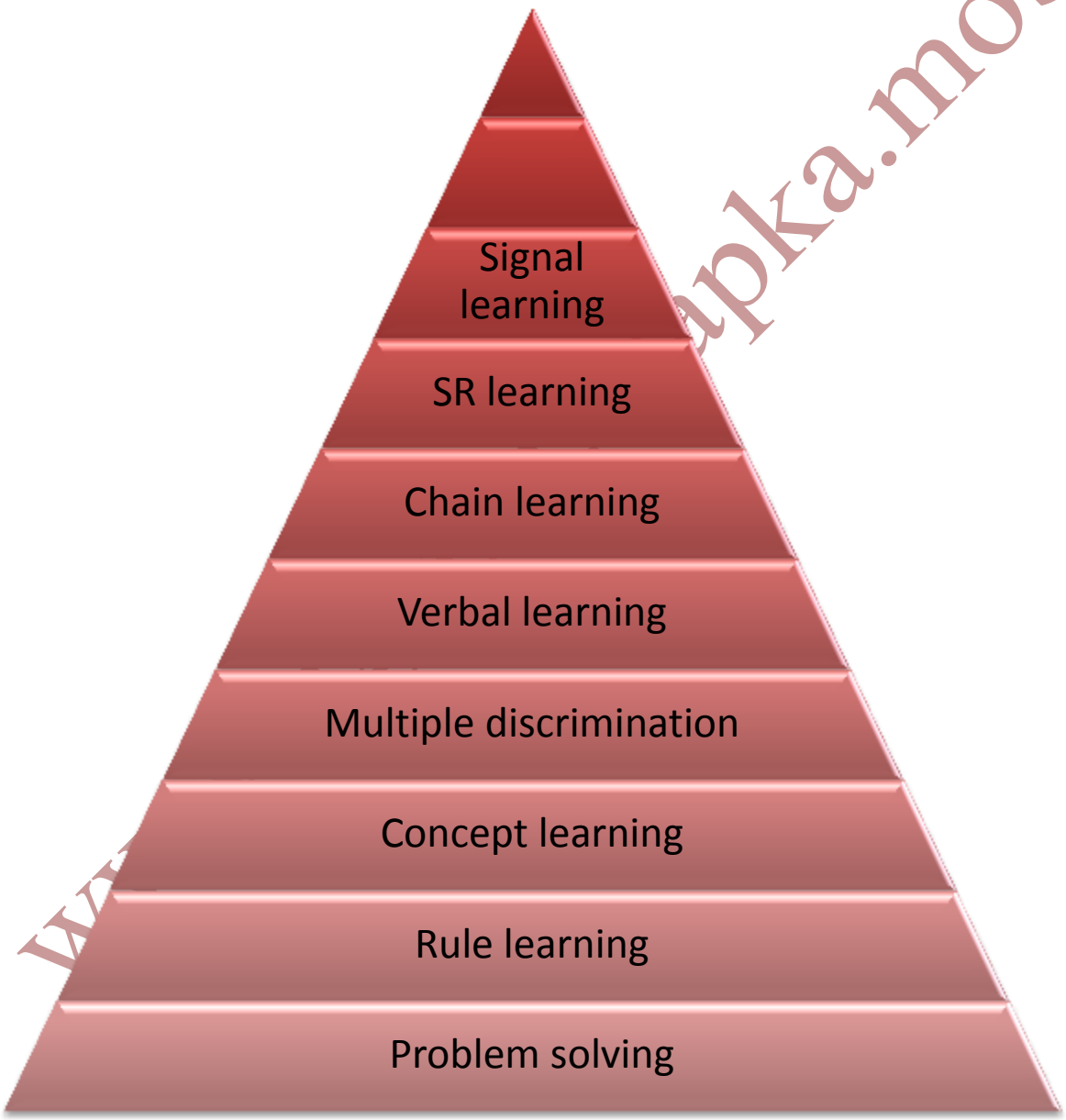

apka.mobi

गुथरी का समीपता अनुबन्धन सिद्धान्त

Guthrie's contiguous theory

ये अमेरिकन व्यवहारवादी थे।

इस सिद्धान्त के अनुसार उददीपक तथा अनुक्रिया के बीच अनुबन्धन पुनर्बलन के द्वारा नही बल्कि यह उददीपक व अनुक्रिया के बीच समीपता के आधार पर होता है।

इसलिए इसे उददीपक अनुक्रिया समीपता सिद्धान्त कहते हैं।

इनके अनुसार सीखने के लिए कइ प्रयासों की जरूरत नही होती व्यक्ति एक ही प्रयास में सीख जाता है। इसे इन्होने इकहारा प्रयास सीखना भी कहा।

जैसे पेन्सिल पकड़ना

परन्तु जटिल क्रियाओं में अभ्यास की जरूरत होती है।

जैसे साइकिल चलाना।

www.upcnt.wapka.mobi

प्रयोग

बिल्ली को एक पहेली बॉक्स में बन्द किया जिसके बीच में एक पोल लगा था। इस पोल पर बिल्ली के किसी भी अंग का स्पर्श होने पर दरवाजा खुलता था।

इन्होनें ८०० फोटो लिए।

बिल्ली ने उस अन्तिम अनुक्रिया को सीख लिया जिससे बह पहली बार बाहर आयी थी।

जैसे बिल्ली ने पहली बार अपने दांए पंजे से पोल को स्पर्श किया तो दूसरी बार भी उसी अनुक्रिया को दोहराया।

Principle of theory

१ समीपता का सिद्धान्त - उददीपन और अनुक्रिया के बीच समीपता होने के कारण अनुबन्धन होता है।

२- ऐकल प्रयास का सिद्धान्त - उददीपन तथा अनुक्रिया के बीच सम्बन्ध प्रथम प्रयास में अधिक होता है।

इन्होनें पावलव एवं थार्नडाइक का विरोध किया।

www.ugcnet.wapka.mobi

३ Principle of last response- किसी परिस्थिति में पुन: रखने पर वह पूर्व परिस्थिति में की गयी अन्तिम अनुक्रिया को दोहराता है।

४ Role of reinforcement- आवश्यक नही परन्तू सीखी हुई अनुक्रिया के विलोपन से बचने के लिए आवश्यक

५ Role of punishment- स्वीकार किया कष्ट के लिए नही बल्कि व्यवहार परिवर्तन के लिए।

Transfer of learning- समरूप तत्वों को महत्व देना।

परिस्थिति में जितनी अधिक समानता होगी उतना अधिक स्थानान्तरण होगा।

बुरी आदतों के रोकथाम के लिए तीन विधियां

- देहली विधि
- थकान विधि
- असेगत विधि

www.ugcnet.wapka.mobi

Carl Roger's theory of experiential learning

कार्ल रोजर्स का अनुभवजन्य सिद्धान्त

अमेरिकी वैज्ञानिक थे।

अधिगम की मूल प्रकृति क्या है इसका पता लगाने के लिए रोजर्स ने अधिगम को दो प्रकारों में बांटा

Cognitive learning- संज्ञानात्मक अधिगम

Experiential learning- अनुभवजन्य अधिगम

संज्ञानात्मक अधिगम - जब तक इसे उपयोग में न लाया जाये निरर्थक होता है। इसका उददेश्य ज्ञान की प्राप्ति मात्र है।

शब्द ज्ञान ऐतिहासिक तथ्य आदि इसके मध्य आते हैं।

अनुभवजन्य अधिगम - यह व्यक्ति प्रगति और कल्याण से सम्बन्धित है। इसमें व्यक्ति की रूचि पाई जाती है।

इसके लिए व्यक्ति द्वारा पहल की जाती है।

www.ugcnet.wapka.mobi

Bandura's model theory

or

Social learning theory

व्यक्ति अपने वातावरण को देखकर उसका अनुकरण करता है।

तथा उसके अनुसार अपने व्यवहार में परिवर्तन लाता है।

steps

Observation- अवलोकन करता है।

Mental image - इमेज बनाता है।

Action- उसे अपनी क्रिया में लाता है।

Repetition of action- सीखी हुइ क्रिया को बार बार दोहराता है।

www.ugcnet.wapka.mobi

वॉटसन का अधिगम सिद्धान्त

इन्होने अपने ११ बर्ष के बच्चे अलबर्ट पर प्रयोग किया। उसे खरगोश दिया गया जैसे ही बच्चे ने इसे छुआ इसी के साथ एक डरावनी ध्वनी पैदा की गयी। इस क्रिया को बार बार दोहराया गया। इस तरह से वह खरगोश से डरने लगा।

बाद में आवाज के न होने पर भी बच्चा खरगोश से डरने लगा।

दो नियम

- आवृत्ति का नियम
- नवीनता का नियम

www.ugcnet.wapka.mobi

हल का प्रबलन सिद्धान्त

Hull drive reduction theory

Or

Hypothetical deductive theory

Or

Need reduction theory

Or

Biological theory

Or

Goal gradient theory

हल का सिद्धान्त

(s.r) अनुकूलन सिद्धान्त है।

www.ugcnet.wapka.mobi

प्रयोग

इन्होने एक भूखे चूहे को एक पिंजडे में रखा जो एक दूसरे पिंजडे से जुडा हुआ था। जब बिजली प्रवाहित की जाती थी तो चूहा उछलकर दूसरे पिंजडे में चला जाता था। बिजली से कुछ सेकेंड पहले एक घंटी बजा दी जाती थी कुछ समय बाद चूहा घंटी की आवाज पर ही दूसरे खाने में उछलकर जाने लगा।

विशेषताएं

व्यवहार का मुख्य कारण आवश्यकता है - भूख

आवश्यकता में कमी होने पर पुनर्बलन प्राप्त होता है। तथा प्राणी व्यवहार सीख लेता है।

आवश्यकता - भोजन

चालक - भूख प्रढ़ोद

आवश्यकता-चालक भूख -व्यवहार- यदि चालक भूख मे कमी होगी तो व्यवहार सीखेगा अन्यथा नही

www.ugcnet.wapka.mobi

पुनर्बलन दो प्रकार के

प्राथमिक - मूलभूत आवश्यकताओं के लिए जैसे भूख

दतीयक - प्रतिष्ठा

www.ugcnet.wapka.mobi

टोलमैन का सिद्धान्त

Sign learning theory

Sign gestalt theory

Expectancy theory

Purposive theory

प्राणी संज्ञानात्मक योग्यताओं के सहारे सम्पूर्ण मानसिक परिस्थति का एक मानसिक मानचित्र बना लेता है। जिसे संज्ञानात्मक मानचित्र कहते है।

प्रत्तय

१ सीखने का अर्थ - प्राणी सीखने की प्रक्रिया के दोरान उददीपकों के बीच परस्पर अर्थयुक्त सम्बन्धों को स्थापित करना सीखता है।

www.ugcnet.wapka.mobi

२ एकीक्रत बनाम आण्विक - टोलमैन ने एकीक्रत व्यवहार पर महत्व दिया। यह उददेश्यपूर्ण होता है।

३ स्थान बनाम अनुक्रिया- प्राणी निश्चित उददीपकों के प्रति निश्चित अनुक्रिया नही सीखता बल्कि लक्ष्य प्राप्ति के लिए उन स्थानों की खोज करता है जहां वस्तुएं होती हैं।

४ मध्यवर्ती चर स्वीकार किया जैसे वंशानुक्रम अनुभव प्रत्याशा

५- पुरस्कार प्रत्याशा - अधिगम में पुरस्कार देने पर व्यवहार दृढ़ हो जाता है।

६ Latent लुप्त अधिगम - अधिगम होने पर यदि पुरस्कार नही मिलता है तो प्राणी इसका प्रदर्शन नही करता है।

www.ugcnet.wapka.mobi

लेविन का क्षेत्र सिद्धान्त

Cognitive field theory

Vector psychology

Topological psychology

Life space-

Field का वह अंश जहां प्राणी विद्मान रहता है अथवा मनोवैज्ञानिक रूप में रहता है और उसमें अपने प्रत्यक्षण् और विचार विन्दु समाहित करता है। यह प्राणी की सम्पूर्ण मनोवैज्ञानिक वास्तविकता है।

Topology- रेखाचित्र आकृतियों की सापेक्षित स्थितियों का ज्ञान

Field- प्राणी तथा उसके प्रत्ययों व अपेक्षाओं से बने मनोवैज्ञानिक जगत से है। इसमे भौतिक और सामाजिक वातावरण समाहित होता है।

Vector- यह निश्चित दिशा में बल को बताता है।

www.ugcnet.wapka.mobi

Valance

Positive - प्राणी वस्तु को पाना चाहता है।

Negative- प्राणी वस्तु से दूर जाना चाहता है।

समस्या आने पर प्राणी क्रियाशील होता है और जीवन स्पेस का पुनर्गठन करता है जिससे उसमे नइ सूझ आती है और वह समस्या समाधान करता है।

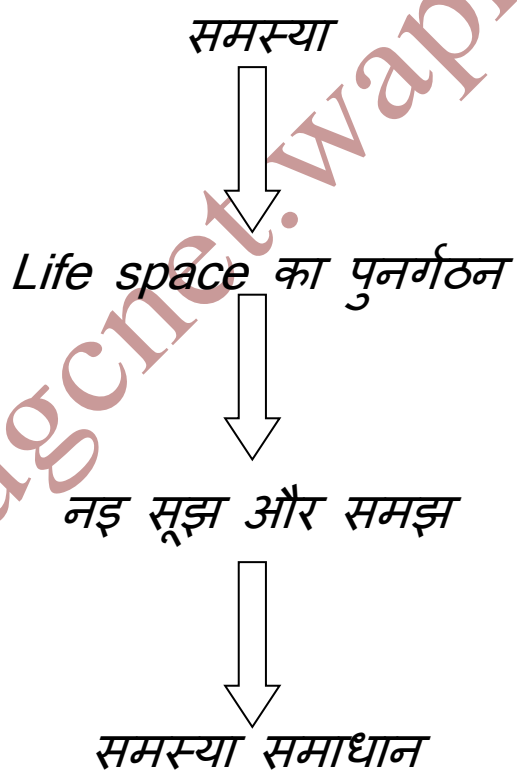

www.ugcnet.wapka.mobi

व्यक्तित्व मूल्यांकन

Personality evaluation

विधियां

जीवन की वास्तविक परिस्थितियों में व्यवहार

- *अवलोकन Observation*
- *परिस्थिति परीक्षण Situation test*
- *स्वयं अपने बारे में सोचना*
- *आत्मकथा autobiography*
- *प्रश्नावली और व्यक्तित्व परीसूचि*
- *साक्षात्कार*

दूसरे व्यक्तियों द्वारा

- *जीवन कथा Biography*
- *व्यक्ति इतिहास Case history*
- *रेटिंग स्केल*
- *समाजमीति तकनीकि Sociometric technique*

www.ugcnet.wapka.mobi

प्रक्षेपी तकनीकी

Projective technique

व्यक्ति प्रति एक चीज के बारे में अपना मत रखता है। इसी मत को जानने के लिए प्रक्षेपी तकनीकी का प्रयोग किया जाता है। कुछ अनिश्चित चित्र धब्बे आदि को दिखाकर व्यक्ति के व्यक्तित्व का परीक्षण किया जाता है।

www.ugcnet.wapka.mobi

रोर्शा स्याही धब्बा परीक्षण

हरमन रोर्शा द्वारा

स्विस मनोवैज्ञानिक

परीक्षण सामग्री

१० कार्ड जिन पर स्याही के अनिश्चित धब्बे बने होते हैं।

जिनका कोई निश्चित अर्थ नही होता।

५ कार्ड पर काली आकृति

२ पर काली तथा लाल

३ पर कइ रंगों की आकृति बनी होती होती है।

परीक्षा लेने का ढंग

व्यक्ति को एक एक करके कार्ड दिखाये जाते हैं। और पूछा जाता है कि उसे इसमे क्या दिख रहा है। वह इसके बारे में क्या सोचता है। व्यक्ति जो उसके बारे में सोचता है वह परीक्षणकर्ता को बताता है। इस प्रकार परीक्षणकर्ता उसके व्यक्तित्व का मूल्यांकन करता है।

www.ugcnet.wapka.mobi

अंकन के आधार

- *विषय वस्तु Content*
- *मौलिकता Originality*
- *निर्धारक तत्व Determinants*

www.ugcnet.wapka.mobi

Thematic apperception test

or

T-A-T

मूरे व मोरगन के द्वारा

- *कुल ३० चित्र*
- *१० स्त्रियों की परीक्षा के लिए*
- *१० पुरूषों की परीक्षा के लिए*
- *शेष १० दोनो की परीक्षा के लिए*

इस प्रकार इसमें २० कार्डों का प्रयोग किया जाता है। चित्र अनिश्चित होते हैं।इसमे प्रयोज्य को एक कहानी लिखनी होती है।

चित्र मे क्या हो रहा है?

क्यों हो रहा है?

आगे क्या हो सकता है?

www.ugcnet.wapka.mobi

इस प्रकार कहानी के आधार पर व्यक्ति के व्यक्तित्व का मूलयांकन किया जाता है।

व्याख्या के आधार

- Hero of story
- Theme of story
- Style of story
- Content
- Emphasis
- Sexual feeling
- End

www.ugcnet.wapka.mobi

बालकों का अंतर्बोध परीक्षण

Children apperception test (C-A-T)

लियोपोलड ब्लैक ३-१० साल के बालकों के लिए

१० कार्ड जिन पर जानवरों के चित्र बने होते हैं। जिनको जीवन की विभिन्न परिस्थिति में चित्रित किया गया है। बच्चों से कहा जाता है कि इसको देखकर कोइ कहानी बनाओ

इसके आधार पर उनके व्यक्तित्व का परीक्षण किया जाता है।

www.ugcnet.vapka.m

सृजनात्मकता

परम्परा से हटकर नये ढंग से चिन्तन करने एवं कार्य करने की योग्यता सृजनात्मकता है।

- प्रवाह
- विविधता
- मौलिकता
- विस्तारण
- बुद्धि

बुद्धि अमूर्त चिन्तन की योग्यता है। - टरमन

बुद्धि सीखने की योग्यता है। -वकिंधम

www.ugcnet.wapka.mobi

बुद्धि के सिद्धान्त

एक कारक सिद्धान्त - बिने टरमन

इस सिद्धान्त के अनुसार बुद्धि को एक इकाइ के रूप मे माना है।

जो व्यक्ति की सभी क्रियाओं के लिए जिम्मेदार है।

द्वि कारक सिद्धान्त

स्पीयरमैन ने प्रतिपरदन किया

इनके अनुसार प्रत्येक क्रया में एक सामान्य 'g' general कारक होता है।

तथा एक विशिष्ट 's' specific होता है जो सभी क्रियाओं में सम्मिलित होता है।

www.ugcnet.wapka.mobi

बहुकारक सिद्धान्त

थार्नडाइक

इन्होने बुद्धि को कइ तत्वो का समूह माना है।

समुह कारक सिद्धान्त -थर्स्टन

www.ugcnet.wapka.mobi

गिलफोर्ड का बुद्धि संरचना सिद्धान्त

इनके अनुसार किसी भी बोद्धिक कार्य के लिए तीन आयामों की आवश्यता होती है।

- Operation संक्रिया
- Content विषय वस्तु
- Product उत्पाद

इन तीनों आयामों से गुजरकर बौद्धिक क्रिया समपन्न होती है।

इन तीनों आयामों को १५० तत्वों मे विभक्त किया गया है।

५*५*६- १५०

www.ugcnet.wapka.mobi

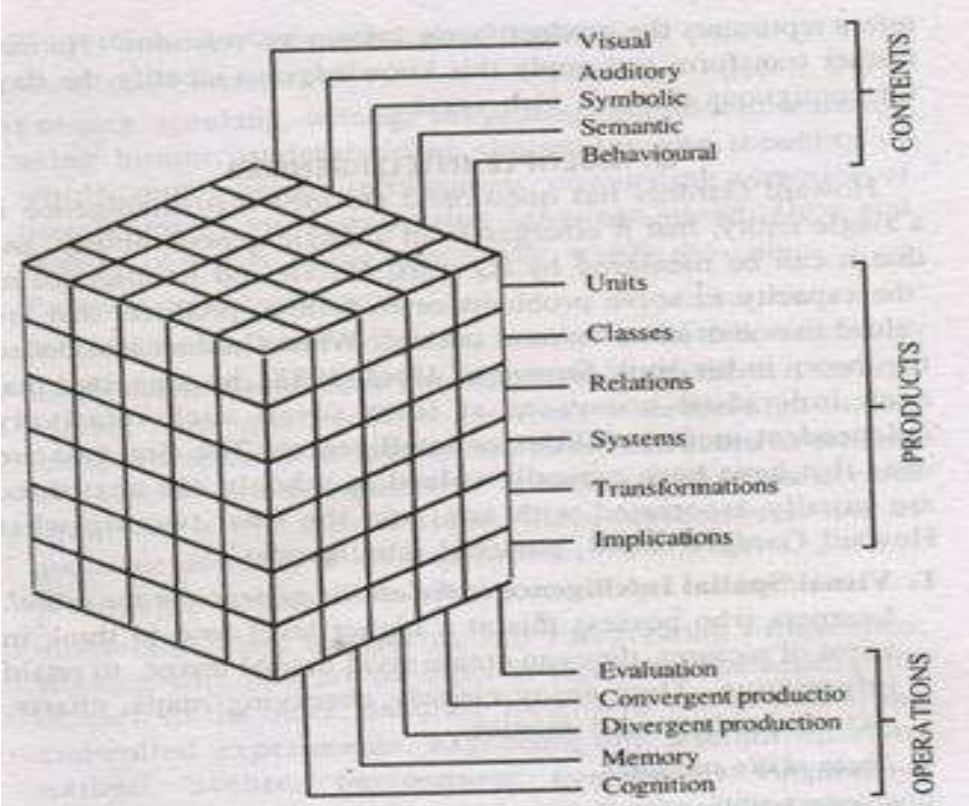

Guilford's model of the structure of intellect

www.ugcnet.mobi

बुद्धि का वर्गीकरण

टर्मन के अनुसार

१४० से उपर	प्रतिभाशाली
१२०-१४०	प्रखर
११०-१२०	अधिक औसत से
९०-११०	सामान्य
७५-९०	अल्पबुद्धि
५०-७५	मूर्ख
२५-५०	मूढ़
२५ से कम	जड़

www.ugcnet.wapka.mobi

बुद्धि लब्धि- $\frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} * १००$

शैक्षिक लब्धि- $\frac{\text{शैक्षिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} * १००$

उपलब्धि लब्धि- $\frac{\text{शैक्षिक आयु}}{\text{मानसिक आयु}} * १००$

www.ugcnet.wapka.mobi

व्यक्तित्व

Personality शब्द persona से बना है जो लैटिन शब्द है। जिसका अर्थ है मुखौटा

व्यक्तित्व व्यक्ति के व्यवहार का समग्र गुण है। - Woodworth

व्यक्तित्व वह है जिसके द्वारा हम भविष्यवाणी कर सकते हैं के कोइ व्यक्ति किस परिस्थिति में क्या करेगा।- R-B- Cattel

www.ugcnet.wapka.mobi

अल्पोर्ट का विशेषक उपागम

Allport's Trait Approach

अलपोर्ट ने तीन प्रकार के गुणों को वताया है।

- *प्रधान विशेषक cardinal*
- *केन्द्रिय विशेषक central*
- *गौढ़ विशेषक secondary*

प्रधान विशेषक *-व्यक्तित्व निर्माण मे सबसे अधिक भूमिका निभाते हैं। इनकी संख्या एक या दो होती है।*

www.ugcnet.wapka.mobi

केन्द्रिय विशेषक

ये अत्यधिक सक्रिय होते हैं और व्यवहार को नियन्त्रित करते हैं।

आत्मविश्वास दयालुता सामाजिकता

गौढ़ विशेषक *- इनके होने न होने से विशेष प्रभाव नही पड़ता ।*

कैटल ने १८००० शील गुणों को खोजा था।

www.ugcnet.wapka.mobi

फ्रायड का मनोविश्लेषणवादी सिद्धान्त

Psychoanalytical theory of Freaud

मानव व्यवहार में मूल प्रवृत्तियां कार्य करती हैं।

इनके अलावा दो और

Life instincts ***जीवन मूल प्रवृत्ति***

Death instincts ***मृत्यु मूल प्रवृत्ति***

ये दो प्रवृत्तियां मनुष्य का व्यवहार नियन्त्रित करती हैं।

इन्होने सबसे प्रभावशाली काम भावना को माना

इनके अनुसार यौन आवश्यकताओं के द्वारा ही मानव का व्यवहार नियन्त्रित होता है।

www.ugcnet.wapka.mobi

मानव व्यवहार में मन की भूमिका को माना

- ***चेतन मन***
- ***अवचेतन मन***
- ***अचेतन मन***

अचेतन मन *के द्वारा व्यक्तित्व का सबसे अधिक निर्धारण होता है।*

९/१० व्यवहार अचेतन मन द्वारा नियन्त्रित।

इदम *Id- अनैतिक भावना तत्काल सुख*

अहम *Ego- वास्तविकता से समबन्धित*

परा अहम *Super ego-सामाजिक आदर्श*

www.ugcnet.wapka.mobi

पियाजे का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त

स्विस मनोवैज्ञानिक थे।

संज्ञान शब्द से तात्पर्य ऐसी प्रक्रिया से है जिसमें संवेदना प्रत्क्षण् प्रतिमा धारण प्रत्यावन चिन्तन तर्क आदि का हमारी मानसिक क्रिया में सम्मिलित होना है।

Important elements of Piagetian theory

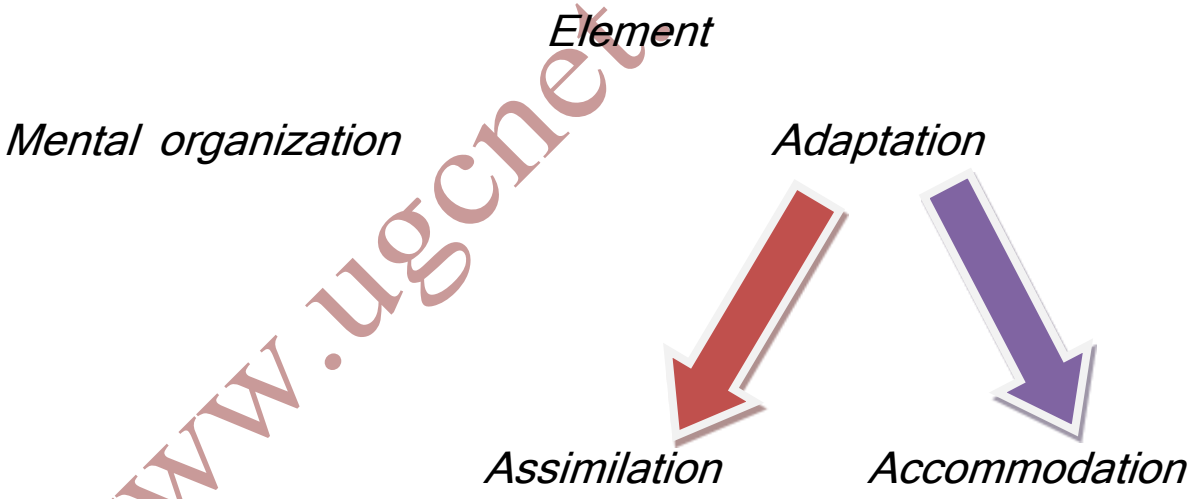

Mental organization मानसिक संगठन- इससे तात्पर्य प्रत्यक्षीकरण तथा बौद्धिक सूचनाओं को एक सार्थक क्रम में व्यवस्थित करने से है।

www.ugcnet.wapka.mobi

Adaptation अनुकूलन- *जब बालक अपनी पूर्व बौद्धिक संरचनाओं के अनुसार समायोजन नही कर पाता तब वह अनुकूलन सीखता है।*

यह दो प्रकार का होता है।

Assimilation आत्मसातकरण *- इससे तात्पर्य नवीन अनुभवों को पहले से विदमान बौद्धिक संरचनाओं मे व्यवस्थित करना है।*

Accommodation समाविष्टिकरण *- नवीन अनुभवों के आधार पर पुरानी बौद्धिक संरचनाओं में सुधार करना है।*

संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाएं

Sensory motor stage *संवेदीगामक अवस्था- 0-2 वर्ष*

Pre operational stage *२-7 भाषा का विकास*

Concrete operational stage *7-11 वस्तु विभेदन*

Formal operational stage *11-15 समप्रत्यों का विकास*

तर्क कल्पना अमूर्त चिन्तन

www.ugcnet.vapka.mobi

ब्रूनर का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त

ये अमेरिकन मनोवैज्ञानिक थे।

इन्होनें दो प्रश्नों का उत्तर ढूढने का प्रयास किया।

१ बच्चा किस प्रकार अपनी अनुभूति को मानसिक रूप से बताते हैं।

२ शैश्वावस्था व वाल्यावस्था में बालकों का मानसिक चिन्तन कैसे होता है।

Stages

१ Enactive- ०-१८ माह अनुभूति क्रिया द्वारा व्यक्त करता है। जैसे हाथ पैर चलाना वस्तु पकड़ना

2 Iconic दृश्य प्रतिमा - २ साल तक

बालक अपने मन में कुछ दृश्य प्रतिमाएं बनाकर अपनी अनुभूति व्यक्त करता है।

Symbolic संकेतिक - यह अवस्था ७ साल की उम्र में आती है।भाषा के द्वारा अभिव्यक्ति व तर्क

www.ugcnet.wapka.mobi

विकास के किसी भी पड़ाव पर कोइ भी वस्तु सिखायी जा सकती है- ब्रूनर

www.ugcnet.wapka.mobi

अनुसंधान

अनुसंधान एक ऐसी व्यवस्था है जिसके द्वारा नवीन तथ्यों की खोज की जाती है। तथा प्राचीन तथ्यों की पुन: व्याख्या की जाती है। - पी वी यंग

नवीन ज्ञान की प्प्ति के व्यवस्थित प्रयास को अनुसंधान कहते हैं। - रैडमैन तथा मोरी

www.ugcnet.wapka.mobi

मौलिक अनुसंधान(Fundamental research)

इस प्रकार के अनुसंधान में शिक्षा समबन्धी आधारभूत सिद्धान्तों नियमों तथा तथ्यों की खोज की जाती है।

विशेषताएं

व्यवस्थित अनुसंधान एवं विशेषज्ञों का क्षेत्र

प्राचीन अधिगम शिक्षण सिद्धान्तो की नवीनतम विवेचना

www.ugcnet.wapka.mobi

Applied research अनुप्रयुक्त अनुसंधान

इसका सम्बन्ध व्यवहारिक समस्याओं के वर्तमानकालिक समाधान से होता है।

मौलिक अनुसंधान के माध्यम से खोजे गये सिद्धान्तों व नियमों की विवेचना वर्तमान संदर्भ में किसी क्षेत्र व समस्या को केन्द्र मानकर की जाती है।

इसमें वास्तविक परिस्थितियों मे नियमों की सार्थकता व उपयुक्तता का अध्ययन किया जाता है।

विशेषताएं

१- नियमों व सिद्धान्तों की दैनिक कार्य क्षेत्र की सम्स्याओं का समाधान।

२- वर्तमान हेतू नीति निर्धारण प्रक्रिया

३- मौलिक अनुसंधान पर आधारित।

www.ugcnet.wapka.mobi

Action research क्रियात्मक शोध

व्यक्ति या संस्था अपने उददेश्यों को प्रभावी ढंग से प्राप्त करने के लिए यह शोध करती है।

जैसे - कक्षा शिक्षण मे सुधार

अध्यापन मे सुधार

इसमें कक्षा शिक्षण से सम्बन्धित शोध होते हैं।

शोध शिक्षक या प्राध्यापक कर सकता है।

www.ugcnet.wapka.mobi

एतिहासिक अनुसंधान (Historical research)

इसका सम्बन्ध अतीत के विभिन्न अवशेषों घटनाओं व तथ्यों के आधार पर वर्तमान में विषय वस्तु या प्रत्यय को समझने का प्रयास किया जाता है।

पद

- *समस्या चयन*
- *उददेश्यों का निर्माण*
- *प्रदत्त संकलन*
- *आकड़ों का विश्लेषण*
- *परिणाम*

प्रदत्त

प्राथमिक स्त्रोत*- इसका सम्बन्ध प्रदत्तो के मूल और मौलिक साधनों से होता है।*

www.ugcnet.wapka.mobi

जैसे प्रशासनिक अभिलेख

डायरी राजपत्र मानचित्र मुद्राएं घोषणा पत्र आदि।

गौढ़ स्त्रोत *- गौढ़ स्त्रोत में व्यक्ति वहां उस घटना का प्रत्यक्षदर्शी या लेखक नही होता है।*

आलोचना

बाह्य आलोचना *- प्रदत्त सामग्री का स्त्रोत असली है या नकली बाहय आलोचना से पता लगता है।*

जैसे क्या स्त्रोत उसी काल का है जिसका बताया गया है उसी के द्वारा लिखा हुआ है जिसका नाम लिखा हुआ है।

आन्तरिक आलोचना *- स्त्रोत की विषय वस्तु की सत्यता की जांच जो स्त्रोत में वर्णित है क्या वह सही है।*

www.ugcnet.wap.mobi

प्रयोगात्मक अनुसंधान

Experimental research

एक ऐसी विधी जिसमे दो या दो से अधिक चरों के प्रभाव का अध्ययन किया जाता है। स्वतन्त्र चर का प्रभाव आश्रित चर पर देखा जाता है।

विशेषताएं

- *ऐक चर की अवधारणा*
- *प्रत्यक्ष अवलोकन*
- *कारण प्रभाव का अध्ययन*

पद

- *शीर्षक*
- *सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन*
- *समस्या कथन*
- *परिकल्पना की रचना*
- *चरों का स्पष्टीकरण प्रयोग अभिकल्प का चयन*

www.ugcnet.wapka.mobi

- *आकडों का संकलन*
- *आंकडों का विश्लेषण परिणाम*
- *व्याख्या व सामान्यीकरण*

चरों को नियन्त्रित करने की तकनीकी

- *निरसन Elimination*
- *स्थैर्य Constancy*
- *याद्दच्छिकरण Randomization*
- *समेलन Matching*
- *सन्तुलन Balance*
- *प्रति सन्तुलन Counter balance*

www.ugcnet.wapka.mobi

मौलिक और क्रयात्मक अनुसंधान में अन्तर

मौलिक अनुसंधान	*क्रियात्मक अनुसंधान*
नये सत्य तथ्य सिद्धान्तों की खोज	*कक्षा तथा विदयालय की कार्य प्रणाली में सुधार*
विस्तृत समस्या	*कक्षा व विदयालय से सम्बनधित*
मूल्यांकन विशेषज्ञों के द्वारा	*स्वयं के द्वार*

www.ugcnet.wapka.mobi

Normal probability curve

व्यवहार में अनेक घटनाएं होती हैं जिनका परिणाम सतत होता है जैसे किसी परीक्षण में छात्रों के प्राप्तांक का या व्यक्तियों के भार या उचाइ का वितरण सतत होता है। ऐसी घटनाओं के सम्बन्ध में अनुमान लगाने के लिए समान्य प्रायक्ता वक्र का प्रयोग किया जाता है।

www.ugcnet.wapka.mobi

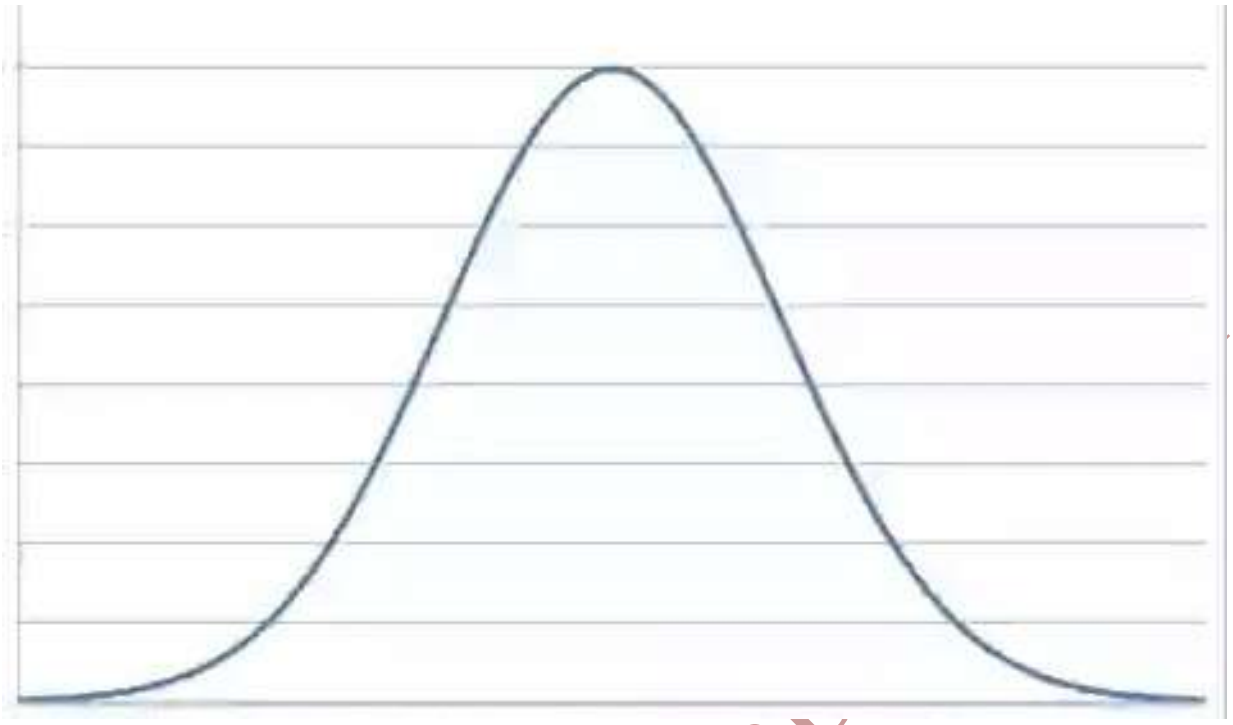

विशेषताएं

१ यह ***Bell shape*** *में होता है।*

२- यह ***unimodel*** *होता है।*

३- इसके केन्द्रिय प्रवृत्ति के तीनों मान ***mean median mode*** *समान होते हैं और वक्र के मध्य में स्थित होते हैं।*

४ -NPC के symmetrical होने के कारण इसका विषमता गुणांक coefficient of skewness का मान शून्य होता है।

www.ugcnet.wap

Sk=0

५- यह न तो बहुत चपटा होता है ओर न बहुत नुकीला इसका वक्रता गुणांक ०-२६३ होता है।

६- यह दोनों दिशाओं में अनन्त पर स्पर्श करता है।

इसक mean 0 और sd 1 होता है।

NPC की विषमता

कारण

१-Skewness

२-Kurtosis

Skewness- *इसका अर्थ है Lack of symmetry जब प्राप्तांक मध्य बिन्दु से दोनों तरफ समान मात्रा में वितरित नही होते हैं तो Mean median mode एक बिन्दु पर न होकर अलग-अलग होते हैं।*

Type

Positive skewness*- इसमे अधिकतर आकड़े वायीं तरफ होते हैं।*

Negative skewness*- इसमें अधिकतर आकड़े दायीं तरफ होते हैं।*

www.ugcnet.wapka.mobi

Kurtosis- *जब वक्र आवश्यकता से अधिक उंचा या चपटा होता है।*

प्रकार

१-Lapto kurtosis

२-Plato kurtosis

३-Meso kurtosis

१- ***Lapto kurtosis-*** *जब वक्र अधिक नुकीला होता है।*

Ku= 0.263 से कम है तो लेप्टो

2- Plato kurtosis*- जब वक्र में चपटापन अधिक होता है*

Ku=0.263 से अधिक है तो plato

3 Meso kurtosis*- जब वक्र सामान्य होता है।*

Ku= 0.263 तो सामान्य

www.ugcnet.wapka.mobi

Survey method

Survey शब्द की उत्पत्ति

Sur -अर्थात उपर से ओर

veior - देखना

सर्वेक्षण शब्द का अर्थ वर्तमान में क्या रूप है इससे सम्बन्धित है।

तीन प्रश्न

१ वर्तमान स्थिति क्या है

२ अनुसंधानकर्ता क्या चाहता है

३ अनुसंधानकर्ता अपने उददेश्यों की प्रप्ति कैसे कर सकता है

विशेषताएं

एक समय में बहुत सारे लोगों के बारे में आंकडे एकत्र करना

Steps

- *Selection of problem*
- *Formation of objectives*
- *Hypothesis*

www.ugcnet.wapka.mobi

- *Sampling*
- *Tool*
- *Data collection*
- *Data analysis*
- *Result*
- *Report*

www.ugcnet.wapka.mobi

Case study एकल अध्ययन

पी वी यंग - किसी व्यक्ति या समूह का गहन अध्ययन ही उसके जीवन का अध्ययन है इसको एकल अध्ययन भी कहते हैं।

एक समय में केवल एक इकाइ का गहराइ से अध्ययन करना एकल अध्ययन कहलाता है। यह इकाइ व्यक्ति संस्था समूह नीति परिवार आदि हो सकता है।

इसमें Research design नही होता।

न्यादर्श नही होता।

www.ugcnet.wapka.mobi

विकासात्मक अध्ययन

इसका उददेश्य यह जानना होता है कि किसी निश्चित समय के समयान्तराल में किसी व्यक्ति संस्था और सामाजिक प्रक्रिया के विकास में कितना और कैसा परिवर्तन आया। परिवर्तनों के कारण क्या हैं।

यह दो प्रकार की होती है।

Cross sectional- *यह विकास का क्रमबद्ध अध्ययन करता है। इसका स्वरूप Horizontal होता है। इसमे विकास की प्रगति और विकास के सिद्धान्त की खोज की जाती है। इसका सम्बन्ध मुख्यत वर्तमान से है। :*

Longitudinal *-इसमें विकास का लम्बवत अध्ययन किया जाता है। भ इसका सम्बन्ध अतीत वर्तमान औरविष्य से होता है।*

www.ugcnet.wapka.mobi

जनसंख्या

जनसंख्या इकाइयों की एक निश्चित संख्या होती है जिसके बारे में अध्ययनगत निष्कर्ष लागू होते हैं।

प्रकार

सम जनसंख्या- *जब इकाइयों की विशेषताओं में पर्याप्त समानता होती है तो उसे सम जनसंख्या कहते हैं।*

विषम जनसंख्या- *जब इकाइयों की विशेषताओं में पर्याप्त भिन्नता पाइ जाती है तो उसे विषम जनसंख्या कहते हैं।*

www.ugcnet.wapka.mobi

न्यादर्श(Sample)

जनसंख्या से चयनित इकाइयों का वह अंश जिसमें जनसंख्या की समस्त इकाइयों का स्पष्ट प्रतिबिम्ब होता है।

जनसंख्या से अध्ययन हेतु चुनी हुइ कुछ इकाइयों को न्यादर्श कहते हैं।

Sampling

वह तकनीकी जिसकी सहायता से न्यादर्श चुना जाता है। उसे प्रतिचयन कहते Sampling हैं।

Sampling techniques

१ ***Probability (Random) Sampling- सम्भाव्य***

इसमें सभी इकाइयों के चयन की समान सम्भावना रहती है।

www.ugcnet.wapka.mobi

२ Non-probability (non-random) sampling-

असम्भाव्य इस विधि में शोधकर्ता को इकाइयों के चयन में स्वतन्त्रता होती है। चयन का आधार सुविधा निर्णय अवसर हो सकता है।

Random sampling

१-Simple ransom

२ Systematic random

३-Stratify

4-Multistage

5-Cluster

Non-probability

१-Incidental

२ Purposive

३-Quota sampling

www.ugcnet.wapka.mobi

Observation अवलोकन

Participatory- *अवलोकनकर्ता उस जीवन में रहता है या भाग लेता है जिसका वह अध्ययन कर रहा होता है।*

Non-participatory- *अवलोकनकर्ता अध्ययन किए जाने वाले समूह के साथ रहता है परन्तु उनकी क्रियाओं में भाग नही लेता है।*

वैधता

वैधता से तात्पर्य है कि कोइ परीक्षण कितनी शुद्धता और प्रभावकता से परीक्षक को उन सामान्य और विशिष्ट उददेश्यों का मापन करता है जिनके लिए उनकी रचना हुइ है।

विश्वसनीयता

कोइ परीक्षण किसी समूह पर द्वारा मिया जाये तथा पहले की तरह परिणामों में समानता आये तो वह उसकी विश्वसनीयता कहलाती है।

www.ugcnet.wapka.mobi

चर

करलिंगर- चर वह गुण है जो विभिन्न मात्राओं में उपस्थित होता है। चर वह गुण है जो परिवर्तित होता है।

प्रकार

***१ स्वतन्त्र चर**- शोधकर्ता जिस कारक के प्रभाव का अध्ययन करना चाहता है वह स्वतन्त्र चर कहलाता है।*

***२- आश्रित चर** -जिस कारक पर प्रभाव देखा जाता है उसे आश्रित चर कहते हैं।*

***३ हस्तक्षेप चर-** ये वे चर होते हैं जिनकी मध्यस्थता से शोध पर प्रभाव पड़त है।*

***४- नियन्त्रित चर** - जिन चरों को नियन्त्रित करके उनका प्रभाव अन्य चरो पर देखा जाता है उन्हे नियन्त्रित चर कहते हैं।*

***५- समाकलित चर** - ये अज्ञात चर होते हैं जिनका प्रभाव शोध पर पडता है।*

www.ugcnet.wabka.mobi

समाजमीति

चैपलिन *- समाजमीति वह प्रविधि है जिसके द्वारा हम समूह के सदस्यों के बीच आकर्षण व अस्वीकृति मे सम्बन्धों का चित्रण किया जाता है।*

इस विधि के द्वारा समूह में व्यक्ति के सम्बन्धों का पता लगाया जात है। समूह में सबसे अधिक पसन्द किया जाना वाला एवं नापसंद किया जाने वाले का पता लगाया जाता है।

परिकल्पना

परिकल्पना समस्या का सम्भावित हल होत है।

कर्लिंगर *- परिकल्पना दो या दो से अधिक चरों के मध्य समबन्ध ज्ञात करने का कथन है।*

प्रकार

दिशायुक्त परिकल्पना *- इसमें किसी सम्भावित समाधान हो अपेक्षित दिशा में लिखा जाता है।*

जैसे छात्रों की बुद्धिलब्धि छात्राओं की अपेक्षा अधिक है।

दिशाविहीन परिकल्पना *- इसको शून्य परिकल्पना भी कहते हैं। इस प्रकार की परिकल्पना में चरों के मध्य कोइ अन्तर नही दर्शाया जाता । इसको नकारात्मक रूप में बनाया जाता है।*

यादृच्छिक न्यादर्श- जनसंख्या विषम हो और दूर तक फैली हो

सउद्देश्य न्यादर्श - जब ढांचा उपलब्ध ना हो

बहुस्तरीय न्यादर्श -जनसंख्या समरूप और ढांचा उपलब्ध हो।

किशोरावस्था तूफानी और तनावपूर्ण अवस्था है।- ***जार्ज स्टेनले हाल***

वह ज्ञान जो हमें मोक्ष प्राप्त करने में मदद करता है सबसे उदार अभिव्यक्ति है।- ***उपनिषद***

शिक्षित नारियों के बिना शिक्षित लोग नही हो सकते- संयुक्त राष्ट्र संघ का प्रस्ताव १९६७

UGC-1956

NCERT- 1961

NCTE- 1973

NAAC- 1986

www.ugcnet.wapka.mobi

महत्वपूर्ण प्रश्न

संसार का प्रत्येक व्यक्ति जन्मजात दार्शनिक है। - शापन होवर

दर्शन शिक्षा के साध्यों को निर्धारित करने से सम्बन्धित है।- स्पार्टा

उदार शिक्षा प्रणाली का प्रतिपादन - रैबेल

कमेनियस ने 170 ग्रन्थों की रचना की

निरौपचारिक शिक्षा से तात्पर्य दूरस्थ शिक्षा से है।

पेस्टालोजी ने वालक की तुलना बीज से की है।

फादर आफ मार्डन एजुकेशन कमेनियस को कहा जाता है।

शिक्षा हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। पेस्टालोजी

गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में टाल्सटाय फार्म की स्थापना की

मनुष्य को विचारों में सत्य कर्म में सत्य भाषण में सत्य होना चाहिय - गांधीजी

एजुकेशन आफ मैन फ्रोबेल ने लिखी है।

www.ugcnet.wapka.mobi

प्रयोजनवाद मानव केन्द्रित दर्शन है।

मनुष्य मानवता का मूल्य है। कार्ल मार्क्स

पालिटिक्स पावर एण्ड पार्टीज मानवेन्द्र राय ने लिखी है।

बेशिक शिक्षा के अध्यापन की समय सारणी 5.30 घण्टे की है।

सच्ची शिक्षा को मशीन से बना सूत नही होना चाहिए - अरविन्द

जनतन्त्र जनता की सरकार है- अरस्तू

आदर्शवाद को सर्वप्रथम प्लेटो ने तार्किक रूप में प्रस्तुत किया।

बहुतत्ववादी दर्शन का प्रवर्तक लाइवनीज है।

व्यक्तिवादी आदर्शवाद का प्रर्वतक बर्कले है।

तर्क बुद्धिवाद का प्रवर्तक काण्ट है।

सत्यम शिवम सुन्दरम का प्रतिपादन प्लेटो ने किया।

आत्मानुभूति आदर्शवाद का उददेश्य है।

ज्ञान की प्राप्ति में संवेदना समझ और तर्क को काण्ट ने महत्वपुर्ण माना है।

www.ugcnet.wapka.mobi

आदर्शवाद का सबसे महत्वपूर्ण योगदान उददेश्यों के निर्धारण में है।

आदर्शवाद ने अध्यापक को सर्वोच्च माना है।

शिक्षा का उददेश्य बालकों को दैवीय गुणों से सुशोभित करना है- हीगल

अनेकता में एकता- फ्रोबेल

शिक्षा का एकमात्र उददेश्य नैतिकता का विकास है- हरबर्ट

डेमोक्रेटिस को प्रक्रतिवाद का प्रथम विचारक माना जाता है।

नकारात्मक शिक्षा का प्रत्यय रूसो ने दिया

पूर्ण जीवन की तैयारी स्पेन्सर

शिक्षक का स्थान पर्दे के पीछे है प्रकृतिवाद

बच्चों को कभी दण्ड नही दिया जाना चाहिय रूसो

प्रकृतिवाद छात्र स्वतन्त्रता पर सबसे अधिक बल देता है।

बालकेन्द्रित शिक्षा प्रकृतिवाद

प्रयोजनवादी विचारधारा अमेरिका में विकसित हुइ

www.ugcnet.wapka.mobi

विलियम जेम्स ने प्रयोजनवाद को अनुभववाद के नाम से पुकारा

अर्थक्रियावाद - वही क्रिया सत्य है जिसका अर्थ हो

व्यवहारवाद - व्यवहारिक जीवन ही सत्य है

अनुभववाद - समस्त ज्ञान अनुभव में संचित होता है।

प्रमाण्यवाद - फल ही क्रिया का प्रमाण है।

करणवाद- मस्तिष्क समायोजन का साधन है1

प्रयोगवाद- प्रयोग ज्ञान प्राप्त करने की विधि

पुनर्रचनावाद- अनुभवों की निरन्तर पुनर्रचना होती है।

प्रयोगवादी प्रयोजनवाद के प्रणेता जान डीवी

प्रयोजनवाद के अनुसार सबसे बड़ा सत्य परिवर्तन है।

शिक्षा अनुभवों की पुनर्रनिर्माण करने वाली प्रकृिया है जान डीवी

शिक्षा जीवन की तैयारी नही बल्कि स्वयं जीवन है- जान डीवी

www.ugcnet.wapka.mobi

शिक्षा के उददेश्य नही होते उददेश्य तो व्यक्तियों के होते हैं। जान डीवी

योजना विधि के प्रणेता किलपेट्रिक हैं।

सीखने की क्रिया उददेश्य पूर्ण होनी चाहिये -रास

यथार्थवाद के जनक- अरस्तु

समाज का अनुसरण करो- यथार्थवाद

शिक्षा का उददेश्य प्रकृति पर विजय प्राप्त करना है। बेकन

बालक का मस्तिष्क कोरी स्लेट है। जान लाक

इश्वर मृत है हमने इश्वर की मृत्यु कर दी है। नीत्से

सामूहिक जीवन व्यक्तित्व के विकास में बाधक है। सार्त्र

संकट का दर्शन अस्तित्ववाद को कहा जाता है।

कलमा - इश्वर की एकता मे विश्वास

नमाज- इश्वर की प्रार्थना

रोजा - उपवास

www.ugcnet.vapka.mobi

जकात- दान

हज- तीर्थयात्रा

एक व्यक्ति को दान में सोना देने की अपेक्षा शिक्षा देना ज्यादा अच्छा है। इस्लाम दर्शन

मकतब में पढना लिखना सिखाया जाता है।

बिस्मिल्लाह खानी 4 वर्ष 4 माह 4 दिन

कार्ल मार्क्स मार्क्सवाद के प्रवर्तक हैं।

भारतीय दर्शनों में सबसे प्राचीन दर्शन सांख्य दर्शन है।

सांख्य दर्शन के अनुसार सृष्टि की उत्पत्ति दो तत्वों प्रकृति और पुरूष से हूइ है।

सांख्य दर्शन में 25 तत्व वताये गये हैं।

अहंकार - राजसी

बुद्धि - सात्विक

तन्मात्राएं - तामसिक

www.ugcnet.wapka.mobi

सांख्य के अनुसार मन बुद्धि अहंकार का विकास वाल्यावस्था में होता है।

न्याय दर्शन के प्रणेता गौतम हैं।

असतोमा सदगमय तमसो मा ज्योर्तिगमय ऋगवेद से लिया गया है।

वेदान्त के प्रणेता शंकराचार्य हैं।

जैन साहित्य को आगम कहा जाता है।

जैन धर्म के 24 वें तीर्थकार महावीर स्वामी थे।

जैन शब्द जिन से बना है जिसका अर्थ होता है विजेता

जैन धर्म के त्रिरत्न

सम्यक श्रद्धा

सम्यक ज्ञान

सम्यक आचरण

महात्मा बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश सारनाथ में दिया।

पबज्जा का शाब्दिक अर्थ बाहर जाना है।

www.ugcnet.wapka.mobi

पबज्जा संस्कार के बाद बालक सामेनार कहलाता है।

जैन धर्म अहिंसा पर सर्बाधिक बल देता है।

अरविन्द के दर्शन को सर्वांग योग दर्शन कहा जाता है।

अरविन्द ने पाण्डिचेरी में अन्तर्राष्ट्रिय केन्द्र की स्थापना की

अरविन्द ने वन्देमातरम पत्र का सम्पादन किया

सम्पूर्ण शिक्षा का प्रत्यय अरविन्द ने दिया

रविन्द्रनाथ टैगौर- विश्वबोध दर्शन

1910 में गीतांजली का प्रकाशन किया

रविन्द्रनाथ टैगोर को 1913 में नोबेल पुरस्कार मिला।

रविन्द्रनाथ टैगोर को महात्मागांधी ने गुरूदेव की उपाधी दी।

www.ugcnet.wapka.mobi

अनुसंधान वैधता

इसका संबंध शोध निष्कर्षों से होता है। शोध निषकर्ष कितने सार्थक एवं उपयोगी हैं। इसका अनुमान उसके व्यवहारिक रूप से लगाया जाता है।

*१-**आन्तरिक वैधता-** से तातपर्य उन निष्कर्षो से होता है जिनमें आकडे नियन्त्रित परिस्थिति में प्राप्त किये जाते हैं। प्रयोगात्मक शोधों की आन्तरिक वैधता अधिक होती है। परिस्थितियां जितनी अधिक नियन्त्रित होती हैं आन्तरिक वैधता उतनी अधिक होती है।*

*२-**बाह्य वैधता-** इसका संबंध उन शोध निष्कर्षों से है जिनमें न्यादर्श जनसंख्या का शुद्ध रूप में प्रतिनिधित्व करता है। सर्वेक्षण विधि से प्राप्त निष्कर्षो की बाह्य वैधता अधिक होती है। तथा अन्तरिक वैधता अधिक होती है।*

www.ugcnet.wapka.mobi

प्रजाति वृत्तिक अनुसंधान

यह सांकेतिक अन्त: क्रिया और सूक्ष्म मानव व्यवहार का अध्ययन है।

इसमें सामान्यीकरण को महत्व नही दिया जाता । प्रजातिवृत्त मानवशास्त्र की शाखा है। इसमें विभिन्न समय में प्रजातियों का इतिहास एवं उसके आर्विभाव का अध्ययन किया जाता है।

प्रजातिवृत्त अनुसंधान में व्यक्तियों के व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। एवं व्यकति कैसे अपनी क्रियाओं का प्रत्यक्षीकरण करता है। समुदाय विशेष के लोग कैसा व्यवहार करते हैं एवं क्या सोचते हैं।

इसे स्वाभाविक अनुसंधान या सर्वेक्षण अनुसंधान भी कहते हैं। प्रदत्त संकलन करने के लिए सहभागी विधि का प्रयोग किया जाता है।

विशेषताएं

१- यह गुणात्मक एवं वर्णनात्मक अनुसंधान है।

२-इसमें निष्कर्षों की बाह्य वैधता अधिक होती है।

www.ugcnet.wapka.mobi

३-सम्पूर्ण परिस्थिति को ध्यान में रखकर अध्ययन किया जाता है।

४-इसका संबंध वर्तमान व अतीत से है।

५-इसमें मानव व्यवहार का अध्ययन स्वभाविक परिस्थिति में किया जाता है।

प्रजावृत्तिक अनुसंधान के चरण

१- उददेश्यों का निर्माण

२- शोध प्रारूप का नियोजन

३- प्रदत्त संकलन

४- प्रदत्त विश्लेषण्

५- निष्कर्ष

One tail test = directional

Two tail test = non directional

www.ugcnet.wapka.mobi

केन्द्रिय प्रवृत्ति के मान

केन्द्रिय प्रवृत्ति से तातपर्य उस संख्या से है जिसके चारों ओर समूह के सभी अंक छायें रहते हैं। साधारण भाषा में हम इसे माध्य कहते हैं।

प्रकार

मध्यमान (mean)

मध्यांक (median)

बहुलांक(mode)

मध्यमान- *मध्यमान वह मान है जो दी हुइ राशियों अथवा प्राप्तांकों के योगफल को उन राशियों की संख्या से भाग देने से आती है।*

मध्यांक या माध्यिका- *किसी समूह के पदों को आरोही या अवरोही क्रम में रखने पर मध्य पद का मान मध्यांक है।*

बहुलांक- *बहुलांक बह मान है जो कि समूह के प्राप्ताकों में सबसे अधिक वार आया है।*

www.ugcnet.wapka.mobi

सहसंबंध गुणांक-

गिलफोर्ड- सहसंबंध गुणांक वह अकेली संख्या है जो यह वताता है कि दो वस्तुएं किस सीमा तक एक दूसरे से सहसंबंधित हैं। तथा एक का परिवर्तन दूसरे के परिवर्तन को किस सीमा तक प्रभावित करता है।

प्रकार

१- ***धनात्मक (Positive correlation)-*** *जब एक चर में वृद्धि से दूसरे चर में भी वृद्धि होती है तथा एक चर में कमी होने पर दूसरे में भी कमी होती है तो धनात्मक सहसंबंध होगा।*

२- ***ऋणात्मक सहसंबंध(Negative correlation)-*** *जब एक चर में वृद्धि होने से दूसरे चर में कमी होती है। तथा एक चर में कमी होने से दूसरे में वृद्धि होती है तो ऋणात्मक सहसंबंध होता है*

३- ***शून्य सहसंबंध (Zero correlation)-*** *जब एक चर में वृद्धि या कमी होने से दूसरे पर कोई प्रभाव नही होता तो शून्य सहसंबंध होता है।*

www.ugcnet.wapka.mobi

शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन

मापन के कार्य

१- यह वस्तुओं की श्रेणियों को व्यक्त करती है।

२- यह वस्तुओं को अंक प्रदान करने वाले नियमों को दर्शाती है।

३- यह संख्याओं की श्रेणियों को व्यक्त करती है।

मापन के स्तर

*१-**शाब्दिक स्तर (nominal level)-** यह मापन का सबसे निम्न स्तर है। इसमें वस्तुओं को उनके गुणों के आधार पर अलग अलग समुहों में रख दिया जाता है तथा उन्हें अलग-अलग नाम या संख्या दे दी जाती है।*

*२-**क्रमिक स्तर(Ordinal level)-** इसमें वस्तुओं को उनके किसी गुणों के आधार पर आरोही या अवरोही क्रम में रख दिया जाता है।*

*3 **अन्तराल स्तर (Interval level)-** इसमें दो वर्गों.व्यक्तियों .अथवा वस्तुओं के बीच अन्तर को अंको के माध्यम से दर्शाते हैं।*

www.ugcnet.wapka.mobi

4 **अनुपात स्तर (Ratio level)-** यह मापन का सर्वश्रेष्ठ स्तर है। इसमें उपरोक्त सभी स्तरों की विशेषताएं पायी जाती हैं।

मूल्यांकन

इसमें वस्तु का मूल्य निर्धारित होता है। अर्थात वस्तु अच्छी है या बुरी

गुण दोषों के संबंध में किया गया अवलोकन मूल्यांकन से संबंधित है।

रेमर्स एवं गेज के अनुसार - मूल्यांकन के अन्दर व्यक्ति या समान या दोनों की दृष्टि में जो उत्तम है उसको मानकर चला जाता है।

मूल्यांकन का विषय क्षेत्र

१- शिक्षण उददेश्य

२- अधिगम अनुभव

३- व्यवहार परिवर्तन

www.ugcnet.wapka.mobi

शैक्षिक तकनीकी (Educational technology)

एस. एस कुलकर्णी- तकनीकी तथा विज्ञान के आविष्कारों तथा नियमों का शिक्षा की प्रक्रिया में प्रयोग को ही शैक्षिक तकनीकि कहा जाता है।

मान्यताएं

इसके अनुसार मानव मशीन की तरह कार्य करता है इसलिए मानव व्यवहार को परिवर्तन करने के लिए वैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रयोग किया जा सकता है।

शैक्षिक तकनीकी के उपागम या रूप

१- Hardware approach -(educational technology 1) यह उपागम भौतिक विज्ञान तथा इन्जीनियरिंग के सिद्धान्तों एवं व्यवहारों पर आधारित है। इसमें श्रव्य दृश्य सामग्री का उपयोग होता है।

www.ugcnet.wapka.mobi

२-**Software approach**-इसका आधार मनोविज्ञान है। इसमें मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रयोग किया जाता है। इसे शिक्षण तकनीकी या व्यवहारिक तकनीकी भी कहते हैं।

३-**System approach** शैक्षक तकनीकी तृतीय या प्रणाली विश्लेषण - इसमें शिक्षण एवं अधिगम दोनों सम्मिलित हैं। यह प्रशासन एवं प्रबन्धन से सम्बन्धित है।

शैक्षिक तकनीकी का क्षेत्र

अदा - प्रदा - प्रक्रिया

Input- output- system

शिक्षण के स्तर

स्मृति स्तर- हरबर्ट

बोध स्तर- एच. सी मोरीसन

चिन्तन स्तर- हंट

www.ugcnet.wapka.mobi

सूक्ष्म शिक्षण (Micro teaching)

किसी विशेष शिक्षण को सीखने के लिए जो शिक्षण चक्र आयोजित किया जाता है उसे सूक्ष्म शिक्षण कहा जाता है।

पाठयोजना- सूक्ष्म शिक्षण -आलोचना- पुन: पाठयोजना-पुन: शिक्षण - पुन: आलोचना

सूक्ष्म शिक्षण एक वास्तविक शिक्षण है।

अवधि ५-१० मिनट

५-१० छात्र

शिक्षण कौशल

१- अनुदेशन उददेश्यों को लिखना

२- पाठ की प्रस्तावना

३- प्रश्नों की प्रवाहशीलता

४- अनुशीलन प्रश्न (Probing question)

५- व्याख्या देना(Explaining)

६- दृष्टान्त देना (Illustration)

७- उददीपन परिवर्तन

www.ugcnet.wapka.mobi

८- मौन व अशाब्दिक संकेत

९- पुनर्बलन

१०- श्यामपटट प्रयोग

११- समापन की प्राप्ति

१२- व्यवहार की पहचान व देखभाल

अनुरूपण शिक्षण(Simulated teaching)

सीखने तथा प्रशिक्षण की वह विधि जो अभिनय के माध्यम से योग्यता का विकास करती है।

इसमें छात्रों को तीन प्रकार की भूमिका निभानी पडती है।

शिक्षक

छात्र

निरीक्षक

अनुरूपण शिक्षा के सोपान

१- सैद्धान्तिक ज्ञान प्रदान करना

२- शिक्षण कौशल का निर्धारण

३- कार्यक्रम की रूपरेखा

www.ugcnet.wapka.mobi

४- निरीक्षण विधि का निर्धारण

५- प्रथम अभ्यास तथा पृष्ठपोषण

६- निपुणता प्रदान करना

विशेषताएं

१- क्रत्रिम परिस्थिति में स्वाभाविक कार्य

२- कौशलों में प्रवीणता प्राप्त करने का अवसर

३- छात्राध्यापकों में आत्मविश्वास पैदा करना

अभिक्रमित अनुदेशन

इसका विकास बी. एफ. स्किनर ने १९५४ में हार्बर्ड विश्वविद्यालय की प्रयोगशाला में किया था। यह सक्रिय अनुबन्धन सिद्धान्त पर आधारित है।

सुसन मारकल- अभिक्रमित अधिगम व्यक्तिगत अनुदेशन की विधि है जिसमें छात्र सक्रिय रहकर अपनी गति से सीखता है। और उसे तत्काल ज्ञान मिलता है। और शिक्षक की आवश्यता नही होती है।

www.ugcnet.wapka.mobi

अभिक्रमित अनुदेशन के सिद्धान्त

१- छोटे पदों का सिद्धान्त - पाठयवस्तु को छोटे-छोटे पदों में क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

२- तत्पर अनुक्रिया का सिद्धान्त- छोटे पदों में रिक्त स्थान छोड दिए जाते हैं छात्र अनुक्रिया करता है।

३- तत्कालीन जांच का सिद्धान्त - अनुक्रिया के साथ पुष्टि होती है एवं इससे पुनर्बलन प्राप्त होता है।

४- स्वत: गति का सिद्धान्त - अपनी गति के अपुसार छात्र पदों को पढता एवं सीखता है।

५- छात्र आलेख का सिद्धान्त - जांच करना प्रष्ठपोषण प्रविधियों का प्रयोग

अनुकरणीय विधि	क्रुकशैक	1968	सामाजिक कौशल सामान्य शिक्षक व्यवहार
सूक्ष्म शिक्षण	बुश. डी. ऐलन	1963	शिक्षण कौशल

www.ugcnet.vapka.mobi

प्रशिक्षण समूह	वेदल तथा मैने		शिक्षण समस्याओं के समाधान कौशल
फ्लैन्डर्स अन्त: प्रक्रिया विश्लेषण	नैड ए फ्लैन्डर्स	1963	शाब्दिक अन्त: क्रिया सम्बन्धी कौशल
अभिक्रमित अनुदेशन	बी एफ स्किनर	1954	पाठयवस्तु विश्लेषण कौशल तथा क्रमबद्ध व्यवस्था कौशल

www.ugcnet.wapka.mobi

अभिक्रमित अनुदेशन के प्रकार

१- रेखीय अभिक्रम Linear

२- शाखीय अभिक्रम Branching

३- मैथेटिक्स अभिक्रम Mathetics

१- रेखीय अभिक्रम- इयके व्रचर्तक बी एफ स्किनर हैं। इसमें छात्रों के सामने पाठयसामग्री छोटे छोटे पदों में प्रस्तुत की जाती है। छात्र प्रत्येक पद को पढकर अनुक्रिया करता है। तथा उसको बोधगम्य करता है। यदि वह सही अनुक्रिया करता है तो उसको अगले पद पर स्वयं ले जाया जाता है।

इसमें चार प्रकार के पद होते हैं।

१- प्रस्तावना पद (introductory frames)- इसका कार्य पूर्व व्यवहार को नये व्यवहार से सम्बन्धित करना होता है।

२- शिक्षण पद (teaching frames)- इसका कार्य शिक्षण करना होता है। प्रत्येक पद नया ज्ञान प्रदान करता है।

www.ugcnet.vapka.mobi

३- अभ्यास पद (Practice frames)- जो शिक्षण पद से प्राप्त होता है उसका अभ्यास इन पदों से होता है।

४- परीक्षण पद (Testing Frames)- इसके द्वारा यह ज्ञात किया जाता है कि छात्र ने कितना सीखा है।

शाखीय अभिक्रमित अनुदेशन (Branching programmed instruction)

इसके प्रतिपादक नार्मन ए क्रावडर हैं। इन्होनें स्किनर के अभिक्रमित अनुदेशन की कडी आलोचना की है।

मूल सिद्धान्त

१- छात्रों की गलत अनुक्रकयाएं अधिगम में बाधक नही होती हैं अपितु छात्रों को अध्ययन के लिए निर्देशन प्रदान करती हैं।

२- इसमें प्रश्नों का उददेश्य निदान करना होता है। परीक्षण करना नही ।

३- मानव अधिगम के प्रतिमान को प्रत्यक्ष रूप से सरलता से प्रयोग किया जा सकता है।

www.ugcnet.wapka.mobi

४-इसमे छात्रों को सही अनुक्रिया करने के लिए कोइ अनुबोधक या संकेत प्रयुक्त नही किया जाता है।

अवधारणायें

१- किसी पाठयवस्तु को सम्पूर्ण रूप से प्रस्तुत करने से उसे छात्र सरलता से बोधगम्य कर लेते हैं।

२- छात्रों को अध्ययन के साथ निदान के लिये उपचारात्मक अनुदेशन प्रदान किये जायें तो वे अधिक सीखते हैं।

इसमें दो प्रकार के पृष्ठों का प्रयोग किया जाता है।

ग्रह पृष्ठ(Home page)

त्रुटि पृष्ठ(Error page)

गृह पृष्ठ- इस पृष्ठ पर नवीन प्रत्यय की व्याख्या की जाती है। छात्र इसको पढता है तथा सीखता है। अन्त में बहुनिर्वचन प्रश्न दिया जाता है। जिको छात्र को सही चयन करना होता है। सही उत्तर की पुष्टी होने पर उसे अगले पृष्ठ पर ले जाया जाता है। तथा उसके उत्तर की पुष्टी और अधिक व्याख्या से की जाती है।

www.ugcnet.wapka.mobi

त्रुटि पृष्ठ *- यदि छात्र ग्रह पृष्ठ पर गलत विकल्प का चयन करता है तो त्रुटि पृष्ठ पर ले जाया जाता है।*

शखीय अभिक्रमित अनुदेशन के प्रकार

१- बहुनिर्वचन प्रश्न पर आधारित- Based on multiple choice question

२- रचनात्मक अनुक्रिया प्रश्न पर आधारित (Based on constructive response question) - सूचना के अन्त में प्रश्न होते हैं। परन्तु उत्तर के लिए कोई विकल्प नही होता है। छात्र प्रश्नों का उत्तर स्वयं देता है। तथा उत्तर की जांच भी स्वयं करता है।

३- रचनात्मक निर्वचन प्रश्न पर आधारित - (Based on constructive choice question) छात्रों को प्रश्न का उत्तर लिखना होता है इसके बाद छात्र अनुक्रिया की पुष्टि करता है। जब छात्र अगले पृष्ठ पर जाता है तो उसे उपचारात्मक अनुदेशन दिया जाता है। क्योंकि यहां सही अनुक्रिया के विकल्प दिये जाते हैं।

www.upgnet.vapra.mobi

४- प्रश्न पुंज पर आधारित- (Based on block question)

इसका स्वरूप अपठिव विषय वस्तु के समान होता है।

अवरोह या संयुक्त अनुदेशन (Mathetics & adjunctive programming)

इसका मुख्य लक्ष्य पाठयवस्तु का स्वामित्व प्राप्त करना होता है।

इसका प्रत्यय थामस एफ गिलबर्ट ने दिया है।

मैथेटिक्स के सिद्धान्त

१- श्रंखला का नियम Principle of chain

२- विभेदीकरण का नियम Principle of discrimination

३- सामान्यीकरण का नियम Principle of generalization

श्रृव्य दृश्य सामग्री (Audio visual aids)

प्रकार

१- श्रृव्य सहायक सामग्री (Visual aids)

२- दृश्य सहायक सामग्री (Audio aids)

३- दृश्य श्रृव्य सहायक सामग्री (Audio visual aids)

www.ugcnet.wapka.mobi

प्रक्षेपित और अप्रक्षेपित माध्यम(projective and non-projective media)

प्रक्षेपित माध्यम	*अप्रक्षेपित माध्यम*
स्लाइड तथा फिल्म पटटियां	*बुलेटिन बोर्ड*
चल चित्र	*चाक बोर्ड*
वीडियो टेप	*फ्लेनल बोर्ड*
सिरोत्तर प्रक्षेपक	*ग्राफ*
अपारदर्शी सामग्री	*चार्ट*
रिकार्डिंग	*माडल*
	मानचित्र
	रेखाचित्र

www.ugcnet.wapka.mobi

ग्रामोफोन तथा लिंग्वाफोन(Gramophone and linguaphone)

ग्रामोफोन द्वारा बालकों को भाषण तथा गाने की शिक्षा दी जाती है।

लिंग्वाफोन- *इसके द्वारा छात्रों के उच्चारण सही कराके भाषा की शिक्षा दी जाती है।*

फ्लेनल बोर्ड

Epidiascope- *इसमें पारदर्शियों की आवश्यकता नही होती है पुस्तकों की मुद्रित पाठयवस्तु तथा आक्रतियों को सीधे पर्दो पर प्रक्षेपित किया जाता है। इससे चित्र विस्तार भी कर दिया जाता है इसलिये इसे Opaque Projector भी कहते हैं।*

Slides and film strips- *स्लाइडों के द्वारा सूक्ष्म बातों को पर्दे पर बडा करके दिखाया जाता है।*

स्लाइड सीसे की बनी होती हैं।

आकार 35 मिलिमीटर

www.ugcnet.wapka.mobi

Overhead Projector

इससे पारदर्शी को पर्दे पर प्रस्तुत किया जाता है।

शिक्षा दूरदर्शन

दूरदर्शन का भारत में प्रयोग 15 सितम्बर 1959 में हुआ था।

रंगीन दूरदर्शन का आविर्भाव अगस्त 1982 में हुआ।

शिक्षा दूरदर्शन की परियोजनायें

१-माध्यमिक विद्यालय की दूरदर्शन प्रकल्प- (secondary school television project)-24 अक्टूबर 1961

२-दिल्ली कृषि दूरदर्शन प्रकल्प 26 जनवरी 1966 को आरम्भ् हुआ।

३-सेटेलाइट अनुदेशनात्मक दूरदर्शन (satellite instructional television experiments) प्रयोग 5 अगस्त 1975

www.ugcnet.wapka.mobi

४-भारतीय राष्ट्रिय उपग्रह (Indian national satellite) 10 अप्रैल 1982

इन्दिरा गांधी राष्ट्रिय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU)

अगस्त 1985 में इसका बिल पारित हुआ था। 20 सितम्बर 1985 को इस विश्वविद्यालय की स्थापना हुई।

विश्वविद्यालय के संगठन का स्वरूप

१- कार्यकारिणी परिषद executive council

२- शैक्षिक परिषद academic council

३- योजना परिषद planning council

४- वित्त समीति Finance committee

५- मान्यता समीति Affiliation department

शिक्षण प्रतिमान (Teaching models)

बी आर जुआइस के अनुसार - शिक्षण प्रतिमान अनुदेशन की रूपरेखा माने जाते हैं। इसके अन्तर्गत विशेष उददेश्य प्राप्ति के लिये विशिष्ट परिस्थिति का उललेख किया जाता है। जिसमें

www.ugcnet.vapka.mobi

छात्र व शिक्षक की अन्त: क्रिया इस प्रकार हो कि उनके व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाया जा सके ।

शिक्षण प्रतिमान के आधारभूत तत्व

१- उददेश्य (Focus)- उददेश्य से तात्पर्य उससे है जिसके लिये प्रतिमान विकसित किया जाता है।

२- संरचना (Syntax)- इसमें शिक्षण सोपानों की व्याख्या की जाती है। इसमें क्रियाओं का क्रम निर्धारण किया जाता है।

३- सामाजिक प्रणाली(Social system) - इसमें कक्षा मे छात्रों एवं अध्यापको के मध्य सम्बन्धों का विश्लेषण किया जाता है।

४- सहायक प्रणाली (Support system)- यह शिक्षण की सफलता से सम्बन्धित है। इसमें यह देखा जाता है कि शिक्षण उददेश्य की प्राप्ति हुई है या नही

शिक्षण प्रतिमान के प्रकार

१- ऐताहासिक शिक्षण प्रतिमान

सुकरात का शिक्षण प्रतिमान

www.ugcnet.wabka.mobi

परम्परागत मानवीय शिक्षण प्रतिमान

व्यक्तिगत विकास का शिक्षण प्रतिमान

२ दार्शनिक शिक्षण प्रतिमान

प्रभाव प्रतिमान

सूझ प्रतिमान

नियम प्रतिमान

२ मनोवैज्ञानिक शिक्षण प्रतिमान

वुनियादी शिक्षण प्रतिमान

अन्त: प्रक्रिया शिक्षण प्रतिमान

अध्यापक शिक्षा के लिये शिक्षण प्रतिमान

१- हिल्दा ताबा आगमन शिक्षण प्रतिमान - हिल्दा ताबा

२-टरनर का शिक्षण प्रतिमान- टरनर

आधुनिक शिक्षण प्रतिमान

www.ugcnet.wapka.mobi

शिक्षण युक्तियां (Maxims of teachings)

१- ज्ञात से अज्ञात की ओर

२- स्थूल से सूक्ष्म की ओर From concrete to abstract

३- सरल से जटिल की ओर

४- प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर

५- पूर्ण से अंश की ओर

६- अनिश्चित से निश्चित की ओर

७- विश्लेषण से संश्लेषण की ओर

८- अनुभूति से युक्ति युक्त की ओर

९- मनोवैज्ञानिक से तार्किक क्रम की ओर

१०- प्राकृतिक अनुसरण

शिक्षण प्रविधियां (Techniques of teachings)

१- विवरण प्रविधि (Narration technique)

२- स्पष्टीकरण प्रविधि(Exposition technique)

३- वर्णन प्रविधि(Description technique)

४- व्याख्या प्रविधि(Explanation technique)

www.ugcnet.vapka.mobi

५- कहानी कथन प्रविधि (story telling technique)

६- पर्यवेक्षित अध्ययन (Supervised study technique)

७- उदहारण प्रविधि (illustration technique)

८- प्रश्न विधि (questioning technique)

९- निरीक्षण विधि (Observation technique)

१०- ड्रिल विधि (Drill technique)

शिक्षण की उच्च प्रविधियां

सम्मेलन प्रविधि (conference technique)

उच्च अधिगम के लिए महत्वपूर्ण

अनुदेशन एवं अधिगम परिस्थिति उत्पन्न करने के लिए उपयोग में लायी जाती है।

इससे ज्ञानात्मक एवं भावात्मक उददेश्यो की प्राप्ति होती होती है। बडा समूह

शिक्षकों अनुदेशकों तथा निर्देशकों की एक सभा होती है जिसमें कक्षा अनुदेशन एवं विद्यालय सम्बन्धी सम्स्याओं पर वाद विवाद किया जाता है। तथा वे किसी निर्णय पर पहुंचते हैं।

www.ugcnet.wapka.mobi

कार्यशाला प्रविधि (workshop technique)

शिक्षकों को नयी परीक्षाओं की रचना नइ पाठययोजना तथा शिक्षण उददेश्यों को व्यवहारिक रूप में लिखने के लिये प्रशिक्षण की जरूरत होती है इसके लिये कार्यशाला का आयोजन किया जाता है।

क्रियात्मक पक्ष के लिए इसका आयोजन किया जाता है।

विचार गोष्ठी (seminar)

इसमें चिंतन स्तर के लिए परिस्थिति उत्पन्न की जाती है।

भूमिकायें

१-अनुदेशक या व्यवस्थापक- तिथी कार्य रूपरेखा का निर्धारण

२-अध्यक्ष - इसका चयन भागीदारों के द्वारा होता है।

३-वक्तागण- वक्ता प्रकरण का अच्छी तरह तैयार करता है तथा भागीदरों में बाटं देता है फिर अपना प्रकरण प्रस्तुत करता है।

www.ugcnet.wapka.mobi

४-भागीदार या श्रोतागण- विचारगोष्ठी में 25 से 40 भागीदारों को सम्मिलित किया जाता है।

प्रकार

लघु विचार गोष्ठी mini seminar

मुख्य विचार गोष्ठी main seminar

राष्ट्रिय विचार गोष्ठी national seminar

अन्तराष्ट्रिय विचार गोष्ठि international seminar

विचार समिति प्रविधि (symposium technique)

विचार समिति एक ऐसा समूह है जिसमें श्रोताओं को उत्तम प्रकार के विचारों से अवगत कराया जाता है। श्रोतागण प्रकरण सम्बन्धी सामान्य तैयारी के अपने मझे हुए विचारों को सम्मिलित करते हैं। और मूल्यों बोधगम्यता के सम्बन्ध में निर्णया लेते हैं।

www.ugcnet.wapka.mobi

उददेश्य

१- तात्कालिक समस्या के पक्षों को पहचानना तथा उनकी जानकारी करने की क्षमता का विकास करना

२- समस्या सम्बन्धी निर्णय लेने की क्षमता का विकास करना

३- व्यापक दृष्टिकोण का विकास करना ।

४- ज्ञानात्मक पक्ष के उच्च पक्षों का विकास करना ।

विचार समिति प्रविधि की प्रक्रिया

यह किसी विभाग संस्था या संगठन के द्वारा आयोजित की जाती है। भाषण के अन्त में श्रोताओं को प्रश्न करने या वाद विवाद का अवसर नही दिया जाता है।

विचार समिति के प्रयोग के क्षेत्र

१- अनुशासनहीनता के कारण

२- शोध कार्यों में गुणात्मक विकास

www.ugcnet.wapka.mobi

उभारक (primes)

पूर्व व्यवहारों से अन्तिम व्यवहारें को जोडने के लिए जिन पदों की रचना की जाती है उनमें उभारक प्रयोग किये जाते हैं।

बी एफ स्किनर - उभारक वह प्रविधि है जिसके प्रयोग से पूर्व व्यवहारों से अन्तिम व्यवहारें की संरचना के लिए आरम्भिक अनुक्रिया के लिए सहायता प्रदान की जाती है।

अनुबोधक (prompts)

अनुबोधक एक ऐसी प्रविधि है जो छात्रों को सही अनुक्रिया करने में सहायता प्रदान करती है।

सुशन मारकल - अनुबोधक एक सहायक उददीपन होता है। जो अन्तिम अनुक्रिया को सरल बनाता है। और पद सही

www.ugcnet.wapka.mobi

अनुक्रिया के लिए सरल हो जाता है। परन्तु यह स्वयं में अनुक्रिया उत्पन्न करने के लिए पर्याप्त नही होता है ।

सम्प्रेषण (communication)

सम्पेषण का अर्थ होता है परस्पर विचारों एवं भावनाओं की साझेदारी करना होता है।

शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द कम्युनिस से हुई है। जिसका अर्थ है सामान्य अनुभव होना।

विशेषताएं

१- परस्पर विचारों एवं भावनाओं का आदान प्रदान

२- गत्यातमक प्रकृति

३- द्वि मार्गीय प्रक्रिया

सम्प्रेषण प्रक्रिया

www.ugcnet.wapka.mobi

संदेशवाहक–कोडीकरण-संदेश का माध्यम- डिकोडीकरण - प्राप्तकर्ता- पृष्ठोषण

सम्प्रेषण के प्रकार

१- शाब्दिक

२- अशाब्दिक

निर्देशन एवं परामर्श (guidance and counseling)

निर्देशन

व्यक्ति को स्वयं तथा समाज के उपयोग के लिए स्वयं की क्षमताओं के अधिकतम विकास के प्रयोजन से निरन्तर दी जाने वाली सहायता ही निर्देशन है।

निर्देशन के प्रकार

१- व्यावसायिक निर्देशन

२- शैक्षिक निर्देशन

३- व्यक्तिगत निर्देशन

४- स्वास्थ्य सम्बन्धी निर्देशन

www.ugcnet.wapka.mobi

५- आर्थिक निर्देशन

परामर्श

परामर्श का अर्थ पूछताछ पारस्परिक तर्क-वितर्क या विचारों का वास्तविक विनिमय है।

परामर्श के प्रकार

१- निर्देशात्मक- (Directive)-इसमें परामर्शदाता मुख्य होता है। परामर्शदाता परामर्श पाने वाले को दिशा दिखाता है।

इसमें 6 चरण होते हैं।

१- विश्लेषण

२- संश्लेषण

३- निदान

४- पूर्वानुमान

५- उपबोधन

६-अनुवर्तन

www.ugcnet.wapka.mobi

अनिर्देशात्मक परामर्श (non directive)

इसमें परामर्श प्राप्त करनेवाला मुख्य होता है। परामर्शदाता केवल परामर्श प्राप्त करने वाले को अपनी समस्या स्वयं हल करने के लिए अभिप्रेरित करता है।

परामर्श के अन्य प्रकार

नैदानिक परामर्श

मनोवैज्ञानिक परामर्श

मनोचिकित्सीय परामर्श

उपचारात्मक परामर्श

निर्देशन एक व्यापक प्रक्रिया है।

परामर्श एक संकुचित प्रत्तय है। यह विशिष्ट होता है।

मूल्यांकन के प्रकार

१- **रचनात्मक मूल्यांकन** (Formative evluation)- रचनात्मक मूल्यांकन के अन्तर्गत शैक्षणिक कार्यक्रम के निर्माण की

www.ugcnet.wapka.mobi

प्रक्रिया में निर्णय लिया जाता है कि विकास किया जाने वाला कार्यक्रम कहां तक सफल है। रचनात्मक मूल्यांकन शैक्षणिक कार्यक्रमों की निर्माण प्रक्रिया में उस समय तक पृष्ठपोषण देता है जब तक कि कार्यक्रम पूर्व निर्धारित उददेश्यों की प्राप्ति करने मे सफल न हो जाये।

२- ***आकलित मूल्यांकन*** (Summative evaluation)- आकलित मूल्यांकन शिक्षण सत्र के अन्त में कया जाने वाला मूल्यांकन है। जो कि सफलता की सीमा का सामान्य मूल्यांकन करता है।

३- ***स्थापन मूल्यांकन*** (placement evaluation)- इसमें यह ज्ञात करने का प्रयास किया जाता है कि बालक में वह अपेक्षित गुण या व्यवहार उपस्थित है या नही जो पढाये जाने वाले पाठ या अन्य प्रकार के अधिगम करने के लिए आवश्यक है।

यह पूर्व ज्ञान के नाम से जाना जाता है।

www.ugcnet.wapka.mobi